सूरह आले इमरान

तम्हीदी कलिमात

क़ुरान हकीम के आगाज़ में वाक़ेअ मक्की और मदनी सूरतों के पहले ग्रुप में मदनी सूरतों के जो दो जोड़े आये हैं, उनमें से पहले जोड़े की पहली सूरत "सूरतुल बक़रह" के तर्जुमे और मुख़्तसर तशरीह की हम तकमील कर चुके हैं, और अब हमें इस जोड़े की दूसरी सूरत "आले इमरान" का मुताअला करना है। यह बात पहले बयान हो चुकी है कि दो चीज़ों के माबैन जोड़ा होने की निस्बत यह है कि उन दोनों चीज़ों में गहरी मुशाब्हत भी हो लेकिन कुछ फ़र्क़ भी हो, और यह फ़र्क़ ऐसा हो जो एक-दूसरे के लिये तक्मीली (complementary) नौइयत का हो, यानि एक-दूसरे से मिल कर किसी मक़सद की तकमील होती हो। यह निस्बते ज़ौजियत की हक़ीक़त है।

सूरतुल बक़रह और सूरह आले इमरान में मुशाब्हत के नुमाया पहलु यह हैं की दोनों हुरूफे मुक़त्तआत "الم" से शुरू होती हैं। दोनों के आगाज़ में क़ुरान मजीद की अज़मत का बयान है, अगरचे सूरह आले इमरान में इसके साथ ही तौरात और इन्जील का बयान भी है। फिर यह कि दोनों के इख्ततताम पर बड़ी अज़ीम आयात आयी हैं। सूरतुल बक़रह के इख्ततताम पर वारिद आयात हम पढ़ चुके हैं। उसकी आखरी आयत को क़ुरान हकीम की अज़ीम तरीन दुआओं में से शुमार किया जा सकता है: {..... رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا} सूरह आले इमरान के आखरी रुकूअ में भी एक निहायत जामेअ दुआ आयी है जो तीन-चार आयतों में फैली हुई है। फिर जैसे मैंने आपको बताया, सूरतुल बक़रह भी सूरतुल उम्मातैन है, दो उम्मतों से ख़िताब और गुफ्तगू कर रही है, और यही मामला सूरह आले इमरान का भी है। फ़र्क़ यह है कि सूरतुल बक़रह में ज़्यादा गुफ्तगू यहूद के बारे में है और सूरह आले इमरान में नसारा के बारे में। तो गोया इस तरह अहले किताब से गुफ्तगू की तकमील हो रही है। अहले किताब में से "यहूद" अहमतर तबक़ा था और दीनी ऐतबार से उनकी अहमियत ज़्यादा थी, ख्वाह तादाद में वह कम थे और कम हैं। दूसरा तबक़ा ईसाईयों का है, जिनका तज़किरा सूरतुल बक़रह में बहुत कम आया है, लेकिन सूरह आले इमरान में ज़्यादा ख़िताब उनसे है। फिर जैसे सूरतुल बक़रह के दो तक़रीबन मसावी हिस्से हैं, पहला निस्फ़ 18 रुकूओं और 152 आयात पर मुश्तमिल है और निस्फ़े सानी 22 रुकूओं लेकिन 134 आयात पर मुश्तमिल है, वही कैफ़ियत सूरह आले इमरान में ब-तमामो-कमाल मिलती है। सूरह आले इमरान के भी दो हिस्से हैं, जो बहुत मसावी हैं। इसके कुल 20 रुकूअ हैं, 10 रुकूअ निस्फ़े अव्वल में हैं और 10 रुकूअ ही निस्फ़े सानी में। पहले 10 रुकूओं में 101 आयात और दूसरे 10 रुकूओं में 99 आयात हैं। यानि सिर्फ़ एक आयत का फ़र्क़ है। फिर जैसे सूरतुल बक़रह में निस्फ़े अव्वल के तीन हिस्से हैं वैसे ही यहाँ भी निस्फ़े अव्वल के तीन हिस्से हैं, लेकिन यहाँ तक़सीम रुकूओं के ऐतबार से नहीं बल्कि आयात के ऐतबार से है। इस सूरह मुबारका की इब्तदाई 32 आयात इसी तरह तम्हीदी कलाम पर मुश्तमिल हैं जैसे सूरतुल बक़रह के इब्तदाई चार रुकूअ हैं। सूरतुल बक़रह में रुए सुखन इब्तदा ही से यहूद की तरफ़ हो गया है, जबकि यहाँ रुए सुखन इब्तदा ही से नसारा की तरफ़ है।

इब्तदाई 32 आयात के बाद 31 आयात में ख़ास तौर पर नसारा से बराहे रास्त ख़िताब है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत किन हालात में हुई, उनका मक़ाम और मरतबा क्या था, उनकी असल हैसियत क्या थी, और फिर यह कि उनके साथ क्या मामला हुआ, इस हिस्से में यह मज़ामीन शामिल हैं। इस सूरह मुबारका का अक्सरो बेशतर हिस्सा 3 हिजरी में ग़ज़वा-ए-ओहद के बाद नाज़िल हुआ है, लेकिन 31 आयात पर मुश्तमिल यह हिस्सा 9 हिजरी में नाज़िल हुआ। "नजरान" अरब के जुनूब में यमन की जानिब एक बस्ती थी और वहाँ ईसाई आबाद थे। वहाँ के ईसाईयों के सरदार और पादरी कोई सत्तर आदमियों का एक वफद लेकर रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमत में यह बात समझने-समझाने के लिये कि आप ﷺ किस बात की दावत दे रहे हैं, मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए और वह लोग कई दिन वहाँ मुक़ीम रहे। उन्होंने बात पूरी तरह समझ भी ली

और ख़ामोश भी हो गये, लेकिन फिर भी बात नहीं मानी तो आँहुज़ूर ﷺ ने उन्हें मुबाहिले की दावत दी, लेकिन वह इस चैलेंज को क़ुबूल किये बगैर वहाँ से चले गये। उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ की दावत की शिद्दत के साथ तरदीद (इन्कार) नहीं की और उसे क़ुबूल भी नहीं किया। सूरह आले इमरान की यह 31 आयात नजरान के ईसाईयों से ख़िताब के तौर पर नाज़िल हुईं। सूरतुल बक़रह के बारे में एक बात बयान होने से रह गयी थी कि उसके रुकूअ 38 की आयात जिनमें सूद से मुताल्लिक़ आखरी अहकाम हैं, यह भी तक़रीबन 9 हिजरी में नाज़िल हुई हैं। गोया मुशाबहत का यह पहलु भी दोनों सूरतों में मौजूद है। सूरतुल बक़रह का अक्सरो बेशतर हिस्सा अगरचे गज़वा-ए-बद्र से क़ब्ल नाज़िल हुआ, लेकिन उसकी कुछ आयात 9 हिजरी में नाज़िल हुईं। इसी तरह सूरह आले इमरान का अक्सरो बेशतर हिस्सा अगरचे गज़वा-ए-ओहद के बाद 3 हिजरी में नाज़िल हुआ, लेकिन नजरान के ईसाईयों से ख़िताब के ज़िमन में आयात 9 हिजरी में नाज़िल हुईं। फिर जैसे सूरतुल बक़रह के निस्फ़े अव्वल के आखरी हिस्से (रुकूअ 15, 16, 17, 18) में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और खाना काबा का ज़िक्र था इस तरह से यह बात आपको यहाँ भी मिलेगी। यहाँ भी अहले किताब को उसी अंदाज़ में दावत दी गयी है जैसे सूरतुल बक़रह के सौलहवें रुकूअ में दी गयी है। सूरह आले इमरान के निस्फ़े अव्वल का यह तीसरा हिस्सा 38 आयात पर मुश्तमिल है, जो बहुत अहम और जामेअ आयात हैं।

सूरतुल बक़रह और सूरह आले इमरान दोनों के निस्फ़े सानी का आगाज़ "يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا" के अल्फ़ाज़ से होता है। जैसे सूरतुल बक़रह के उन्नीसवें रुकूअ से निस्फ़े सानी का आगाज़ होता है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

इस तरह सूरह आले इमरान के ग्याहरवें रुकूअ से इसके निस्फ़े सानी का आगाज़ होता है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝

सूरह आले इमरान का निस्फ़े सानी दस रुकूओं पर मुश्तमिल है और इनकी तक़सीम उमूदी है, उफ़ुक़ी नहीं है। पहले दो रुकूओं में ख़िताब ज़्यादातर मुस्लमानों से है, फिर अगरचे रुए सुखन अहले किताब की तरफ़ भी है। इसके बाद मुसलसल छ: रुकूअ गज़वा-ए-ओहद के हालात पर मुश्तमिल हैं। यानि इस ज़िमन में जो मसाइल सामने आये उन पर तबसिरा, मुस्लमानों से जो गलतियाँ हुईं उन पर गिरफ्त और आइन्दा के लिये हिदायात। यह तक़रीबन 60 आयात हैं जो छ: रुकूओं पर फैली हुई हैं। यह गोया "गज़वा-ए-ओहद" के उन्वान से क़ुरान मजीद का एक मुस्तक़िल बाब (chapter) है। लेकिन क़ुरान में इस तरह से अबवाब नहीं बनाये गये हैं, बल्कि इसकी सूरतें हैं। जैसा कि इब्तदा में "तआरुफ़े क़ुरान" के ज़िमन में अर्ज़ किया जा चुका है, क़ुरान खुत्बाते इलाहिया का मजमुआ है। एक ख़ुत्बा नाज़िल हो रहा है और इसके अन्दर मुख्तलिफ़ मज़ामीन बयान हो रहे हैं, लेकिन इनमें एक रब्त और तरतीब है। अब तक इस रब्त और तरतीब पर तवज्जो कम हुई है, लेकिन इस दौर में क़ुरान हकीम के इल्म व मारफ़त का यह पहलु ज़्यादा नुमाया हुआ है कि इसमें बड़ा नज़्म है, इसके अन्दर तंज़ीम है, इसमें आयात का आपस में रब्त है, सूरतों का सूरतों से रब्त है। यह ऐसे ही बेरब्त और अलल टप कलाम नहीं है।

इस सूरह मुबारका के आख़री दो रुकूअ बहुत अहम हैं। उनमें से भी आखरी रुकूअ तो बहुत ही जामेअ है। इसमें वह अज़ीम दुआ भी आयी है जिसका ज़िक्र मैंने अभी किया, और फ़लसफ़ा-ए-ईमान के बारे में अहम तरीन बहस भी उस मक़ाम पर आयी है। और उससे पहले का रुकूअ यानि उन्नीसवा रुकूअ भी बड़े जामेअ मज़ामीन पर मुश्तमिल है और उसमें दर हक़ीक़त पूरी सूरह मुबारका के मज़ामीन को sum-up किया गया है।

इन दोनों सूरतों के माबैन निस्बते ज़ौजियत के हवाले से आप देखेंगे कि बाज़ मक़ामात पर तो अल्फ़ाज़ भी वही आ रहे हैं, वही अंदाज़ है। जैसे सूरतुल बक़रह की आयत 136 में फ़रमाया गया: "(ऐ मुस्लमानों!) तुम कहो हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और जो कुछ हम पर नाज़िल किया गया और जो कुछ इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इस्माइल अलैहिस्सलाम और इसहाक़ अलैहिस्सलाम और याक़ूब अलैहिस्सलाम और औलादे याक़ूब पर नाज़िल किया गया.....।" बिल्कुल यही मज़मून सूरह आले इमरान की आयत 84 में आया है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र भी दोनों

सूरतों में मिलता है। यहूद के बारे में {.... وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ} वाली आयत सूरह आले इमरान में भी है, ज़रा तरतीब का फ़र्क़ है। [क़ुरान मजीद में ऐसे मक़ामात "मुतशाबाह" कहलाते हैं और यह हुफ्फ़ाज़ के लिये मुश्किल तरीन मक़ाम होते हैं कि तेज़ी और रवानी में वह इससे मुशाबेह दूसरे मक़ाम पर मुन्तक़िल हो जाते हैं।] इन दोनों सूरतों के मज़ामीन के अन्दर आपको इतनी गहरी मुनास्बत नज़र आयेगी जिसको मैंने ज़ौजियत से तशबीह दी है। ज़ाहिर बात है कि हर हैवान का जोड़ा जो होता है वह तक़रीबन नब्बे फ़ीसद तो एक-दूसरे से मुशाबेह होता है लेकिन उसमें कोई दस फ़ीसद का फ़र्क़ भी होता है, और वह फ़र्क़ भी ऐसा होता है कि दोनों के जमा होने से किसी मक़सद की तकमील हो रही होती है। जैसा कि आपको मालूम है, मर्द और औरत एक-दूसरे से मुशाबेह हैं, लेकिन जिन्स के ऐतबार से मर्द और औरत के जिस्म में फ़र्क़ है। अलबत्ता दोनों के मिलाप से मक़सदे तनासुल यानि पैदाइशे औलाद और अफ़ज़ाइशे नस्ल (नस्ल में वृधि) हासिल हो रहा है, जो एक तरफ़ा तौर पर हासिल नहीं हो सकता। यह निस्बते ज़ौजियत क़ुरान मजीद की सूरतों में अक्सरो बेशतर ब-तमाम-ओ-कमाल मौजूद है। अलबत्ता इस ज़िमन में गहरे तदब्बुर की ज़रूरत है। क़ुरान में गौरो फ़िक्र किया जाये, सोच-विचार किया जाये तो फिर इस नज़म क़ुरान के हवाले से इज़ाफ़ी मायने, इज़ाफ़ी इल्म, इज़ाफ़ी मार्फ़त और इज़ाफ़ी हिकमत के खज़ाने खुलते हैं। मैं सूरतुल बक़रह की तम्हीद में यह बता चुका हूँ कि नबी अकरम ﷺ ने इन दोनों सूरतों को "अज़्ज़ाहरावैन" का नाम दिया है, यानि दो निहायत ताबनाक और रोशन सूरतें। जैसे क़ुरान मजीद की आखरी दो सूरतों सूरतुल फ़लक़ और सूरतुन्नास को "अल मुअव्वज़ातैन" का नाम दिया गया है इसी तरह क़ुरान हकीम के आगाज़ में वारिद इन दोनों सूरतों को "अज़्ज़ाहरावैन" का नाम दिया गया है।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आयात 1 से 9 तक

الٓمّٓ ① اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ② نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا
بَیْنَ یَدَیْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ ③ ۙ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ
الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ ذُو
انْتِقَامٍ ④ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَخْفٰى عَلَیْهِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ ⑤ ؕ هُوَ الَّذِیْ
یُصَوِّرُكُمْ فِی الْاَرْحَامِ كَیْفَ یَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ⑥ هُوَ الَّذِیْۤ
اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا
الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ۚ
وَمَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ
رَبِّنَا ۚ وَمَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ⑦ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ⑧ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ
لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ فِیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ⑨ ۧ

आयत 1

الٓمّٓ ①

"अलिफ़। लाम। मीम।"

यह हुरूफ़े मुक़त्तआत हैं जिनके बारे में इज्माली गुफ्तगू हम सूरतुल बक़रह के आगाज़ में कर चुके हैं।

आयत 2

اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۚ﴿۲﴾

"अल्लाह वह मअबूदे बरहक़ है जिसके सिवा कोई इलाह नहीं, वह ज़िन्दा है, सबका क़ायम रखने वाला है।"

यह अल्फ़ाज़ सूरतुल बक़रह में आयतुल कुरसी के आगाज़ में आ चुके हैं। एक हदीस में आता है कि अल्लाह तआला का एक इस्मे आज़म है, जिसके हवाले से अगर अल्लाह से कोई दुआ माँगी जाये तो वह ज़रूर क़ुबूल होती है। यह तीन सूरतों अल बक़रह, आले इमरान और ताहा में है।(1)

आँहुज़ूर ﷺ ने तअय्युन के साथ नहीं बताया कि वह इस्मे आज़म कौन सा है, अलबत्ता कुछ इशारे किये हैं। जैसे रमज़ानुल मुबारक की एक शब "लय्लतुल क़द्र" जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है, उसके बारे में तअय्युन के साथ नहीं बताया कि वह कौनसी है, बल्कि फ़रमाया:

فَالْتَمِسُوْهَا فِی الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ فِی الْوِتْرِ

"उसे आखरी अशरे की ताक़ रातों में तलाश करो।"(2)

ताकि ज़्यादा ज़ोक़ व शौक़ का मामला हो। इसी तरह इस्मे आज़म के बारे में आप ﷺ ने इशारात फ़रमाये हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया कि यह तीन सूरतों सूरतुल बक़रह, सूरह आले इमरान और सूरह ताहा में है। इन तीन सूरतों में जो अल्फ़ाज़ मुश्तरक (common) हैं वह "अल हय्युल क़य्यूम" हैं। सूरतुल बक़रह में यह अल्फ़ाज़ आयतुल कुरसी में आये हैं, सूरह आले इमरान में यहाँ दूसरी आयत में और सूरह ताहा की आयत 111 में मौजूद हैं।

आयत 3

نَزَّلَ عَلَیۡكَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ

"उसने नाज़िल फ़रमायी है आप पर (ऐ नबी ﷺ) यह किताब हक़ के साथ"

उस अल्लाह ने जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं, जो अलहय्य है, अल क़य्यूम है। इसमें इस कलाम की अज़मत की तरफ़ इशारा हो रहा है कि जान लो यह कलाम किसका है, किसने उतारा है। और यहाँ नोट कीजिये, लफ्ज़ नज्ज़ला आया है, अन्ज़ला नहीं आया।

مُصَدِّقًا لِّمَا بَیۡنَ یَدَیۡهِ

"यह तसदीक़ करते हुए आयी है उसकी जो इसके सामने मौजूद है"

यानि तौरात और इन्जील की जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं। क़ुरान हकीम साबक़ा कुतबे समाविया की दो ऐतबार से तसदीक़ करता है। एक यह कि वह अल्लाह की किताबें थीं जिनमे तहरीफ़ हो गयी। दूसरे यह कि क़ुरान और मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ उन पेशनगोइयों का मिस्दाक़ बन कर आये हैं जो उन किताबों में मौजूद थीं।

وَاَنۡزَلَ التَّوۡرٰىةَ وَالۡاِنۡجِیۡلَ ۙ﴿۳﴾

"और उसने तौरात और इन्जील नाज़िल फ़रमायी थीं।"

आयत 4

مِنۡ قَبۡلُ هُدًی لِّلنَّاسِ

"इससे पहले लोगों की हिदायत के लिये"

وَاَنۡزَلَ الۡفُرۡقَانَ ؕ

"और अल्लाह ने फ़ुरक़ान उतारा।"

"फ़ुरक़ान" का मिस्दाक़ क़ुरान मजीद भी है, तौरात भी है और मौज्ज़ात भी हैं। सूरतुल अन्फ़ाल में "यौमुल फ़ुरक़ान" गज़वा-ए-बद्र के दिन को कहा गया है। हर वह शय जो हक़ को बिल्कुल मुबरहन कर दे और हक़ व बातिल के माबैन इम्तियाज़ पैदा कर दे वह फ़ुरक़ान है।

اِنَّ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِیۡدٌ ؕ

"बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की आयात का इन्कार किया उनके लिये सख्त अज़ाब है।"

यहाँ अब तहदीद और धमकी का अंदाज़ है कि इस क़ुरान का मामला दुनिया की दूसरी किताबों की तरह ना समझो कि मान लिया तब भी कोई हर्ज नहीं, ना माना तब भी कोई हर्ज नहीं। अगर पढ़ने पर तबीयत रागिब

हुई तो भी कोई बात नहीं, तबियत रागिब नहीं है तो मत पढ़ो, कोई इल्ज़ाम नहीं। यह किताब वैसी नहीं है, बल्कि यह वह किताब है कि जो इस पर ईमान नहीं लायेंगे तो उनके लिये बहुत सख्त सज़ा होगी।

"और अल्लाह तआला ज़बरदस्त है, इन्तेक़ाम लेने वाला है।" وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝

यह लफ्ज़ इस ऐतबार से बहुत अहम है कि अल्लाह तआला बेशक रऊफ़ है, रहीम है, शफ़ीक़ है, गफ़ूर है, सत्तार है, लेकिन साथ ही "عزیز ذوانتقام" भी है, "شدیدُ العقاب" भी है। अल्लाह तआला की यह दोनों शानें क़ल्ब व ज़हन में रहनी चाहिये।

आयत 5

"यक़ीनन अल्लाह पर कोई शय भी मख़्फी नहीं है, ना आसमान में ना ज़मीन में।" اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝

आयत 6

"वही है जो तुम्हारी सूरतगरी करता है (तुम्हारी माँओ के) रहमों में जिस तरह चाहता है।" هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ

पहली चीज़ अल्लाह के इल्म से मुताल्लिक़ थी और यह अल्लाह की क़ुदरत से मुताल्लिक़ है। वही है जो तुम्हारी नक़्शाकशी कर देता है, सूरत बना देता है तुम्हारी माँओ के रहमों में जैसे चाहता है। किसी के पास कोई इख़्तियार (choice) नहीं है कि वह अपना नक़्शा खुद बनाये।

"उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, वह ग़ालिब और हकीम है।" لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

आयत 7

"वही है जिसने आप ﷺ पर यह किताब नाज़िल फ़रमायी" هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ

किसी-किसी जगह नज्ज़ला के बजाय अन्ज़ला का लफ्ज़ भी आ जाता है, और यह आहंग (rhythm) के ऐतबार से होता है, क्योंकि क़ुरान मजीद का अपना एक मलाकूती गिना (Divine Music) है, इसमें अगर आहंग के हवाले से ज़रुरत हो तो यह अल्फ़ाज़ एक-दूसरे की जगह आ जाते हैं।

"इसमें मोहकम आयात हैं और वही असल किताब हैं" مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ

"मोहकम" और पुख्ता आयात वह हैं जिनका मफ़हूम बिल्कुल वाज़ेह हो और जिन्हें इधर से उधर करने की कोई गुंजाइश ना हो। इस किताब की जड़, बुनियाद और असास वही हैं।

"और कुछ दूसरी आयतें ऐसी हैं जो मुतशाबेह हैं।" وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ

जिनका हक़ीक़ी और सही-सही मफ़हूम मुअय्यन करना बहुत मुश्किल बल्कि आम हालात में नामुमकिन है। इसकी तफ़सील तआरुफ़े क़ुरान के ज़िमन में अर्ज़ की जा चुकी है। आयतुल अहकाम जितनी भी हैं वह सब मोहकम हैं, कि यह करो यह ना करो, यह हलाल है यह हराम! जैसा कि हमने सूरतुल बक़रह में देखा कि बार-बार "كُتِبَ عَلَيْكُمْ" के अल्फ़ाज़ आते रहे। मैं अर्ज़ कर चुका हूँ कि किताब दरहक़ीक़त है ही मजमुआ-ए-अहकाम। लेकिन जिन आयात में अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात की बहस है उनका फ़हम आसान नहीं है। अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात का हम क्या तसव्वुर कर सकते हैं? अल्लाह का हाथ, अल्लाह का चेहरा, अल्लाह की कुरसी, अल्लाह का अर्श, इनका हम क्या तसव्वुर करेंगे? इसी तरह फ़रिश्ते आलमे गैब की शय हैं। आलमे बरज़ख की क्या कैफ़ियत है? क़ब्र में क्या होता है? हम नही समझ सकते। आलमे आख़िरत, जन्नत और दोज़ख़ की असल हक़ीक़तें हम नही समझ सकते। चुनाँचे हमारी ज़हनी सतह के क़रीब लाकर कुछ बातें हमें बता दी गयी हैं कि اما لَا يُدْرَكُ كُلُّهٗ لَا يُتْرَكُ كُلُّهٗ।

चुनाँचे इनका एक इज्माली तसव्वुर क़ायम हो जाना चाहिये, इसके बगैर आदमी का रास्ता सीधा नहीं रहेगा। लेकिन इनकी तफ़ासील में नहीं जाना चाहिये। दूसरे दर्जे में मैंने आपको बताया था कि कुछ तबीअयाती मज़ाहिर (Physical Phenomena) भी एक वक़्त तक आयाते मुतशाबेहात में से रहे हैं, लेकिन जैसे-जैसे साइंस का इल्म बढ़ता चला जा रहा है, रफ्ता-रफ्ता इनकी हक़ीक़त से पर्दा उठता चला जा रहा है और अब बहुत सी चीज़ें मोहकम होकर हमारे सामने आ रही हैं। ताहम अब भी बाज़ चीज़ें ऐसी हैं जिनकी हक़ीक़त से हम बेखबर हैं। जैसे हम अभी तक नहीं जानते कि सात आसमान से मुराद क्या है? हमारा यक़ीन है कि इन्शा अल्लाह वह वक़्त आयेगा कि इन्सान समझ लेगा कि हाँ यही बात सही थी और यही ताबीर सही थी जो क़ुरान ने बयान की थी।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ

"तो वह लोग जिनके दिलों में कजी होती है वह पीछे लगते हैं उन आयात के जो उनमें से मुतशाबेह हैं"

ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ

"फ़ितने की तलाश में"

वह चाहते हैं कि कोई ख़ास नयी बात निकाली जाये ताकि अपनी ज़हानत और फ़तानत का डंका बजाया जा सके या कोई फ़ितना उठाया जाये, कोई फ़साद पैदा किया जाये। जिनका अपना ज़हन टेढ़ा हो चुका है वह उस टेढ़े ज़हन के लिये क़ुरान से कोई दलील चाहते हैं। चुनाँचे अब वह मुतशाबेहात के पीछे पड़ते हैं कि इनमें से किसी के मफ़हूम को अपने मनपसंद मफ़हूम की तरफ मोड़ सकें। यह उससे फ़ितना उठाना चाहते हैं।

وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ

"और उनकी हक़ीक़त व माहियत मालूम करने के लिये।"

वह तलाश करते हैं कि इन आयात की असल हक़ीक़त, असल मंशा और असल मुराद क्या है। यानि यह भी हो सकता है कि किसी का इल्मी ज़ोक़ ही ऐसा हो और यह भी हो सकता है कि एक शख्स की फ़ितरत में कजी हो।

وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ

"हालाँकि उनका हक़ीक़ी मफ़हूम अल्लाह अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता।"

وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا

"और जो लोग इल्म में रासिख हैं वह यूँ कहते हैं कि हम ईमान लाये इस किताब पर, यह कुल का कुल हमारे रब की तरफ़ से है।"

जिन लोगों को रुसूख फ़िल इल्म हासिल हो गया है, जिनकी जड़ें इल्म में गहरी हो चुकी हैं उनका तर्ज़े अमल यह होता है कि जो बात साफ़ समझ में आ गयी है उस पर अमल करेंगे और जो बात पूरी तरह समझ में नहीं आ रही है उसके लिये इन्तेज़ार करेंगे, लेकिन यह इज्माली यक़ीन रखेंगे कि यह अल्लाह की किताब है।

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

"और यह नसीहत हासिल नहीं कर सकते मगर वही जो होशमन्द हैं।"

और सबसे बड़ी होशमन्दी यह है कि इन्सान अपनी अक़्ल की हुदूद (limitations) को जान ले कि मेरी अक़्ल कहाँ तक जा सकती है। अगर इन्सान यह नही जानता तो फिर वह ऊलुल अलबाब में से नहीं है। बिलाशुबा अक़्ल बड़ी शय है लेकिन उसकी अपनी हुदूद हैं। एक हद से आगे अक़्ल तजावुज़ नहीं कर सकती:

गुज़र जा अक़्ल से आगे कि यह नूर
चिरागे राह है मंज़िल नहीं है!

यानि मंज़िल तक पहुँचाने वाली शय अक़्ल नहीं, बल्कि क़ल्ब है। लेकिन अक़्ल बहरहाल एक रोशनी देती है, हक़ीक़त की तरफ़ इशारे करती है।

आयत 8

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا

"(और उन ऊलुल अलबाब का यह क़ौल होता है) ऐ रब हमारे! हमारे दिलों को

कज ना होने दीजियो इसके बाद कि तूने हमें हिदायत दे दी है”

“और हमें तू ख़ास अपने खज़ाना-ए-फ़ज़ल से रहमत अता फरमा।”

وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ

“यक़ीनन तू ही सब कुछ देने वाला है।”

اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝٨

हमें जो भी मिलेगा तेरी ही बारगाह से मिलेगा। तू ही फ़याज़े हक़ीक़ी है।

आयत 9

“ऐ रब हमारे! यक़ीनन तू जमा करने वाला है लोगों को एक ऐसे दिन के लिये जिस (के आने) में कोई शक नहीं है।”

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ

“यक़ीनन अल्लाह तआला उस वादे के खिलाफ़ नहीं करेगा।”

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝٩

अल्लाह तआला अपने वादे की खिलाफ़वर्ज़ी नहीं करता। लिहाज़ा जो उसने बताया है वह होकर रहेगा और क़यामत का दिन आकर रहेगा।

आयात 10 से 20 तक

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝١٠ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝١١ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝١٢ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۭ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ۭ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝١٣ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَاۗءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۭ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝١٤ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝١٥ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝١٦ الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ۝١٧ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَاۗىِٕمًۢا بِالْقِسْطِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١٨ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۣ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝١٩ فَاِنْ حَاۗجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۭ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ۭ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝٢٠

आयत 10

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا

“यक़ीनन जिन लोगों ने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की हरगिज़ ना बचा सकेंगे उन्हें उनके माल और ना उनकी औलाद अल्लाह से कुछ भी।”

अब यह ज़रा तहदीदी और चैलेंज का अंदाज़ है। ज़माना-ए-नुज़ूल के ऐतबार से आपने नोट कर लिया कि यह सूरह मुबारका 3 हिजरी में गज़वा-

ए-ओहद के बाद नाज़िल हो रही है, लेकिन यह रुकूअ जो ज़ेरे मुताअला है इसके बारे में गुमाने ग़ालिब है कि यह गज़वा-ए-बद्र के बाद नाज़िल हुआ। गज़वा-ए-बद्र में मुस्लमानों को बड़ी ज़बरदस्त फ़तह हासिल हुई थी तो मुस्लमानों का morale बहुत बुलन्द था। लेकिन ऐसी रिवायात भी मिलती हैं कि जब मुस्लमान बद्र से गाज़ी बन कर, फ़तहयाब होकर वापस आये तो मदीना मुनव्वरा में जो यहूदी क़बीले थे उनमें से बाज़ लोगों ने कहा कि मुस्लमानों! इतना ना इतराओ। यह तो कुरैश के कुछ नातजुर्बेकार छोकरे थे जिनसे तुम्हारा मुक़ाबला पेश आया है, अगर कभी हमसे मुक़ाबला पेश आया तो दिन में तारे नज़र आ जायेंगे, वगैरह-वगैरह। तो इस पसमंज़र में यह अल्फ़ाज़ कहे जा रहे हैं कि सिर्फ़ मुशरिकीने मक्का पर मौक़ूफ़ (विश्राम) नहीं, आख़िरकार तमाम कुफ्फ़ार इसी तरह से ज़ेर होंगे और अल्लाह का दीन ग़ालिब होकर रहेगा। {وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾} (सूरह युसुफ:21)

وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝ — *"और वह तो सबके सब आग का ईंधन बनेंगे।"*

आयत 11

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ — *"(उनके साथ भी वैसा ही मामला होगा) जैसा कि आले फ़िरऔन और उन लोगों के साथ हुआ जो उनसे पहले गुज़रे।"*

तुम्हारी तो हैसियत ही क्या है! क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा। आले फ़िरऔन का मामला याद करो, उनके साथ क्या हुआ था? फ़िरऔन बहुत बड़ा शहंशाह और बड़े लाव लश्कर वाला था, लेकिन उसका क्या हाल हुआ? और उससे पहले आद व समूद जैसी ज़बरदस्त क़ौमें इसी जज़ीरा नुमाये अरब में रही हैं।

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ — *"उन्होंने भी हमारी आयात को झुठलाया था।"*

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ — *"तो अल्लाह ने पकड़ा उनको उनके गुनाहों की पादाश में।"*

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ — *"और अल्लाह सज़ा देने में बहुत सख्त है।"*

आयत 12

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ — *"(ऐ नबी ﷺ!) कह दीजिये उन लोगों से जो कुफ़्र की रविश इख़्तियार कर रहे हैं कि तुम सबके सब (दुनिया में) मग्लूब होकर रहोगे और (फिर आख़िरत में) जहन्नम की तरफ घेर कर ले जाये जाओगे।"*

وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ — *"और वह बहुत बुरा ठिकाना है।"*

आयत 13

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ — *"तुम्हारे लिये एक निशानी आ चुकी है उन दो गिरोहों में जिन्होंने आपस में जंग की।"*

यानि बद्र की जंग में एक तरफ़ मुस्लमान थे और दूसरी तरफ मुशरिकीने मक्का थे। इसमें तुम्हारे लिये निशानी मौजूद है।

فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ — *"एक गिरोह अल्लाह की राह में जंग कर रहा था और दूसरा काफ़िर था"*

"वह उन्हें देख रहे थे अपनी आँखों से कि उनसे दो गुने हैं।" يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ

इसके कईं मायने किये गये हैं। एक यह कि मुस्लमानों को तो खुल्लम-खुल्ला नज़र आ रहा था कि हमारे मुक़ाबिल हमसे दोगुनी फ़ौज है, जबकि वह तिगुनी थी। बाज़ रिवायात में यह भी आता है कि अल्लाह तआला ने गज़वा-ए-बद्र में कुफ्फ़ार पर ऐसा रौब तारी कर दिया था कि उन्हें नज़र आ रहा था कि मुस्लमान हमसे दोगुने हैं।

"और अल्लाह तआला ताईद (समर्थन) फ़रमाता है अपनी नुसरत से जिसकी चाहता है।" وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

"इसमें यक़ीनन एक इबरत है आँखें रखने वालों के लिये।" اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ

यह इबरत और सबक़ आमूज़ी सिर्फ़ उनके लिये होती है जो आँखें रखते हों, जिनके अन्दर देखने की सलाहियत मौजूद हो।

अगली आयत फ़ितरते इंसानी के ऐतबार से बड़ी अहम है। बाज़ लोगों में ख़ास तौर पर दुनिया और अलाइक़ दुनयवी (दुनिया की दिलचस्पी) की मोहब्बत ज़्यादा शदीद होती है। यहाँ उसका असल सबब बताया जा रहा है कि अल्लाह तआला ने वाक़िअतन यह शय फ़ितरते इंसानी में रखी है। इसलिये कि अल्लाह तआला ने इस दुनिया को क़यामत तक आबाद रखना है और इसकी रौनक़े बहाल रखनी हैं। चुनाँचे मर्द और औरत की एक-दूसरे के लिये कशिश होगी तो औलाद पैदा होगी और दुनिया की आबादी में इज़ाफ़ा होता रहेगा और इस तरह दुनिया क़ायम रहेगी। दौलत की कोई तलब होगी तो आदमी मेहनत व मशक्क़त करेगा और दौलत कमायेगा। इसलिये यह चीज़ें फ़ितरते इंसानी में basic animal instincts के तौर पर रख दी गयी हैं। बस ज़रूरत इस बात की है कि इन जिबिल्ली (स्वाभाविक) तक़ाज़ों को दबा कर रखा जाये, अल्लाह की मोहब्बत और अल्लाह की शरीअत को इससे बालातर रखा जाये। यह मतलूब नहीं है कि इनको ख़त्म कर दिया जाये। ताअज़ीबे नफ्स और नफ्सकशी (self annihilation) इस्लाम में नहीं है। यह तो रहबानियत है कि अपने नफ्स को कुचल दो, ख़त्म कर दो। जबकि इस्लाम तज़किया-ए-नफ्स और self control का दर्स देता है कि अपने आपको क़ाबू में रखो। नफ्से इंसानी एक मुँहज़ोर घोड़ा है। घोड़ा जितना ताक़तवर होता है उतना ही सवार के लिये तेज़ दौड़ना आसान होता है। लेकिन मुँहज़ोर और ताक़तवर घोड़े को क़ाबू में रखने की ज़रूरत भी है। वरना सवार अगर उसके रहमो करम पर आ गया तो वह जहाँ चाहेगा उसे पटखनी दे देगा।

आयत 14

"मुज़य्यन कर (संवार) दी गयी है लोगों के लिये मरग़ूबाते (आकर्षक) दुनिया की मोहब्बत जैसे औरतें और बेटें" زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ

मरग़ूबाते दुनिया में से पहली मोहब्बत औरतों की गिनवायी गयी है। फ़्राईड के नज़दीक भी इंसानी मुहर्रिकात में सबसे क़वी और ज़बरदस्त मुहर्रिक (potent motive) जिंसी जज़्बा है और यहाँ अल्लाह तआला ने भी सबसे पहले उसी का ज़िक्र किया है। अगरचे बाज़ लोगों के लिये पेट का मसला फ़ौक़ियत इख़्तियार कर जाता है और मआशी ज़रूरत जिंसी जज़्बे से भी शदीदतर हो जाती है, लेकिन वाक़िया यह है कि मर्द व औरत के माबैन कशिश इंसानी फ़ितरत का लाज़िमा है। चुनाँचे रसूल अल्लाह ﷺ ने भी फ़रमाया है:

مَا تَرَكْتُ بَعْدِيْ فِتْنَةً اَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ

"मैंने अपने बाद मर्दों के लिये औरतों के फ़ितने से ज़्यादा ज़रर रसाँ (हानिकारक) फ़ितना और कोई नहीं छोड़ा।"

उनकी मोहब्बत इन्सान को कहाँ से कहाँ ले जाती है। बिलआम बिन बाऊरा यहूद में से एक बहुत बड़ा आलिम और फ़ाज़िल शख्स था, मगर एक औरत के चक्कर में आकर वह शैतान का पैरो बन गया। उसका क़िस्सा सूरतुल आराफ़ में बयान हुआ है। बहरहाल औरतों की मोहब्बत इंसानी फ़ितरत के

अन्दर रख दी गयी है। फिर इन्सान को बेटे बहुत पसंद हैं कि उसकी नस्ल और उसका नाम चलता रहे, वह बुढ़ापे का सहारा बनें।

وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ

"और जमा किये हुए खज़ाने सोने के और चांदी के"

وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ

"और निशानज़दा घोड़े"

उम्दा नस्ल के घोड़े जिन्हें चुन कर उन पर निशान लगाये जाते हैं।

وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ

"और माल मवेशी और खेती।"

पंजाब और सराइकी इलाक़े में चौपायों को माल कहा जाता है। यह जानवर उनके मालिकों के लिये माल की हैसियत रखते हैं।

ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

"यह सब दुनयवी ज़िन्दगी का साज़ो सामान है।"

बस नुक्ता-ए-ऐतदाल यह है कि जान लो यह सारी चीज़ें इस दुनिया की चंद रोज़ा ज़िन्दगी का साज़ो सामान हैं। इस ज़िन्दगी के लिये ज़रुरियात की हद तक इनसे फ़ायदा उठाना कोई बुरी बात नहीं है।

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾

"लेकिन अल्लाह के पास है अच्छा लौटना।"

वह जो अल्लाह के पास है उसके मुक़ाबले में यह कुछ भी नहीं है। अगर ईमान बिलआख़िरत मौजूद है तो फिर इन्सान इन तमाम मरगूबात को, अपने तमाम जज़्बात और मीलानात को एक हद के अन्दर रखेगा, उससे आगे नहीं बढ़ने देगा। लेकिन अगर इनमें से किसी एक शय की मोहब्बत भी इतनी ज़ोरदार हो गयी कि आपके दिल के ऊपर उसका क़ब्ज़ा हो गया तो बस आप उसके गुलाम हो गये, अब वही आपका मअबूद है, चाहे वह दौलत हो या कोई और शय हो।

आयत 15

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ

"इनसे कहिये कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ इन तमाम चीज़ों से बहतर शय कौनसी है?"

لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

"जो लोग तक़वा इख़्तियार करते हैं उनके लिये उनके रब के पास ऐसे बाग़ात हैं जिनके दामन में नदियाँ बहती होंगी"

तक़वा यही है कि तुम पर अपने नफ्स का भी हक़ है जो तुम्हें अदा करना है, लेकिन नाजायज़ रास्ते से नहीं। तुम्हारे पेट का भी हक़ है, वह भी अदा करो, लेकिन अकले हलाल से। तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद के भी तुम पर हुक़ूक़ हैं, जो तुम्हें जायज़ तरीक़ों से अदा करने हैं। तुम्हारे जो मुलाक़ाती आने वाले हैं उनका भी तुम पर हक़ है। रसूल अल्लाह ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضی اللہ عنہ से इशारा फ़रमाया था:

فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْرِكَ عَلَيْكَ حَقًّا

इन सबके हुक़ूक़ अदा करो, लेकिन अल्लाह से ऊपर किसी हक़ को फ़ाइक़ ना कर देना। बस यह है असल बात। *"गर हिफ्ज़े मरातिब ना कुनी ज़िन्दीक़ी!"* अगर यह हिफ्ज़े मरातिब नहीं होगा तो गोया आपका दीन भी गया और दुनिया भी गयी।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

"उनमें वह हमेशा रहेंगे"

وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ

"और उनके लिये बड़ी ही पाक औरतें होंगी"

وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ

"और (सबसे बढ़ कर) अल्लाह की खुशनूदी होगी।"

وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾

"और अल्लाह अपने बन्दों को देख रहा है।"

आयत 16

"जो यह कहते रहते हैं परवरदिगार! हम ईमान ले आये" — اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا

"पस हमारे गुनाहों को बख्श दे" — فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا

"और हमें आग के अज़ाब से बचा ले।" — وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ

आगे उनकी मदाह (तारीफ़) में अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हो रहे हैं कि जो यह दुआएँ करते हैं उनके यह औसाफ़ हैं। इसमें गोया तलक़ीन है कि अगर अल्लाह से यह दुआ करना चाहते हो कि अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख्श दे और तुम्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले तो अपने अन्दर यह औसाफ़ पैदा करो।

आयत 17

"सब्र करने वाले और रास्तबाज़ (सच्चे)" — اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ

रास्तबाज़ी में रास्तगोयी भी शामिल है और रास्त किरदारी भी। यानि आपका अमल भी सही और दुरुस्त हो और क़ौल भी सही और दुरुस्त हो।

"और फ़रमाबरदार और अल्लाह की राह में खर्च करने वाले" — وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ

"और अवक़ाते सहर में मगफ़िरत चाहने वाले।" — وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ۝

वह जो सहर का वक़्त है (small hours of the morning) उस वक़्त अल्लाह के हुज़ूर इस्तगफ़ार करने वाले। एक तो पंच वक़्ता नमाज़े हैं, और एक ख़ास वक़्त है जिसके बारे में फ़रमाया गया है कि हर रात जब रात का आखरी एक तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो अल्लाह तआला समाये दुनिया तक नुज़ूल फ़रमाता है और कहता है:

هَلْ مِنْ سَائِلٍ يُعْطٰى؟ هَلْ مِنْ دَاعٍ يُسْتَجَابُ لَهٗ؟ هَلْ مِنْ مُسْتَغْفِرٍ يُغْفَرُ لَهٗ؟

"है कोई माँगने वाला कि उसे अता किया जाये? है कोई दुआ करने वाला कि उसकी दुआ क़ुबूल की जाये? है कोई इस्तगफ़ार करने वाला कि उसे माफ़ किया जाये?" गोया:

हम तो माइल बा करम हैं कोई साइल ही नहीं
राह दिखलायें किसे राह रवे मंज़िल ही नहीं!

आयत 18

"अल्लाह खुद गवाह है कि उसके सिवा कोई मअबूद नहीं है" — شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

सबसे बड़ी गवाही तो अल्लाह तबारक व तआला की है, जो कुतुबे समाविया से भी ज़ाहिर है और मज़ाहिरे फ़ितरत से भी।

"और सारे फ़रिश्ते (गवाह हैं)" — وَالْمَلٰٓئِكَةُ

"और अहले इल्म भी (इस पर गवाह हैं)" — وَاُولُوا الْعِلْمِ

ऊलुल इल्म वही लोग हैं जिन्हें क़ुरान कहीं ऊलुल अलबाब क़रार देता है और कहीं उनके लिये "اَلَّذِيْنَ يَعْقِلُوْنَ" जैसे अल्फ़ाज़ आते हैं। यह वह लोग हैं जो आयाते आफ़ाक़ी के हवाले से अल्लाह को पहचान लेते हैं और मान लेते हैं कि वही मअबूदे बरहक़ है। सूरतुल बक़रह के बीसवें रुकूअ की पहली आयत हमने पढ़ी थी जिसे मैं "आयतुल आयात" क़रार देता हूँ। उसमें बहुत से मज़ाहिरे फ़ितरत बयान करके फ़रमाया गया: {لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ} (आयत:164) "(इनमें) यक़ीनन निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो अक़्ल

से काम लेते हैं।” तो यह जो “قَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ” हैं, जो ऊलुल अलबाब हैं, ऊलुल इल्म हैं, वह भी गवाह हैं कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं है।

قَآئِمًا بِالْقِسْطِ

“वह अद्ल व क़िस्त (परिणाम) का क़ायम करने वाला है।”

यह इस आयत मुबारका के अहम तरीन अल्फ़ाज़ हैं। क़ब्ल अज़ अर्ज़ किया जा चुका है कि हम यह समझते हैं कि अल्लाह अद्ल क़ायम करता है और अद्ल करेगा, अलबत्ता अहले सुन्नत के नज़दीक यह कहना सूए अदब है कि अल्लाह पर अद्ल करना वाजिब है। अल्लाह पर किसी शय का वजूब नहीं है। अल्लाह को अद्ल पसंद है और वह अद्ल करने वालों से मोहब्बत रखता है। (अल हुजरात:9) {اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ} और अल्लाह खुद भी अद्ल फ़रमायेगा।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

“उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, वह ज़बरदस्त है, कमाले हिकमत वाला है।”

आयत 19

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ

“यक़ीनन दीन तो अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम ही है।”

अल्लाह का पसन्दीदा और अल्लाह के यहाँ मंज़ूरशुदा दीन एक ही है और वह “इस्लाम” है। सूरतुल बक़रह और सूरह आले इमरान की निस्बते ज़ौजियत के हवाले से यह बात समझ लीजिये कि सूरतुल बक़रह में ईमान पर ज़्यादा ज़ोर है और सूरह आले इमरान में इस्लाम पर। सूरतुल बक़रह के आगाज़ में भी ईमानियात का तज़किरा है, दरमियान में आयतुल बिर्रे में भी ईमानियात का बयान है और आखरी आयात (आयत:285) में भी ईमानियात का ज़िक्र है: {اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ} जबकि इस सूरह मुबारका में इस्लाम को emphasize किया गया है। यहाँ फ़रमाया: {اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ} आगे जाकर आयत आयेगी: {وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ} (आयत:85) “और जो कोई इस्लाम के सिवा किसी और दीन को क़ुबूल करेगा वह उसकी जानिब से अल्लाह के यहाँ मंज़ूर नहीं किया जायेगा।”

وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ

“और अहले किताब ने इख्तिलाफ़ नहीं किया इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था मगर बाहमी ज़िद्दम-ज़िद्दा के सबब से।”

यह गोया सूरतुल बक़रह की आयत 213 (आयतुल इख्तलाफ़) का खुलासा है। दीने इस्लाम तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से चला आ रहा है। जिन लोगों ने इसमें इख्तलाफ़ किया, पगडंडियाँ निकालीं और गलत रास्तों पर मुड़ गये, इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था, उनका असली रोग वही ज़िद्दम-ज़िद्दा की रविश और ग़ालिब आने की उमंग (the urge to dominate) थी।

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ

“और जो कोई अल्लाह की आयात का इन्कार करता है तो (वह याद रखे कि) अल्लाह बहुत जल्द हिसाब चुका देने वाला है।”

अल्लाह तआला को हिसाब लेते देर नहीं लगेगी, वह बड़ी तेज़ी के साथ हिसाब ले लेगा।

आयत 20

فَاِنْ حَآجُّوْكَ

“फिर (ऐ नबी ﷺ!) अगर वह आप ﷺ से हुज्जत बाज़ी करें”

दलील बाज़ी और मुनाज़रे की रविश इख़्तियार करें।

فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ

“तो आप कह दें कि मैंने तो अपना चेहरा अल्लाह के सामने झुका दिया है और उन्होंने भी जो मेरा इत्तेबाअ कर रहे हैं।”

आप ﷺ उनसे दो टूक अंदाज़ में यह आखरी बात कह दें कि हमने तो अल्लाह के आगे सरइताअत ख़म कर दिया है। हमने एक रास्ता इख़्तियार कर लिया है। तुम जिधर जाना चाहते हो जाओ, जिस पगडण्डी पर मुड़ना चाहते हो मुड़ जाओ, जिस खाई में गिरना चाहते हो गिर जाओ। {لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ} (अलकाफ़िरून:6)

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ

"और (ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये उनसे भी कि जिन्हें किताब दी गयी थी (यानि यहूद और नसारा) और उम्मिय्यीन से भी कि क्या तुम भी इसी तरह इस्लाम लाते हो?"

क्या तुम भी सरे तस्लीम ख़म करते हो या नहीं? ताबेअ होते हो या नहीं? अपने आपको अल्लाह के सुपुर्द करते हो या नहीं?

فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا

"पस अगर वह भी इसी तरह इस्लाम ले आयें तो हिदायत पर हो जायेंगे।"

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ

"और अगर वह मुँह मोड़ लें तो (ऐ नबी ﷺ!) आप ﷺ पर ज़िम्मेदारी सिर्फ पहुँचा देने की है।"

आप ﷺ ने हमारा पैगाम उन तक पहुँचा दिया, हमारी दावत उन तक पहुँचा दी, हमारी आयात उन्हें पढ़ कर सुना दीं, अब क़ुबूल करना या ना करना उनका अपना इख़्तियार (choice) है। आप ﷺ पर ज़िम्मेदारी नहीं है कि यह लोग ईमान क्यों नहीं लाये। सूरतुल बक़रह में हम यह अल्फ़ाज़ पढ़ आये हैं: {وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ} (आयत:119)

وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝٢٠

"और अल्लाह अपने बन्दों के हाल को देख रहा है।"

वह उनसे हिसाब-किताब कर लेगा और उनसे निबट लेगा। आप ﷺ के ज़िम्मे जो फ़र्ज़ है आप उसको अदा करते रहिये।

आयात 21 से 32 तक

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ
يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٢١ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٢٢ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا
نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ
وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٣ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۖ
وَغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢٤ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ
فِيْهِ ۖ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٢٥ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ
الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۚ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ
مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٦ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ
النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۡ وَتَرْزُقُ مَنْ
تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٢٧ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ
ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ
اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝٢٨ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ
اللّٰهُ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٩ يَوْمَ
تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْۗءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا
وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًۢا بَعِيْدًا ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝٣٠ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ
تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣١
قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝٣٢

आयत 21

إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ

“यक़ीनन वह लोग जो अल्लाह की आयात का कुफ़्र करते हैं और अम्बिया अलै० को नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं”

وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ

“और उन लोगों को क़त्ल करते रहे हैं (या क़त्ल करते हैं) जो इन्सानों में से अद्ल व क़िस्त का हुक्म देते हैं”

इसलिये कि इन्साफ़ की बात तो बिलउमूम किसी को पसंद नहीं होती। “اَلْحَقُّ مُرٌّ” (हक़ बात कड़वी होती है)। बहुत से मौक़ों पर किसी हक़गोह इन्सान को हक़गोई की पादाश में अपनी जान से भी हाथ धोने पड़ते हैं। यहाँ फिर अद्ल व क़िस्त का मामला आया है। अल्लाह खुद “قَآئِمًا بِالْقِسْطِ” है और अल्लाह के महबूब बन्दे वही हैं जो अद्ल का हुक्म दें, इन्साफ़ का डंका बजाने की कोशिश करें। तो फ़रमाया कि जो ऐसे लोगों को क़त्ल करें...

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۲۱

“तो (ऐ नबी ﷺ!) उन्हें बशारत सुना दीजिये दर्दनाक अज़ाब की।”

लफ्ज़ बशारत यहाँ तंज़ के तौर पर इस्तेमाल किया गया है।

आयत 22

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

“यह वह लोग हैं जिनके तमाम आमाल दुनिया और आख़िरत में अकारत हो गये।”

कुरैश को यह ज़अम था कि हम खुद्दामे काबा हैं और हमारे पास जो यह लोग हज करने आते हैं हम उनको खाना खिलाते हैं, पानी पिलाते हैं, हमारी इन खिदमात के एवज़ हमें बख्श दिया जायेगा। फ़रमाया वह सारे आमाल हब्त हो जायेंगे। अगर तो सही-सही पूरे दीन को इख़्तियार करोगे तो ठीक है, वरना चाहे खैरात और भलाई के बड़े से बड़े काम किये हों, लोगों की फ़लाह व बहबूद (कल्याण) के इदारे क़ायम कर दिये हों, अल्लाह की निगाह में उनकी कोई हैसियत नहीं।

وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۲۲

“और उनका फिर कोई मददगार नहीं होगा।”

आयत 23

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ

“क्या तुमने गौर नहीं किया उन लोगों की हालत पर जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया था?”

اُوْتُوْا मजहूल का सीगा है और याद रहे कि जहाँ मज़हम्मत का पहलु होता है वहाँ मजहूल का सीगा आता है।

يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

“अब उन्हें बुलाया जाता है अल्लाह की किताब की तरफ़ कि वह उनके माबैन फ़ैसला करे”

ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۲۳

“फिर उनमें से एक गिरोह पीठ फेर लेता है ऐराज़ करते हुए।”

यानि किताब को मानते भी हैं लेकिन उसके फ़ैसले को तस्लीम करने के लिये तैयार नहीं हैं।

आयत 24

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ

“यह इस वजह से है कि यह कहते हैं कि हमें तो जहन्नम की आग छू ही नहीं सकती मगर गिनती के चंद दिन।”

यह मज़मून सूरतुल बक़रह में आ चुका है। उनकी ढिठाई का असल सबब उनके मनघडन्त ख्यालात हैं। जब उनसे कहा जाता है कि तुम किताब पर

ईमान रखते हो तो उस पर अमल क्यों नहीं कर रहे? उसमें तो लिखा है कि सूद हराम है और तुम सूदखोरी पर कमरबस्ता हो, उसके हलाल को हलाल और उसके हराम को हराम क्यों नहीं जानते? तो इसके जवाब में वह अपना यह मनघडन्त अक़ीदा बयान करते हैं कि "हमें तो जहन्नम की आग छू ही नहीं सकती मगर गिनती के चंद दिन।" जब यह अक़ीदा है तो फिर इन्सान काहे को दुनिया का नुक़सान बर्दाश्त करे। *"बाबर बईश कोश कि आलम दोबारा नीस्त।"* फिर तो हलाल से, हराम से, जायज़ से, नाजायज़ से, जैसे भी ऐश दुनिया हासिल किया जा सकता हो हासिल करना चाहिये। यह अक़ीदा दरहक़ीक़त ईमान बिलआख़िरत की नफ़ी कर देता है।

"और उन्हें धोखे में मुब्तला कर दिया है उनके दीन के बारे में उन चीज़ों ने जो यह घड़ते रहे हैं।" وَغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ۝۲۴

इस तरह के जो अक़ाइद व नज़रियात उन्होंने घड लिये हैं उनके बाइस यह दीन के मामले में गुमराही का शिकार हो गये हैं। अल्लाह ने तो ऐसी कोई ज़मानत नहीं दी थी। तौरात लाओ, इन्जील लाओ, कहीं ऐसी ज़मानत नहीं है। यह तो तुम्हारा मनघडन्त अक़ीदा है और इसी की वजह से अब तुम दीन के अन्दर बददीन या बेदीन हो गये हो।

आयत 25

"तो क्या हाल होगा जब हम उन्हें इकट्ठा करेंगे उस दिन जिसके बारे में कोई शक नहीं!" فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۣ

इस वक़्त तो यह बढ़-चढ़ कर बातें बना रहे हैं, ज़बान दराज़ियाँ कर रहे हैं। लेकिन जब हम इन्हें एक ऐसे दिन में जमा करेंगे जिसके आने में ज़रा शक नहीं, तो उस दिन इनका क्या हाल होगा!

"और हर जान को पूरा-पूरा दे दिया जायेगा जो कुछ उसने कमाई की होगी" وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ

"और उन पर कोई ज़्यादती नहीं होगी।" وَھُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ۝۲۵

इसके बाद अब फिर एक बहुत अज़ीम दुआ आ रही है। इस सूरह मुबारका में बहुत सी दुआएँ हैं। यह भी एक अज़ीम दुआ है, जिसकी बाक़ायदा तलक़ीन करके कहा गया है कि यूँ कहा करो।

आयत 26

"कहो ऐ अल्लाह! तमाम बादशाहत के मालिक!" قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ

कुल मुल्क तेरे इख़्तियार में है।

"तू हुकूमत और इख़्तियार देता है जिसको चाहता है" تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاۗءُ

"और सल्तनत छीन लेता है जिससे चाहता है" وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاۗءُ ۡ

"और तू इज़्ज़त देता है जिसको चाहता है" وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاۗءُ

"और तू ज़लील कर देता है जिसको चाहता है।" وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاۗءُ ۭ

"तेरे ही हाथ में सब खैर है।" بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ

इसके दोनों मायने हैं। एक यह कि कुल खैर व खूबी तेरे हाथ में है और दूसरे यह कि तेरे हाथ में खैर ही खैर है। बसा अवक़ात इन्सान जिसे अपने लिये शर समझ बैठता है वह भी उसके लिये खैर होता है। सूरतुल बक़रह (आयत

216) में हम पढ़ चुके हैं: { وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـــًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـــًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۭ }

"यक़ीनन तू हर चीज़ पर क़ादिर है।" اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۲۶

आयत 27

"तू रात को ले आता है दिन में पिरो कर" تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ

"और फिर दिन को निकाल लाता है रात में से पिरो कर।" وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ

"और तू निकालता है ज़िन्दा को मुर्दे से" وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ

"और तू निकालता है मुर्दे को ज़िन्दा से।" وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ

इसकी बेहतरीन मिसाल मुर्गी और अंडा है। अंडे में जान नहीं है लेकिन उसी में से ज़िन्दा चूज़ा बरामद होता है और मुर्गी से अंडा बरामद होता है।

"और तू देता है जिसको चाहता है बेहद व बेहिसाब।" وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۲۷

आयत 28

"अहले ईमान ना बनायें काफ़िरों को अपने दोस्त अहले ईमान को छोड़ कर।" لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ

"औलिया" ऐसे क़ल्बी दोस्त होते हैं जो एक-दूसरे के राज़दार भी बन जायें और एक-दूसरे के पुश्त पनाह भी हों। यह ताल्लुक़ कुफ्फ़ार के साथ इख़्तियार करने की इजाज़त नहीं है। उनके साथ अच्छा रवैय्या, ज़ाहिरी मदारात और तहज़ीब व शाइस्तगी से बात-चीत तो और बात है, लेकिन दिली मोहब्बत, क़ल्बी रिश्ता, जज़्बाती ताल्लुक़, बाहमी नुसरत और तआवुन और एक-दूसरे के पुश्त पनाह होने का रिश्ता क़ायम कर लेने की इजाज़त नहीं है। कुफ्फ़ार के साथ इस तरह के ताल्लुक़ात अल्लाह तआला को हरगिज़ पसंद नहीं हैं।

"और जो कोई भी यह हरकत करेगा तो फिर अल्लाह के साथ उसका कोई ताल्लुक़ नहीं रहेगा" وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ

अगर अल्लाह के दुश्मनों के साथ तुम्हारी दोस्ती है तो ज़ाहिर है फिर तुम्हारा अल्लाह के साथ कोई रिश्ता व ताल्लुक़ नहीं रहा है।

"सिवाये यह कि तुम उनसे बचने के लिये अपना बचाव करना चाहो।" اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۭ

बाज़ अवक़ात ऐसे हालात होते हैं कि खुले मुक़ाबले का अभी मौक़ा नहीं होता तो आप दुश्मन को तरह (उपाय) देते हैं और इस तरह गोया वक़्त हासिल करते हैं (you are buying time) तो इस दौरान अगर ज़ाहिरी खातिर मदारात का मामला भी हो जाये तो कोई हर्ज नहीं है, लेकिन मुस्तक़िल तौर पर कुफ्फ़ार से क़ल्बी मोहब्बत क़ायम कर लेना हरगिज़ जायज़ नहीं है। क़ुरान के इन्ही अल्फ़ाज़ को हमारे यहाँ अहले तशय्यो ने तक़िये की बुनियाद बना लिया है। लेकिन उन्होंने इसे इस हद तक पहुँचा दिया है की झूठ बोलना और अपने अक़ाइद को छुपा लेना भी रवा समझते हैं और उसके लिये दलील यहाँ से लाते हैं। लेकिन यह एक बिल्कुल दूसरी शक्ल है और यह सिर्फ़ ज़ाहिरी मदारात की हद तक है। जैसे की हम सूरतुल बक़रह में पढ़ चुके हैं कि अगरचे तुम्हारे खिलाफ़ यहूद के दिलों में हसद की आग भरी हुई है लेकिन { فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا } (आयत:109) अभी ज़रा दरगुज़र करते रहो और चश्मपोशी से काम लो। अभी फ़ौरी तौर पर इनके साथ मुक़ाबला शुरू करना मुनासिब नहीं है। इस हद तक मसलहत बीनी तो सही है, लेकिन यह नहीं कि झूठ बोला जाये, माज़ अल्लाह!

وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ

"और अल्लाह तुम्हें डराता है अपने आप से।"

अल्लाह से डरो। यानि किसी और से ख्वाह मा ख्वाह डर कर सिर्फ़ खातिर मदारात कर लेना भी सही नहीं है। किसी वक़्त मसलहत का तक़ाज़ा हो तो ऐसा कर लो, लेकिन तुम्हारे दिल में खौफ़ सिर्फ़ अल्लाह का रहना चाहिये।

وَاِلَى اللّٰهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿۲۸﴾

"और अल्लाह ही की तरफ़ (तुम्हें) लौट कर जाना है।"

आयत 29

قُلۡ اِنۡ تُخۡفُوۡا مَا فِىۡ صُدُوۡرِكُمۡ اَوۡ تُبۡدُوۡهُ يَعۡلَمۡهُ اللّٰهُ

"कह दीजिये (ऐ नबी ﷺ!) कि अगर तुम छुपाओ जो कुछ कि तुम्हारे सीनों में है या उसे ज़ाहिर कर दो अल्लाह उसे जानता है।"

तुम अपने सीनों में मख़फ़ी बातें एक-दूसरे से तो छुपा सकते हो, अल्लाह तआला से नहीं। सूरतुल बक़रह (आयत 284) में हम पढ़ चुके हैं: {وَاِنۡ تُبۡدُوۡا مَا فِىۡۤ اَنۡفُسِكُمۡ اَوۡ تُخۡفُوۡهُ يُحَاسِبۡكُمۡ بِهِ اللّٰهُ ۟} "और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है ख्वाह तुम उसे ज़ाहिर करो ख्वाह छुपाओ अल्लाह तुमसे उसका मुहासबा कर लेगा।"

وَيَعۡلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ

"और वह जानता है जो कुछ कि आसमानों में है और जो ज़मीन में है।"

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۲۹﴾

"और अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है।"

आयत 30

يَوۡمَ تَجِدُ كُلُّ نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ مِنۡ خَيۡرٍ مُّحۡضَرًا ۚ

"(उस दिन का तसव्वुर करो) जिस दिन हर जान अपने सामने मौजूद पायेगी हर नेकी जो उसने की होगी"

وَّمَا عَمِلَتۡ مِنۡ سُوۡٓءٍ ۚ

"और हर बुराई जो उसने कमाई होगी।"

इसका नक्शा सूरतुल ज़िलज़ाल में बाअल्फ़ाज़ खींचा गया है:

فَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرًا يَّرَهٗ ﴿۷﴾ وَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿۸﴾

"तो जिसने एक ज़र्रे के हमवज़न नेकी की होगी वह उसको (बचश्म खुद) देख लेगा। और जिसने एक ज़र्रे के हमवज़न बुराई की होगी वह उसको (बचश्म खुद) देख लेगा।"

تَوَدُّ لَوۡ اَنَّ بَيۡنَهَا وَبَيۡنَهٗۤ اَمَدًا ۢ بَعِيۡدًا ۚ

"और (हर जान) यह चाहेगी कि काश उसके और उस (के नामाये आमाल) के दरमियान एक ज़माना-ए-दराज़ हाईल होता।"

उस वक़्त हर इन्सान यह चाहेगा कि काश मेरे और मेरे आमाल नामे के दरमियान बड़ा फ़ासला आ जाये और मेरी निगाह भी उस पर ना पड़े।

وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ

"और अल्लाह डरा रहा है तुम्हें अपने आपसे।"

यानि तक़वा इख़्तियार करना है तो उसका करो, डरना है तो उससे डरो, खौफ़ खाना है तो उससे खाओ!

وَاللّٰهُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ﴿۳۰﴾

"और अल्लाह तआला अपने बन्दों के हक़ में बहुत शफ़ीक़ है।"

यह तम्बिहात (warnings) वह तुम्हें बार-बार इसी लिये दे रहा है ताकि तुम्हारी आक़बत ख़राब ना हो।

आयत 31

"(ऐ नबी ﷺ!) कह दीजिये कि अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो" — قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ

यह आयत बहुत मारूफ़ है और मुस्लमानों को बहुत पसंद भी है। हमारे यहाँ मवाइज़ और खिताबात में यह बहुत कसरत से बयान होती है। फ़रमाया कि ऐ नबी ﷺ अहले ईमान से कह दीजिये कि अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, मेरा इत्तेबाअ करो! उसका नतीजा यह निकलेगा कि:

"अल्लाह तुमसे मोहब्बत करेगा" — يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

"और तुम्हारे गुनाह बख्श देगा।" — وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ

"और अल्लाह बख्शने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।" — وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

आयत 32

"कह दीजिये इताअत करो अल्लाह की और रसूल ﷺ की।" — قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ

"फिर अगर वह पीठ मोड़ लें तो (याद रखें कि) अल्लाह को ऐसे काफ़िर पसंद नहीं हैं।" — فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

यह दो आयतें इस ऐतबार से बहुत अहम हैं कि इनमें रसूल अल्लाह ﷺ के लिये दो अल्फ़ाज़ आये हैं "इताअत" और "इत्तेबाअ"। इताअत अगर नहीं है तो यह कुफ़्र है। चुनाँचे इताअत तो लाज़िम है और वह भी दिली आमादगी से, मारे-बांधे की इताअत नही। लेकिन इताअत किस चीज़ में होती है? जो हुक्म दिया गया है कि यह करो वह आपको करना है। इत्तेबाअ इससे बुलन्दतर शय है। इन्सान खुद तलाश करे कि आँहुज़ूर ﷺ के आमाल क्या थे और उन पर अमल पैरा हो जाये, ख्वाह आप ﷺ ने उनका हुक्म ना दिया हो। गोया इत्तेबाअ का दायरा इताअत से वसीतर है। इन्सान को जिस किसी से मोहब्बत होती है वह उससे हर तरह से एक मुनास्बत पैदा करना चाहता है। चुनाँचे वह उसके लिबास जैसा लिबास पहनना पसंद करता है, जो चीज़ें उसको खाने में पसंद है वही चीज़ें खुद भी खाना पसंद करता है। यह ऐसी चीज़ें हैं जिनका हुक्म नहीं दिया गया लेकिन इनका इल्तेज़ाम (प्रावधान) पसन्दीदा है। एक सहाबी رضی اللہ عنہ का वाक़िया आता है कि वह एक मरतबा रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने देखा कि आप ﷺ के कुरते के बटन नहीं लगे हुए थे और आप ﷺ का गिरेबान खुला था। उसके बाद उन सहाबी رضی اللہ عنہ ने फिर सारी उम्र अपने कुरते के बटन नहीं लगाये। हालाँकि हुज़ूर ﷺ ने तो उन्हें इसका हुक्म नहीं दिया था। यह सहाबी رضی اللہ عنہ कहीं दूर-दराज़ से आये होंगे और एक ही मरतबा खिदमते अक़दस में हाज़िर हुए होंगे, लेकिन उन्होंने उस वक़्त मुहम्मदुन रसूल अल्लाह ﷺ को जिस शान में देखा उसको फिर अपने ऊपर लाज़िम कर लिया।

इत्तेबाअ के ज़िमन में यह बात भी लायक़ तवज्जो है कि अगरचे दीन के कुछ तक़ाज़े ऐसे हैं कि उन्हें जिस दर्जे में मुहम्मदुन रसूल अल्लाह ﷺ ने पूरा फ़रमाया उस दर्जे में पूरा करना किसी इन्सान के बस में नहीं है, फिर भी इसकी कोशिश करते रहना इत्तेबाअ का तक़ाज़ा है। मसलन रसूल अल्लाह ﷺ ने कोई मकान नहीं बनाया, कोई जायदाद नहीं बनाई, जैसे ही वही का आगाज़ हुआ, उसके बाद आप ﷺ ने कोई दुनयवी काम नहीं किया, कोई तिजारत नहीं की। आप ﷺ ने अपने वक़्त का एक-एक लम्हा और अपनी तवानाई की एक-एक रमक़ अल्लाह के दीन की दावत और उसकी अक़ामत में लगा दी। सबके लिये तो इस मक़ाम तक पहुँचना यक़ीनन मुश्किल है, लेकिन बहरहाल बंदा-ए-मोमिन का आईडियल यह रहे और वह इसी की तरफ़ चलने की कोशिश करता रहे, अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त और ज़्यादा से ज़्यादा वसाइल फ़ारिग़ करे और इस काम के अन्दर लगाये तो "इत्तेबाअ" का कम से कम तक़ाज़ा पूरा होगा। अलबत्ता

जहाँ तक “इताअत” का ताल्लुक़ है उसमें कोताही क़ाबिले क़ुबूल नहीं। जहाँ हुक्म दे दिया गया कि यह हलाल है, यह हराम है, यह फ़र्ज़ है, यह वाजिब है, वहाँ हुक्म अदूली (उल्लंघन) की गुंजाइश नहीं। अगर इताअत ही से इन्कार है तो इसे क़ुरान कुफ़्र क़रार दे रहा है।

इत्तेबाअ का मामला यह है कि नबी ﷺ का इत्तेबाअ करने वाला अल्लाह का महबूब बन जाता है। यहाँ इरशाद फ़रमाया कि ऐ नबी ﷺ! अहले ईमान से कह दीजिये कि अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत करते हो तो मेरा इत्तेबाअ करो, मेरी पैरवी करो। देखो, मेरे शबो रोज़ क्या हैं? मेरी तवानईयाँ किन कामों पर लग रही हैं? दुनिया के अन्दर मेरी दिलचस्पियाँ क्या हैं? इन मामलात में तुम मेरी पैरवी करो। इसके नतीजे में तुम अल्लाह तआला के “मुहिब्ब” से बढ़ कर “महबूब” बन जाओगे और अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख्श देगा। वह यक़ीनन ग़फ़ूर और रहीम है। बाक़ी इताअत तो अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की हर सूरत करनी है। अगर यह इस इताअत से भी मुँह मोड़ें तो अल्लाह तआला को ऐसे काफ़िर पसंद नहीं हैं। क्योंकि इताअते रसूल ﷺ का इन्कार तो कुफ़्र हो गया। यहाँ सूरह आले इमरान के निस्फ़े अव्वल का सुलुसे अव्वल मुकम्मल हो गया। मैंने अर्ज़ किया था कि इस सूरह मुबारका की पहली 32 आयात तम्हीदी और उमूमी नौइयत की हैं। इनमें दीन के बड़े गहरे उसूल बयान हुए हैं, निहायत जामेअ दुआएँ तलक़ीन की गई हैं और मोहकमात और मुतशाबेहात का फ़र्क़ वाज़ेह किया गया है।

आयात 33 से 41 तक

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۳۳﴾ ذُرِّيَّةًۢ
بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۴﴾ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا
قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ
وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْۤ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿۳۶﴾ فَتَقَبَّلَهَا
رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ
لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ
يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا
وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۳۹﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ
وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿۴۰﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ
اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ
وَالْاِبْكَارِ ﴿۴۱﴾

सूरह आले इमरान के निस्फ़े अव्वल का दूसरा हिस्सा 31 आयात पर मुश्तमिल है। इस हिस्से में ख़िताब बराहे रास्त नसारा से है और उन्हें बताया गया है कि यह जो तुमने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मअबूद बना लिया है और तस्लीस (Trinity) का अक़ीदा गढ़ लिया है यह सब बातिल है। ईसाईयों के यहाँ दो तरह की तस्लीस राइज रही है: 1) ख़ुदा, मरयम और ईसा अलैहिस्सलाम और 2) ख़ुदा, रूहुल क़ुदुस और ईसा अलैहिस्सलाम। यहाँ पर वाज़ेह कर दिया गया कि यह जो तस्लीसें तुमने ईजाद कर ली हैं इनकी कोई बुनियाद नहीं है, यह तुम्हारी कज रवी है। तुमने गलत शक्ल इख़्तियार की है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बहुत बुरगज़ीदा पैगम्बर थे। हाँ उनकी विलादत मौज्ज़ाना तरीक़े पर हुई है। लेकिन उनसे मुत्तसालन क़ब्ल हज़रत याहया अलैहिस्सलाम की विलादत भी तो मौज्ज़ाना हुई थी। वह भी कोई कम मौज्ज़ा नहीं है। और फिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की विलादत भी तो बहुत बड़ा मौज्ज़ा है। अल्लाह ने

आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया और उनसे नस्ले इंसानी का आगाज़ हुआ। चुनाँचे अगर किसी की मौज्ज़ाना विलादत अलुहियत (divinity) की दलील है तो क्या हज़रत आदम अलै० और हज़रत याहया अलै० भी इलाह हैं? तो यह सारी बहस इसी मौज़ू पर हो रही है।

आयत 33

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾

"यक़ीनन अल्लाह ने चुन लिया आदम अलै० को, नूह अलै० को, आले इब्राहीम अलै० को और आले इमरान को तमाम जहाँ वालों पर।"

इस्तफ़ाअ के मायने मुन्तखब करने या चुन लेने (selection) के हैं। ज़ेरे मुताअला आयत से मुतबादर (ज़ाहिर) होता है कि हज़रत आदम अलै० का भी "इस्तफ़ाअ" हुआ है। इसमें उन लोगों के लिये एक दलील मौजूद है जो तख्लीक़े आदम के ज़िमन में यह नज़रिया रखते हैं कि पहले एक नौ (species) वजूद में आयी थी और अल्लाह ने उस नौ के एक फ़र्द को चुन कर उसमें अपनी रूह फूँकी तो वह आदम अलै० बन गये। चुनाँचे वह भी चुनिन्दा (selected) थे। इस्तफ़ाअ के एक आम मायने भी होते हैं, यानि पसंद कर लेना। इन मायनों में आयत का मफ़हूम यह होगा कि अल्लाह तआला ने आदम अलै० को और नूह अलै० को और इब्राहीम अलै० के खानदान को और इमरान के खानदान को तमाम जहान वालों पर तरजीह देकर पसंद कर लिया। तारीख बनी इसराइल में "इमरान" दो अज़ीम दो शख्सियतों के नाम हैं। हज़रत मूसा अलै० के वालिद का नाम भी इमरान था और हज़रत मरयम अलै० के वालिद यानि हज़रत ईसा अलै० के नाना का नाम भी इमरान था। यहाँ पर गालिबन हज़रत मूसा अलै० के वालिद मुराद हैं। लेकिन आगे चूँकि हज़रत मरयम अलै० और ईसा अलै० का तज़किरा आ रहा है, लिहाज़ा ऐन मुमकिन है कि यहाँ पर हज़रत मरयम अलै० के वालिद की तरफ़ इशारा हो।

आयत 34

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ

"यह एक-दूसरे की औलाद से हैं।"

हज़रत नूह अलै० हज़रत आदम अलै० की औलाद से हैं, हज़रत इब्राहीम अलै० हज़रत नूह अलै० की औलाद से हैं, और फिर हज़रत इब्राहीम अलै० का पूरा खानदान बनी इस्माइल, बनी इसराइल और आले इमरान उनकी औलाद में से हैं।

وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

"और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।"

आयत 35

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا

"जब कहा इमरान की बीवी ने कि ऐ मेरे रब! जो बच्चा मेरे पेट में है इसको मैं तेरी ही नज़र करती हूँ, हर ज़िम्मेदारी से छुड़ा कर"

इमरान की बीवी यानि हज़रत मरयम अलै० की वालिदा बहुत ही नेक, मुत्तक़ी और ज़ाहिदा थीं। जब उनको हमल हुआ तो उन्होंने अल्लाह तआला के हुज़ूर यह अर्ज़ किया कि परवरदिगार! जो बच्चा मेरे पेट में है, जिसे तू पैदा फ़रमा रहा है, इसे मैं तेरी ही नज़र करती हूँ। हम इस पर दुनयवी ज़िम्मेदारियों का कोई बोझ नहीं डालेंगे और इसको खालिसतन हैकल की ख़िदमत के लिये, दीन की ख़िदमत के लिये, तौरात की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर देंगे। हम अपना भी कोई बोझ इस पर नहीं डालेंगे। उन्हें यह तवक्क़ो थी कि अल्लाह तआला बेटा अता फ़रमायेगा। مُحَرَّرًا के मायने हैं "इसे आज़ाद करते हुए।" यानि हमारी तरफ़ से इस पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं होगी और इसे हम तेरे लिये खालिस कर देंगे।

فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ

"पस तू इसको मेरी तरफ़ से क़ुबूल फ़रमा!"

ऐ अल्लाह तू मेरी इस नज़र को शर्फे क़ुबूल अता फ़रमा।

"यक़ीनन तू सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।" — اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۳۵

आयत 36

"तो जब उसे वज़अ हमल हुआ तो उसने कहा ऐ मेरे रब! यह तो मैं एक लड़की जन गयी हूँ।" — فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ

यानि मेरे यहाँ तो बेटी पैदा हो गयी है। मैं तो सोच रही थी कि बेटा पैदा होगा तो मैं उसको वक़्फ़ कर दूँगी। उस वक़्त तक हैकल के ख़ादिमों में किसी लड़की को क़ुबूल नहीं किया जाता था।

"और अल्लाह बेहतर जानता था कि उसने क्या जना है।" — وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ

उसे क्या पता था कि उसने कैसी बेटी जनी है!

"और नहीं होगा कोई बेटा इस बेटी जैसा!" — وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ

इस जुम्ले के दोनों मायने किये गये। अव्वलन: अगर यह क़ौल माना जाये हज़रत मरयम अलै० की वालिदा का तो तर्जुमा यूँ होगा: "और लड़का, लड़की की मानिंद तो नहीं होता।" अगर लड़का होता तो मैं उसे ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर देती, यह तो लड़की हो गयी है। सानियन: "अगर इस क़ौल को अल्लाह की तरफ़ से माना जाये तो मफ़हूम यह होगा कि कोई बेटा ऐसा हो ही नहीं सकता जैसी बेटी तूने जन्म दी है। और अब मरयम अलै० की वालिदा का कलाम शुरू हुआ:

"और मैंने इसका नाम मरयम रखा है" — وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ

"और (ऐ परवरदिगार!) मैं इसको और इसकी औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ शैताने मरदूद (के हमलों) से।" — وَاِنِّيْٓ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۳۶

ऐ अल्लाह! तू इस लड़की (मरयम अलै०) को भी और इसकी आने वाली औलाद को भी शैतान के शर से अपनी हिफ़ाज़त में रखियो!

आयत 37

"तो क़ुबूल फ़रमा लिया उसको (यानि हज़रत मरयम अलै० को) उसके रब ने बड़ी ही उम्दगी के साथ" — فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ

शर्फे क़ुबूल अता फ़रमाया बड़े ही ख़ूबसूरत अंदाज़ में।

"और उसको परवान चढ़ाया बहुत आला तरीक़े पर" — وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ

"और उसको ज़करिया अलै० की कफ़ालत में दे दिया।" — وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ

हज़रत ज़करिया अलै० उनके सरपरस्त मुक़र्रर हुए और उन्होंने हज़रत मरयम अलै० की कफ़ालत व तरबियत की ज़िम्मेदारी उठाई। वह हज़रत मरयम अलै० के खालू थे। आप अलै० वक़्त के नबी थे और इस्राइली इस्तलाह में हैकले सुलेमानी के काहिने आज़म (Chief Priest) भी थे।

"जब कभी भी ज़करिया अलै० उनके पास जाते थे मेहराब में" — كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ

"तो उनके पास रिज़्क़ पाते।" — وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ

"मेहराब" से मुराद वह गोशा या हुजरा है जो हज़रत मरयम अलै० के लिये मख़सूस कर दिया गया था। हज़रत ज़करिया अलै० उनकी देख-भाल के

लिये अक्सर उनके हुजरे में जाते थे। आप अलै० जब भी हुजरे में जाते तो देखते कि हज़रत मरयम अलै० के पास खाने-पीने की चीज़ें और बगैर मौसम के फ़ल मौजूद होते। बाज़ लोगों की राय यह भी है कि यहाँ रिज़्क़ से मुराद माद्दी खाना नहीं, बल्कि इल्म व हिकमत है कि जब हज़रत ज़करिया अलै० उनसे बात करते थे तो हैरान रह जाते थे कि इस लड़की को इस क़दर हिकमत और इतनी मार्फ़त कहाँ से हासिल हो गयी है?

قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ

"वह पूछते ऐ मरयम अलै०! तुम्हें यह चीज़ें कहाँ से मिलती हैं?"

यह अन्वा व अक़साम के खाने और बेमौसमी फ़ल तुम्हारे पास कहाँ से आ जाते हैं? या यह इल्म व हिकमत और मार्फ़त की बातें तुम्हें कहाँ से मालूम होती हैं?

قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ

"वह कहती थीं कि यह सब अल्लाह की तरफ़ से है।"

यह सब उसका फज़ल और और उसका करम है।

اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾

"यक़ीनन अल्लाह तआला जिसको चाहता है बेहिसाब अता करता है।"

आयत 38

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ

"(हज़रत ज़करिया अलै० को यह मुशाहिदा हुआ तो उन्होंने) उसी वक़्त अपने परवरदिगार से एक दुआ की।

قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ

"उन्होंने कहा: ऐ मेरे रब! तू मुझे भी अपनी जनाब से कोई पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा दे।"

हज़रत ज़करिया अलै० बहुत बूढ़े हो चुके थे, उनकी अहलिया भी बहुत बूढी हो चुकी थीं और सारी उम्र बाँझ रही थी और उनके यहाँ कोई औलाद नहीं हुई थी। यह मज़ामीन सूरह मरयम में ज़्यादा तफ़सील के साथ बयान हुए हैं। मक्की दौर में जबकि मुस्लमान हिजरते हब्शा के लिये गये थे, तो वहाँ जाकर नाज्जाशी के दरबार में हज़रत जाफ़र رضی اللہ عنہ बिन अबी तालिब ने सूरह मरयम की आयात पढ़ कर सुनाई थीं। इस मुनास्बत से यह मज़ामीन सूरह मरयम में भी मिलते हैं। हज़रत ज़करिया अलै० सारी उम्र बेऔलाद रहे थे, लेकिन हज़रत मरयम अलै० के पास अल्लाह तआला की क़ुदरत का मुशाहिदा करने के बाद औलाद की जो ख्वाहिश उनके अन्दर दबी हुई थी वह चिंगारी दफ्फ़तन भड़क उठी। उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह! तू इस बच्ची को यह सब कुछ दे सकता है तो अपनी क़ुदरत से मुझे भी पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा दे!

اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾

"यक़ीनन तू दुआ का सुनने वाला है।"

आयत 39

فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ

"तो फ़रिश्तों ने उन्हें निदा (आवाज़) दी जबकि वह अपने हुजरे में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे"

اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى

"कि अल्लाह तआला तुम्हें बशारत देता है याहया अलै० की"

مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ

"जो तस्दीक़ करेगा अल्लाह की तरफ़ से एक कलिमे की"

इससे मुराद हज़रत ईसा अलै० हैं, जिनके लिये आयत 44 में "بِكَلِمَةٍ مِنْهُ" का लफ्ज़ आ रहा है।

وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۳۹﴾

"और सरदार होगा और तजर्रुद (अविवाहित) की ज़िन्दगी गुज़ारेगा और नबी होगा सालेहीन में से।"

यहाँ नोट कर लीजिये कि आखरी लफ्ज़ जो हज़रत याहया अलै० की मदह के लिये आया है वह "नबी" है।

आयत 40

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ

"(ज़करिया अलै० ने) कहा: परवरदिगार! मेरे यहाँ लड़का कैसे हो जायेगा?"

अभी खुद दुआ कर रहे थे, लेकिन अल्लाह की तरफ़ से बेटे की बशारत मिलने पर गालिबन उसकी तौसीक़ और re-assurance चाह रहे हैं कि मेरे यहाँ कैसे बेटा हो जायेगा?

وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ

"जबकि मैं इन्तहाई बूढ़ा हो चुका हूँ"

وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ

"और मेरी बीवी बाँझ रही है।"

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۝۴۰

"(अल्लाह ने) फ़रमाया: इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है।"

उसे असबाब की अहतियाज नहीं है। असबाब उसके मोहताज हैं, अल्लाह असबाब का मोहताज नहीं है।

आयत 41

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ

"उन्होंने अर्ज़ किया: परवरदिगार! मेरे (इत्मिनान के) लिये कोई निशानी मुक़र्रर कर दे।"

मुझे मालूम हो जाये कि वाक़ई ऐसा होना है और यह कलाम जो मैं सुन रहा हूँ वाक़िअतन तेरी तरफ़ से है।

قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ

"(अल्लाह ने) फ़रमाया: तुम्हारे लिये निशानी यह है कि अब तुम तीन दिन तक लोगों से गुफ्तगू नहीं कर सकोगे सिवाये इशारे-किनारे के।"

यानि उनकी क़ुव्वते गोयाई सल्ब (बोलने की क्षमता बन्द) हो गयी और अब वह तीन दिन किसी से बात नहीं कर सकते थे।

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا

"और (अपने दिल में) अपने रब को कसरत से याद करते रहो"

وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝۴۱

"और तस्बीह किया करो शाम के वक़्त भी और सुबह के वक़्त भी।"

आयात 42 से 54 तक

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ
الْعٰلَمِيْنَ ۝۴۲ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝۴۳ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ
الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ
ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝۴۴ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ
بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ
الْمُقَرَّبِيْنَ ۝۴۵ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝۴۶ قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا
فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝۴۷ وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝۴۸
وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ
الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا ۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ
وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ

بُيُوْتِكُمْ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۴۹﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ
التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۵۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۵۱﴾
فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ
اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا
الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾

हज़रत ज़करिया और हज़रत याहया अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान हो गया कि अल्लाह तआला ने हज़रत ज़करिया अलै० को शदीद ज़ईफ़ी की उम्र में एक बाँझ और बूढ़ी औरत से हज़रत याहया अलै० जैसा बेटा दे दिया। तो क्या यह आम क़ानून के मुताबिक़ है? ज़ाहिर है यह भी तो मौज्ज़ा था। इसी तरह इससे ज़रा बढ़ कर एक मौज्ज़ा हज़रते मसीह अलै० की पैदाइश है कि उन्हें बगैर बाप के पैदा फ़रमा दिया। अब इसका ज़िक्र आ रहा है।

आयत 42

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰۗىِٕكَةُ يٰمَرْيَمُ

"और याद करो जबकि कहा फ़रिश्तों ने ऐ मरयम अलै०"

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ
عَلٰي نِسَاۗءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۲﴾

"यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हें चुन लिया है और तुम्हें ख़ूब पाक कर दिया है और तुम्हें तमाम जहान की ख़्वातीन पर तरजीह दी है।"

आयत 43

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ

"ऐ मरयम अलै०! अपने रब की फ़रमा-बरदारी करती रहो"

وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿۴۳﴾

"और सज्दा करती रहो और रुकूअ करती रहो रुकूअ करने वालों के साथ।"

यानि नमाज़े बा-जमाअत के अन्दर शरीक हो जाया करो।

आयत 44

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۭ

"यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो (ऐ मुहम्मद ﷺ!) हम आपको वही कर रहे हैं।"

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ
اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ

"और आप तो उनके पास मौजूद नहीं थे जबकि वह अपने क़लम फेंक रहे थे (यह तय करने के लिये) कि उनमें से कौन मरयम का कफ़ील होगा।"

जब हज़रत मरयम अलै० को उनकी वालिदा ने हैकल की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ किया तो हैकल के काहिनों में से हर एक यह चाहता था कि यह बच्ची मेरी तहवील में हो, इसकी तरबियत और परवरिश की सआदत मुझे हासिल हो जाये जिसे अल्लाह के नाम पर वक़्फ़ कर दिया गया है। चुनाँचे इसके लिये वह अपने क़लम फेंक कर किसी तरह क़ुर्रा अंदाज़ी कर रहे थे। इसमें अल्लाह ने हज़रत ज़करिया अलै० का नाम निकाल दिया। यहाँ अस्नाये कलाम में नबी अकरम ﷺ को मुखातिब करके फ़रमाया जा रहा है कि आप ﷺ तो उस वक़्त वहाँ नहीं थे जब वह क़ुर्रा अंदाज़ी से यह मामला तय कर रहे थे।

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۴۴﴾

"और ना आप उस वक़्त उनके पास मौजूद थे जबकि वह आपस में झगड़ रहे थे।"

आयत 45

إِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ

"याद करो जबकि फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम अलै०! यक़ीनन अल्लाह तआला तुम्हें बशारत दे रहा है अपनी तरफ़ से एक कलिमे की"

तुम्हें अल्लाह तआला एक ऐसी हस्ती की विलादत की खुशखबरी दे रहा है जो उसकी जानिब से एक ख़ास कलिमा होगा।

اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ

"उसका नाम होगा अल-मसीह, ईसा, मरयम का बेटा"

وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾

"मरतबे वाला होगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी और अल्लाह के बहुत ही मुक़र्रबीन बारगाह में से होगा।"

आयत 46

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا

"और वह लोगों से गुफ्तगू करेगा गोद में भी और पूरी उम्र का होकर भी"

कहुलत चालीस बरस के बाद आती है और हज़रत मसीह अलै० का रफ़ा-ए-समावी 33 बरस की उम्र में हो गया था। गोया इस आयत का तक़ाज़ा अभी पूरा नहीं हुआ है। और इससे अंदाज़ा कर लीजिये कि यह बात कहने की ज़रूरत क्या थी? पूरी उम्र को पहुँच कर तो सभी बोलते हैं, यहाँ इसका इशारा क्यों किया गया? इसलिये ताकि हमें मालूम हो जाये की हज़रत मसीह अलै० पर मौत अभी वारिद नहीं हुई, बल्कि वह वापस आयेंगे, दुनिया में दोबारा उतरेंगे, फिर उनकी कहुलत की उम्र भी होगी। वह शादी भी करेंगे, उनकी औलाद भी होगी और उनके ज़रिये से अल्लाह तआला निज़ामे ख़िलाफ़त अला मिन्हाजन्नबुवा को पूरी दुनिया में क़ायम करेगा।

وَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٤٦﴾

"और वह हमारे नेकोकार बन्दों में से होगा।"

आयत 47

قَالَتْ رَبِّ أَنّٰى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ

"(हज़रत मरयम अलै० ने यह बात सुनी तो तअज्जुब से) बोली: ऐ अल्लाह! मेरे औलाद कैसे हो जायेगी जबकि मुझे तो किसी मर्द ने हाथ तक नहीं लगाया!"

قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ

"फ़रमाया: इसी तरह अल्लाह तआला तख्लीक़ फ़रमाता है जो कुछ चाहता है।"

वह अपने बनाये हुए क़वानीने फ़ितरत का पाबन्द नहीं है। अगरचे आम विलादत इसी तरह होती है कि उसमें बाप का भी हिस्सा होता है और माँ का भी, लेकिन अल्लाह तआला इन असबाब और वसाइल व ज़राये का मोहताज नहीं है, वह जैसे चाहे पैदा करता है।

إِذَا قَضٰى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾

"वह तो जब किसी अम्र का फ़ैसला कर लेता है तो उससे कहता है हो जा तो वह हो जाता है।"

आयत 48

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيلَ ﴿٤٨﴾

"और अल्लाह तआला उसको सिखायेगा किताब और हिकमत भी और तौरात और इन्जील भी।"

यहाँ पर चार चीज़ों का ज़िक्र आया है जिनकी अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह अलै० को तालीम दी: किताब और हिकमत और तौरात और इन्जील। इन चार चीज़ों के माबैन जो तीन "و" आये हैं उनमें से दो वावे अतफ़ हैं, जबकि दरमियानी "و" वावे तफ़सीर है। इस तरह आयत का

मफ़हूम यह होगा कि "अल्लाह उनको सिखायेगा किताब और हिकमत यानि तौरात और इन्जील।" इसलिये कि तौरात में सिर्फ़ अहकाम थे, हिकमत नहीं थी और इन्जील में सिर्फ़ हिकमत है, अहकाम नहीं हैं। यही वह नुक्ता है जिसको समझ लेने से यह गुत्थी हल होती है और इसे समझे बगैर लोगों के ज़हनों में उलझनें रहती हैं।

आयत 49

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ

"और उसको रसूल बना कर भेजेगा बनी इसराइल की तरफ़"

अब यह जो दो ब-यक वक़्त आने वाली (contemporary) इस्तलाहात हैं इनको नोट कर लीजिये। हज़रत याहया अलै० के बारे में तमाम तौसीफ़ी कलिमात के बाद आखरी बात यह फ़रमायी: {وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ} (आयत:39) "नबी होंगे सालिहीन में से।" जबकि हज़रत ईसा अलै० के बारे में फ़रमाया: {وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ} यानि बनी इसराइल की तरफ़ रसूल बन कर आयेंगे। नबी और रसूल में यह फ़र्क़ नोट कर लीजिये कि हज़रत याहया अलै० सिर्फ़ नबी थे इसलिये वह क़त्ल भी कर दिये गये, जबकि हज़रत ईसा अलै० रसूल थे और रसूल क़त्ल नहीं हो सकते, इसलिये उन्हें ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया गया। यह बहुत अहम मज़मून है। मुताअला क़ुराने हकीम के दौरान इसके और भी हवाले आयेंगे।

اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ

"(चुनाँचे हज़रत मसीह अलै० बनी इसराइल को दावत दी) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ"

अभी तक गुफ्तगू हो रही थी कि हज़रत मरयम अलै० को अल्लाह तआला की तरफ़ से यह सारी खुशखबरियाँ दी गयीं। अब यूँ समझिये कि क़िस्सा मुख़्तसर, उनकी विलादत हुई, वह पले-बढ़े, यह सारी तारीख बीच में से हज़फ़ करके नक्शा खींचा जा रहा है कि अब हज़रत मसीह अलै० ने अपनी दावत का आगाज़ कर दिया। आप अलै० ने बनी इसराइल से कहा कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ।

اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ

"कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्दे की मानिंद सूरत बनाता हूँ"

فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا ۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

"फिर मैं उसमें फूँक मरता हूँ तो वह बन जाता है उड़ता हुआ परिन्दा अल्लाह के हुक्म से।"

यहाँ आप नोट करते जाइये कि हर मौज्ज़े के बाद "بِاِذْنِ اللّٰهِ" फ़रमाया। यानि यह मेरा कोई दावा नहीं है, मेरा कोई कमाल नहीं है। यह जो कुछ है वह अल्लाह के हुक्म से है।

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

"और मैं शिफ़ा दे देता हूँ मादरज़ाद अंधे को भी और कोढ़ी को भी, और मैं मुर्दे को ज़िन्दा कर देता हूँ अल्लाह के हुक्म से।"

وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ۭ

"और मैं तुम्हें बता सकता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ तुम अपने घरों में ज़खीरा करके रखते हो।"

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۴۹

"यक़ीनन उन तमाम चीज़ों में तुम्हारे लिये निशानी है अगर तुम ईमान लाने वाले हो।"

हज़रत मसीह अलै० ने अपनी रिसालत की सदाक़त और दलील के तौर पर यह तमाम मौज्ज़ात पेश फ़रमाये।

आयत 50

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ

"और मैं तस्दीक़ करते हुए आया हूँ उसकी जो मेरे सामने मौजूद है तौरात में से"

وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ

"और (इसलिये आया हूँ) ताकि मैं हलाल ठहरा दूँ तुम पर उनमें से बाज़ चीज़ें जो तुम पर हराम कर दी गयी हैं।"

यह असल में "सब्त" के हुक्म के बारे में इशारा है। जैसे हमारे यहाँ भी बाज़ मज़हबी मिज़ाज के लोगों में बड़ी सख्ती पैदा हो जाती है और वह दीन के अहकाम में गुलू करते चले जाते हैं, इसी तरह सब्त के हुक्म में यहूदियों ने इस हद तक गुलू कर लिया था कि उस रोज़ किसी मरीज़ के लिये दुआ कि अल्लाह उसे शिफ़ा दे दे, यह भी जायज़ नहीं समझते थे। वह कहते थे कि यह भी दुनिया का काम है। चुनाँचे वह इस मामले में एक इन्तहा तक पहुँच गये थे। हज़रत मसीह अलै० ने आकर उसकी वज़ाहत की कि इस तरह की चीज़ें सब्त के तक़ाज़ों में शामिल नहीं हैं।

وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ

"और मैं तुम्हारे पास लेकर आया हूँ निशानी तुम्हारे रब की तरफ से।"

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝٥٠

"पस अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और मेरी इताअत करो।"

आयत 51

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ

"यक़ीनन अल्लाह ही मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, पस उसी की बन्दगी करो।"

هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٥١

"यही सीधा रास्ता है।"

यही अल्फ़ाज़ सूरह मरयम (आयत 36) में भी वारिद हुए हैं।

आयत 52

فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ

"पस जब ईसा अलै० ने उनकी तरफ़ से कुफ़्र को भाँप लिया"

قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ

"तो उन्होंने पुकार लगायी कि कौन है मेरा मददगार अल्लाह की राह में?"

यहाँ फिर दरमियानी अरसे का ज़िक्र छोड़ दिया गया है। बनी इसराइल को दावत देते हुए हज़रत मसीह अलै० को कई साल बीत चुके थे। इस दावत से जब उलमा-ए-यहूद की मसनदों को ख़तरा लाहक़ हो गया और उनकी चौधराहटें खतरे में पड़ गयीं तो उन्होंने हज़रत मसीह अलै० की शदीद मुखालफ़त की। उस वक़्त तक यहूदियों पर उनके उलमा का असर व रसूख बहुत ज़्यादा था। जब आप अलै० ने उनकी तरफ़ से कुफ़्र की शिद्दत को महसूस किया कि अब यह ज़िद और मुखालफ़त पर तुल गये हैं, तो आप अलै० ने एक पुकार लगायी, एक निदा दी, एक दावते आम दी कि कौन है जो अल्लाह की राह में मेरे मददगार हैं? यानि अब जो कशाकश होने वाली है, जो तसादुम होने वाला है उसमें एक "हिज़बुल्लाह" बनेगी और एक "हिज़बुश्शैतान" होगी। अब कौन है जो मेरा मददगार हो अल्लाह की राह में इस जद्दो-जहद और कशाकश में? दीन का काम करने के लिये यही असल असास है। इसी बुनियाद पर कोई शख्स उठे कि मैं दीन का काम करना चाहता हूँ, कौन है कि जो मेरा साथ दे? यह जमात साज़ी का एक बिल्कुल तबई तरीक़ा होता है। एक दाई उठता है और उस दाई पर ऐतमाद करने वाले, उससे इत्तेफाक़ करने वाले लोग उसके साथी बन जाते हैं। यह लोग ज़ाती ऐतबार से उसके साथी नहीं होते, उसकी हुकूमत और सरदारी क़ायम करने के लिये नहीं, बल्कि अल्लाह की हुकूमत क़ायम करने के लिये और अल्लाह तआला के दीन के गलबे के लिये उसका साथ देते हैं।

قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ

"कहा हवारियों ने कि हम हैं अल्लाह के मददगार!"

"हवारी" के असल मायने धोबी के हैं जो कपड़े को धो कर साफ़ कर देता है। यह लफ्ज़ फिर आगे बढ़ कर अपने अख्लाक़ और किरदार को साफ़ करने

वालों के लिये इस्तेमाल होने लगा। हज़रत मसीह अलै० की तब्लीग ज़्यादातर गलैली झील के किनारों पर होती थी, जो समुन्दर की तरह बहुत बड़ी झील है। आप अलै० कभी वहाँ कपड़े धोने वाले धोबियों में तब्लीग करते थे और कभी मछलियाँ पकड़ने वाले मछियारों को दावत देते थे। आप अलै० उनसे फ़रमाया करते थे कि ऐ मछलियों का शिकार करने वालों! आओ मैं तुम्हें इन्सानों का शिकार करना सिखाऊँ।" आप अलै० ने धोबियों में तब्लीग की तो उनमें से कुछ लोगों ने अपने आप को पेश कर दिया कि हम आपकी जद्दो-जहद में अल्लाह के मददगार बनने को तैयार हैं। यह आप अलै० के अव्वलीन साथी थे जो "हवारी" कहलाते थे। इस तरह हवारी का लफ्ज़ साथी के मायने में इस्तेमाल होने लगा।

"हम ईमान लाये अल्लाह पर।" — اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ

"और आप अलै० भी गवाह रहियेगा कि हम अल्लाह के फ़रमाबरदार हैं।" — وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾

आयत 53

"ऐ रब हमारे! हम ईमान ले आये उस पर जो तूने नाज़िल फ़रमाया" — رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ

"और हम इत्तेबाअ कर रहे हैं तेरे रसूल का" — وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ

"पस तू हमारा नाम गवाहों में लिख ले।" — فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۵۳﴾

यही लफ्ज़ "गवाह" अब ईसाईयों के एक ख़ास फ़िरक़े की तरफ़ (Jehova's Witnesses) से इख़्तियार किया गया है। लफ्ज़ यहवा (Jehova) इब्रानी में ख़ुदा के लिये आता है। यानि यह लोग अपने आप को "ख़ुदा के गवाह" कहते हैं। सूरतुल बक़रह की आयत 143 हम पढ़ आये हैं:

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ

"और (ऐ मुस्लमानों!) इसी तरह तो हमने तुम्हें एक उम्मते वस्त बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह हो और रसूल ﷺ तुम पर गवाह हो।"

तो यह लफ्ज़ "शाहिद" (गवाह) क़दीम है और इस्लामी हिकमत और इस्लाम की मुस्तलाहात में इसकी एक हैसियत है।

आयत 54

"अब उन्होंने भी चालें चलीं और अल्लाह ने भी चाल चली।" — وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ

यहूद के उलमा और फ़रेसी हज़रत मसीह अलै० के खिलाफ़ मुख्तलिफ़ चालें चल रहे थे कि किसी तरह यह क़ानून की गिरफ्त में आ जायें और उनका काम तमाम कर दिया जाये। उन लोगों ने आँजनाब अलै० को मुरतद और वाजिबुल क़त्ल क़रार दे दिया था, लेकिन मुल्क पर सियासी इक़तदार चूँकि रूमियों का था लिहाज़ा रूमी गवर्नर की तौसीक़ (sanction) के बगैर किसी को सज़ाए मौत नहीं दी जा सकती थी। मुल्क का बादशाह अगरचे एक यहूदी था लेकिन उसकी हैसियत कठपुतली बादशाह की थी, जैसे अंग्रेज़ी हुकूमत के तहत मिस्र के शाह फ़ारूक़ होते थे। यहूद की मज़हबी अदालतें मौजूद थीं जहाँ उनके उलमा, मुफ़्ती और फ़रेसी बैठ कर फ़ैसले करते थे, और अगर वह सज़ाए मौत का फ़ैसला दे देते थे तो उस फैसले की तन्फीद (execution) रूमी गवर्नर के ज़रिये होती थी। इस सूरते हाल में उलमाये यहूद के हाथ बंधे हुए थे और वह हज़रत मसीह अलै० को रूमी क़ानून की ज़द में लाने के लिये अपनी सी चालें चल रहे थे। वह आँजनाब अलै० से इस तरह के उल्टे-सीधे सवालात करते कि आप अलै० के जवाबात से यह साबित किया जा सके कि यह शख्स रूमी हुकूमत का बागी है।

यहूद की इन चालों का तोड़ करने के लिये अल्लाह ने अपनी चाल चली। अब अल्लाह की क्या चाल क्या थी? इसकी तफ़सील क़ुरान या

हदीस में नहीं है, बल्कि "इन्जील बरनबास" में है जो पॉप की लाइब्रेरी से बरामद हुई थी। हज़रत मसीह अलै० के हवारियों में से एक हवारी यहूदा को यहूद ने रिश्वत देकर इस बात पर राज़ी कर लिया था कि वह आप अलै० की मुखबरी करके गिरफ्तार कराये। अल्लाह तआला ने उसी गद्दार हवारी की शक्ल हज़रत मसीह अलै० की सी बदल दी और वह खुद गिरफ्तार होकर सूली चढ़ गया। हज़रत मसीह अलै० पर वह हाथ डाल ही नहीं सके। हज़रत मसीह अलै० एक बाग़ में रूपोश थे और बाग़ के अन्दर बनी हुई एक कोठरी में रात के वक़्त इबादत में मशगूल थे, जबकि आप अलै० के बारह हवारी बहार मौजूद थे। उस वक़्त वह शख्स वहाँ से चुपके से सटक लिया गया और जाकर सिपाहियों को ले आया ताकि आप अलै० को गिरफ्तार करा सके। यह रूमी सिपाही थे और क़न्दीलें (लालटेन) लेकर आये थे। उसने सिपाहियों से कहा था कि मैं अन्दर जाऊँगा, जिस शख्स को मैं कहूँ "ऐ हमारे उस्ताद" बस उसी को पकड़ लेना, वही मसीह अलै० हैं। इसलिये कि रूमियों को क्या पता था कि मसीह अलै० कौन हैं? यह शख्स जैसे ही कोठरी के अन्दर दाख़िल हुआ उसी वक़्त कोठरी की छत फटी और चार फ़रिश्तें नाज़िल हुए, जो हज़रत मसीह अलै० को लेकर चले गये। अल्लाह तआला ने उस शख्स की शक्ल तब्दील कर दी और हज़रत मसीह अलै० वाली शक्ल बना दी। अब यह घबरा कर बाहर निकला तो दूसरे हवारियों ने उससे कहा "ऐ हमारे उस्ताद!" यह सुनते ही सिपाहियों ने उसे क़ाबू कर लिया और असल में यही शख्स सूली चढ़ा है, ना कि हज़रत मसीह अलै०। यह सारी तफ़ासील इन्जील बरनबास में मौजूद हैं। यह शहादत दरहक़ीक़त नसारा ही के घर से हमें मिली है और क़ुरान का जो बयान है उसमें यह पूरी तरह फिट बैठती है कि "उन्होंने अपनी सी चालें चलीं और अल्लाह ने अपनी चाल चली।"

"और अल्लाह तआला बेहतरीन चाल चलने वाला है।"

وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾

आयात 55 से 63 तक

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا
شَدِيْدًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ
الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۭ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ
ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَاۗجَّكَ
فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَاۗءَنَا وَاَبْنَاۗءَكُمْ وَنِسَاۗءَنَا
وَنِسَاۗءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾

आयत 55

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ

"याद करो जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा अलै० अब मैं तुम्हें ले जाने वाला हूँ और अपनी तरफ़ उठा लेने वाला हूँ"

लफ्ज़ "مُتَوَفِّيْكَ" को क़ादयानियों ने अपने उस गलत अक़ीदे के लिये बहुत बड़ी बुनियाद बनाया है कि हज़रत मसीह अलै० की वफ़ात हो चुकी है। लिहाज़ा इस लफ्ज़ को अच्छी तरह समझ लीजिये। वफ़ा के मायने हैं पूरा करना। उर्दू में भी कहा जाता है वादा वफ़ा करो। इसी से बाब تفعيل में وَفّٰى - يُوَفِّيْ - تَوْفِيَةً का मतलब है किसी को पूरा देना। जैसा कि आयत 25 में हम पढ़ आये हैं: { فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۣ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ} "तो क्या हाल होगा जब हम उन्हें इकठ्ठा करेंगे उस दिन जिसके बारे में कोई शक नहीं! और हर जान को पूरा-पूरा बदला उसके आमाल का दे दिया जायेगा और उन पर कोई ज़्यादती नहीं होगी।" बाब تفعّل में تَوَفّٰى - يَتَوَفّٰى का मायना होगा किसी को पूरा-पूरा ले लेना। और यह लफ्ज़ गोया ब-तमामो कमाल मुन्तबिक़ होता है हज़रत मसीह अलै० पर कि जिनको अल्लाह तआला उनके जिस्म और जान समेत दुनिया से ले गया। हम जब कहते हैं कि कोई शख्स वफ़ात पा गया तो यह इस्तआरतन कहते हैं। इसलिये कि उसका जिस्म तो यहीं रह गया सिर्फ़ जान गयी है। और यही लफ्ज़ क़ुरान (अज़ ज़ुमर:42) में नींद के लिये भी आया है: { اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ} "वह अल्लाह ही है जो मौत के वक़्त रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और जो अभी नहीं मरा उसकी रूह नींद में क़ब्ज़ कर लेता है।" इसलिये कि नींद में भी इन्सान से खुदशऊरी निकल जाती है, अगरचे वह ज़िन्दा होता है। रूह का ताल्लुक़ खुदशऊरी के साथ है। फिर जब इन्सान मरता है तो रूह और जान दोनों चली जाती हैं और सिर्फ़ जिस्म रह जाता है। क़ुरान हकीम ने इन दोनों हालतों (नींद और मौत) के लिये توفّى का लफ्ज़ इस्तेमाल किया है। और सबसे ज़्यादा मुकम्मल توفّى यह है कि अल्लाह तआला हज़रत मसीह अलै० को उनके जिस्म, जान और रूह तीनों समेत, ज्यों का त्यों, ज़िन्दा सलामत ले गया। हज़रत मसीह अलै० के रफ़ा-ए-समावी का यह अक़ीदा मुस्लमानों का है, और जहाँ तक लफ्ज़ "تَوَفّٰى" का ताल्लुक़ है उसमें क़तअन कोई ऐसी पेचीदा बात नहीं है जिससे कोई शख्स आप अलै० की मौत की दलील पकड़ सके, सिवाय इसके कि उन लोगों को बहकाना आसान है जिन्हें अरबी ज़बान की ग्रामर से वाक़फ़ियत नहीं है और वह एक ही वफ़ात जानते हैं, जबकि अज़रूए क़ुरान तीन क़िस्म की "वफ़ात" साबित होती है, जिसकी मैंने वज़ाहत की है। आयत ज़ेरे मुताअला के मुतज़क्किर बाला टुकड़े का तर्जुमा फिर कर लीजिये: "याद करो जब अल्लाह ने कहा कि ऐ ईसा अलै० मैं तुम्हें ले जाने वाला हूँ और तुम्हें अपनी तरफ़ उठा लेने वाला हूँ।"

وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا — *"और तुम्हें पाक करने वाला हूँ उन लोगों से जिन्होंने (तुम्हारे साथ) कुफ्र किया है"*

وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ — *"और ग़ालिब करने वाला हूँ उन लोगों को जो तुम्हारी पैरवी करेंगे क़यामत तक उन लोगों पर जो तुम्हारा इन्कार कर रहे हैं।"*

यहूद जिन्होंने हज़रत मसीह अलै० का इन्कार किया था उस वक़्त से लेकर मौजूदा ज़माने तक हज़रत मसीह अलै० के पैरोकारों से मार खाते रहे हैं। हज़रत मसीह अलै० 30 या 33 ईस्वी में आसमान पर उठा लिये गये थे और उसके बाद से यहूद पर ईसाईयों के हाथों मुसलसल अज़ाब के कोड़े बरसते रहे हैं। हज़रत मसीह अलै० के रफ़ा-ए-समावी के 40 बरस बाद 70 ईस्वी में टाइटस रूमी के हाथों हैकल सुलेमानी मस्मार हुआ और येरुशलम में एक लाख बीस हज़ार या एक लाख तैंतीस हज़ार यहूदी एक दिन में क़त्ल किये गये। गोया दो हज़ार बरस होने को हैं कि उनका काबा गिरा पड़ा है। उसकी सिर्फ़ एक दीवार (दीवारे गिरया) बाक़ी है जिस पर जाकर यह रो-धो लेते हैं।

हैकल सुलेमानी अव्वलन बख्तनसर ने छठी सदी क़ब्ल मसीह में मस्मार किया था और पूरे येरुशलम की ईंट से ईंट बजा दी थी। उसने लाखों यहूदी तहे तैग़ कर कर दिये थे और लाखों को क़ैदी बना कर अपने साथ बाबुल ले गया था। यह उनका असारत (captivity) का दौर कहलाता है। हज़रत उज़ैर अलै० के ज़माने में यह फ़लस्तीन वापस आये थे और "मअबूदे सानी" तामीर किया था, जो 70 ई० में मुन्हदिम कर दिया गया और उन्हें फ़लस्तीन से निकाल दिया गया। चुनाँचे यह मुख्तलिफ़ मुल्कों में मुन्तशिर हो गये। कोई रूस, कोई हिन्दुस्तान, कोई मिस्र और कोई यूरोप चला गया। इस तरह यह पूरी दुनिया में फ़ैल गये। यह उनका दौरे इन्तशार (Diaspora) कहलाता है। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० के दौर में जब ईसाईयों ने एक मुआहिदे के तहत येरुशलम मुस्लमानों के हवाले कर दिया तो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने उसे खुला शहर (open city) क़रार दे दिया कि यहाँ मुस्लमान, ईसाई और यहूदी सब आ सकते हैं। इस तरह

उनकी येरुशलम में आमद-ओ-रफ्त शुरू हो गयी। अलबत्ता ईसाईयों ने इस मुआहिदे में यह शर्त लिखवाई थी कि यहूदियों को यहाँ आबाद होने या जायदाद खरीदने की इजाज़त नहीं होगी। चुनाँचे हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० के ज़माने से ख़िलाफ़ते उस्मानिया के दौर तक इस मुआहिदे पर अमल दरामद होता रहा और यहूदियों को फ़लस्तीन में आबाद होने की इजाज़त नहीं दी गयी। यहूदियों ने उस्मानी खुलफ़ा को बड़ी से बड़ी रिश्वतों की पेशकश की, लेकिन उन्हें इसमें कामयाबी ना हुई। चुनाँचे उन्होंने साज़िशें कीं और ख़िलाफ़ते उस्मानिया का ख़ात्मा करवा दिया। इसलिये कि उन्हें यह नज़र आता था कि इस ख़िलाफ़त के होते हुए यह मुमकिन नहीं होगा कि हम किसी तरह भी फ़लस्तीन में दोबारा आबाद हो सकें। उन्होंने 1917 ई० में बरतानवी वज़ीर बाल्फोर (Balfor) के ज़रिये "बाल्फ़ोर डिक्लेरेशन" मंज़ूर कराया, जिसमें उनको यह हक़ दिया गया कि वह फ़लस्तीन में आकर जायदाद भी खरीद सकते हैं और आबाद भी हो सकते हैं। इस डिक्लेरेशन की मंज़ूरी के 31 बरस बाद इसराइल की रियासत वजूद में आ गयी। यह तारीख ज़हन में रहनी चाहिये।

अब एक तरह से महसूस होता है कि यहूदी दुनिया भर में सियासत और इक़तदार पर छाये हुए हैं, तादाद में डेढ़ करोड़ से भी कम होने के बावजूद इस वक़्त दुनिया की मईशत का बड़ा हिस्सा उनके कंट्रोल में है। लेकिन मालूम होना चाहिये कि यह सब कुछ ईसाईयों की पुश्तपनाही की वजह से है। अगर ईसाई उनकी मदद ना करें तो अरब एक दिन में उनके टुकड़े उड़ा कर रख दें। इस वक़्त पूरी अमेरिकी हुकूमत उनकी पुश्त पर है, बल्कि White Anglo Saxon Protestants यानि अमेरिका और बिरतानिया तो गोया उनके ज़ेरे खरीद हैं। दूसरे ईसाई मुमालिक भी उनके इशारों पर नाचते हैं। बहरहाल अब भी सूरते हाल यह है कि ऊपर तो ईसाई ही हैं और यह मानवी तौर पर साज़िशी अंदाज़ में नीचे से उन्हें कंट्रोल कर रहे हैं।

ثُمَّ اِلَیَّ مَرۡجِعُکُمۡ فَاَحۡکُمُ بَیۡنَکُمۡ فِیۡمَا کُنۡتُمۡ فِیۡہِ تَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۵۵﴾

"फिर मेरी तरफ़ ही तुम सबका लौटना होगा और मैं फ़ैसला कर दूँगा तुम्हारे माबैन उन बातों में जिनमें तुम इख्तिलाफ़ कर रहे थे।"

आयत 56

فَاَمَّا الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا فَاُعَذِّبُہُمۡ عَذَابًا شَدِیۡدًا فِی الدُّنۡیَا وَ الۡاٰخِرَۃِ

"तो वह लोग जो कुफ़्र की रविश इख़्तियार करेंगे मैं उन्हें अज़ाब दूँगा बहुत सख्त अज़ाब दुनिया में भी और आख़िरत में भी।"

وَ مَا لَہُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِیۡنَ ﴿۵۶﴾

"और नहीं होंगे उनके लिये कोई मददगार।"

आयत 57

وَ اَمَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

"और जो ईमान लायेंगे और नेक अमल करेंगे"

فَیُوَفِّیۡہِمۡ اُجُوۡرَہُمۡ ؕ

"तो वह उनको उनका पूरा अज्र देगा।"

देखिये यहाँ फिर وَفّٰی - یُوَفِّیْ आया है। यानि पूरा-पूरा दे देना।

وَ اللّٰہُ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۵۷﴾

"और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।"

आयत 58

ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ۵۸

"यह हम आपको पढ़ कर सुना रहे हैं आयाते इलाहिया और पुर हिकमत याद दिहानी में से।"

यहाँ भी गोया पसमंज़र में हज़रत जिब्राईल अलै० हैं जो अल्लाह की आयात और ज़िक्रे हकीम नबी अकरम ﷺ को पढ़ कर सुना रहे हैं।

आयत 59

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ

"बेशक ईसा अलै० की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम अलै० की सी है।"

خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۵۹

"उसको मिट्टी से बनाया फिर कहा हो जा तो वह हो गया।"

क़ुरान मजीद की यह आयत उन लोगों के हक़ में दलील है जो हज़रत आदम अलै० की खुसूसी तख्लीक़ (special creation) के क़ायल हैं। उनके नज़दीक हज़रत आदम अलै० का चुनाव इरतक़ा (evolution) के नतीजे में किसी नौ (species) के वजूद में आने के बाद उसके एक फ़र्द की हैसियत से नहीं हुआ बल्कि बराहे रास्त मिट्टी से तख्लीक़ किये गये। तख्लीक़े आदम अलै० के ज़िमन में यह दोनों नज़रिये मिलते हैं और दोनों के बारे में दलाइल भी मौजूद हैं। अभी यह कोई तयशुदा हक़ाइक़ नहीं हैं। हम गौरो फ़िक्र कर सकते हैं कि क़ुरान मजीद के किस मक़ाम पर किस नज़रिये के लिये कोई ताइद या तौसीक़ मिलती है। यहाँ फ़रमाया कि "अल्लाह के नज़दीक ईसा अलै. की मिसाल ऐसे ही है जैसे आदम अलै० की। उसे मिट्टी से बनाया और कहा हो जा तो वह हो गया।" तो अब अगर आदम अलै० का मामला खुसूसी तख्लीक़ का है कि बगैर बाप के और बगैर माँ के पैदा हो गये तो क्या वह "इलाह" बन गये? उनका खालिक़ तो अल्लाह है। इसी तरह हज़रत ईसा अलै० बगैर बाप के पैदा हुए तो ख़ुदा कैसे बन गये? उनकी वालिदा को हमल हुआ है, नौ महीने माँ के पेट में रहे हैं, फिर उनकी पैदाइश हुई है। तो तख्लीक़ में उनका मामला ऐजाज़ के ऐतबार से हज़रत आदम अलै० से तो कम ही रहा है। और इससे कमतर मामला हज़रत याहया अलै० का है कि इन्तहाई बुढ़ापे को पहुँचे हुए हज़रत ज़करिया अलै० और उनकी अहलिया जो सारी उम्र बाँझ रहीं, अल्लाह ने उनको औलाद दे दी। तो यह सारे मौज्ज़ात हैं, अल्लाह को इख़्तियार है जो चाहे करे। इसमें किसी की अलुहियत की दलील नहीं निकलती।

आयत 60

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۶۰

"यह हक़ है आप ﷺ के रब की तरफ़ से, तो हरगिज़ ना हो जाना शक करने वालों में से।"

यानि हज़रत मसीह अलै० के बारे में असल हक़ीक़त यही है जो क़ुरान ने वाज़ेह कर दी है, बाक़ी सब नसारा की अफ़साना तराज़ी है। और यह जो फ़रमाया: {۶۰ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ } इसमें ख़िताब बज़ाहिर रसूल अल्लाह ﷺ से है मगर रुए सुखन मुखातबीन से है।

आयत 61

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ

"तो (ऐ नबी ﷺ) जो भी इस मामले में आप ﷺ से हुज्जतबाज़ी करे इसके बाद कि आपके पास सही इल्म आ चुका है"

आप ﷺ के पास तो "अल-इल्म" आ चुका है, आप ﷺ जो बात कह रहे हैं अला वजहल बसीरा कह रहे हैं। इस सारी वज़ाहत के बाद भी अगर नसारा आप ﷺ से हुज्जतबाज़ी कर रहे हैं और बहस व मुनाज़रा से किनाराकश होने को तैयार नहीं हैं तो उनको आखरी चैलेंज दे दीजिये कि यह आप ﷺ के साथ "मुबाहला" कर लें। नजरान से नसारा का जो 70 अफ़राद पर मुश्तमिल वफ़द अबु हारसा और इब्ने अलक़मा जैसे बड़े-बड़े पादरियों की सरकरदगी में मदीना आया था, उससे दावत व तब्लीग और तज़कीर व तफ़हीम का मामला कई दिन तक चलता रहा और फिर आख़िर

में रसूल अल्लाह ﷺ से कहा गया कि अगर यह इस क़दर समझाने पर भी क़ायल नहीं होते तो इन्हें मुबाहिले की दावत दे दीजिये।

فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ

"पस आप इनसे कह दीजिये कि आओ, हम बुलाते हैं अपने बेटों को और तुम बुलाओ अपने बेटों को"

وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ

"और हम (बुलाते हैं) अपनी औरतों को और तुम (बुलाओ) अपनी औरतों को"

وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ

"और हम भी आ जाते हैं और तुम भी आ जाओ!"

ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ

"फिर हम सब मिल कर दुआ करें और लानत करें अल्लाह की उन पर कि जो झूठे हैं।"

हम सब जमा होकर अल्लाह से गिडगिड़ा कर दुआ करें और कहें कि ऐ अल्लाह! जो हममें से झूठा हो, उस पर लानत कर दे। यह मुबाहला है। और यह मुबाहला उस वक़्त होता है जबकि अहक़ाक़े हक़ हो चुके, बात पूरी वाज़ेह कर दी जाये। आपको यक़ीन हो कि मेरा मुख़ातिब बात पूरी तरह समझ गया है, सिर्फ़ ज़िद पर अड़ा हुआ है। फिर उस वक़्त यह मुबाहला आखरी शय होती है ताकि हक़ का हक़ होना ज़ाहिर हो जाये। अगर तो मुखालिफ़ को अपने मौक़फ़ की सदाक़त का यक़ीन है तो वह मुबाहला का चैलेंज क़ुबूल कर लेगा, और अगर उसके दिल में चोर है और वह जानता है कि हक़ बात तो यही है जो वाज़ेह हो चुकी है तो फिर वह मुबाहला से राहे फ़रार इख़्तियार करेगा। चुनाँचे यही हुआ। मुबाहला की दावत सुन कर वफ़द नजरान ने मोहलत माँगी कि हम मशवरा करके जवाब देंगे। मजलिसे मशावरत में उनके बड़ों ने होशमन्दी का मुज़ाहिरा करते हुए उनसे कहा: "ऐ गिरोह नसारा! तुम यक़ीनन दिलों में समझ चुके हो कि मुहम्मद ﷺ नबी मुरसल हैं और हज़रत मसीह अलै० के मुताल्लिक़ उन्होंने साफ़-साफ़ फ़ैसलाकुन बातें कही हैं। तुमको मालूम है कि अल्लाह ने बनी इस्माइल में नबी भेजने का वादा किया था। कुछ बईद नहीं यह वही नबी हों। पस एक नबी से मुबाहला व मुलाअना का नतीजा किसी क़ौम के हक़ में यही निकल सकता है कि उनका कोई छोटा-बड़ा हलाकत या अज़ाबे इलाही से ना बचे और पैगम्बर की लानत का असर नस्लों तक पहुँच कर रहे। बेहतर यही है कि हम इनसे सुलह करके अपनी बस्तियों की तरफ़ रवाना हो जायें, क्योंकि सारे अरब से लड़ाई मोल लेने की ताक़त हममें नहीं। चुनाँचे उन्होंने मुक़ाबला छोड़ कर सालाना जिज़या देना क़ुबूल किया और सुलह करके वापस चले गये।

आयत 62

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ

"यक़ीनन यही बिल्कुल सही सरगुज़श्त है।"

وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۭ

"और नहीं है कोई मअबूद अल्लाह के सिवा।"

وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

"और यक़ीनन अल्लाह तआला ही ज़बरदस्त और कमाले हिकमत वाला है।"

आयत 63

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ

"फिर अगर वह पीठ मोड़ लें तो अल्लाह तआला ख़ूब जानता है मुफ्सिदों को।"

यहाँ आकर इस सूरह मुबारका के निस्फ़े अव्वल का पहला और दूसरा हिस्सा मुकम्मल हो गया, जो 32+31=63 आयात पर मुश्तमिल है।

आयात 64 से 71 तक

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـــًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا

اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ۝٦٤ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ
التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٥ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا
لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
۝٦٦ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ۝٦٧ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٨ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا
يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٦٩ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝٧٠ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ
وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٧١

सूरह आले इमरान के निस्फ़े अव्वल का तीसरा हिस्सा 38 आयात (64 से 101) पर मुश्तमिल है और यह सूरतुल बक़रह के निस्फ़े अव्वल के तीसरे हिस्से (रुकूअ 15 से 18) से बहुत मुशाबेह है जिनमें हज़रत इब्राहीम अलै० का ज़िक्र, बैतुल्लाह का ज़िक्र, अहले किताब को दावते ईमान और तहवीले क़िब्ला का हुक्म है। कम व बेश वही कैफ़ियत यहाँ मिलती है। फ़रमाया:

.

आयत 64

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ

"(ऐ नबी ﷺ) कह दीजिये: ऐ अहले किताब! आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बिल्कुल बराबर है"

यहाँ "अहले किताब" के सीगा-ए-ख़िताब में यहूद व नसारा दोनों को जमा कर लिया गया, जबकि सूरतुल बक़रह में "يٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ" के सीगा-ए-ख़िताब में ज़्यादातर गुफ्तगू यहूद से थी। यहाँ अभी तक हज़रत ईसा अलै० का तज़किरा था और गोया सिर्फ़ नस्रानियों से ख़िताब था, अब अहले किताब दोनों के दोनों मुखातिब हैं कि एक ऐसी बात की तरफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे माबैन यक्साँ मुश्तरक और मुत्तफ़िक़ अलै है। वह क्या है?

اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ

"कि हम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी ना करें"

وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا

"और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक ना ठहरायें"

وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ

"और ना हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा रब ठहराये।"

यहूद व नसारा ने अपने अहबार व रुहबान का यह इख़्तियार तस्लीम कर लिया था कि वह जिस चीज़ को चाहें हलाल क़रार दे दें और जिस चीज़ को चाहें हराम ठहरा दें। यह गोया उनको रब मान लेने के मुतरादिफ़ है। जैसा कि सूरातुत्तौबा में फ़रमाया गया: {اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ} (आयत:31)। मशहूर सखी हातिम ताई के बेटे अदी बिन हातिम रज़ि० (जो पहले ईसाई थे) एक मरतबा रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि क़ुरान कहता है: "उन्होंने अपने अहबार व रुहबान को अल्लाह के सिवा अपना रब बना लिया।" हालाँकि हमने तो उन्हें रब का दर्जा नहीं दिया। इस पर रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

أَمَا اِنَّهُمْ لَمْ يَكُوْنُوْا يَعْبُدُوْنَهُمْ وَ لٰكِنَّهُمْ اِذَا اَحَلُّوْا لَهُمْ شَيْئًا اسْتَحَلُّوْهُ وَ اِذَا حَرَّمُوْا عَلَيْهِمْ شَيْئًا حَرَّمُوْهُ

"वह उनकी इबादत तो नहीं करते थे, लेकिन जब वह उनके लिये किसी शय को हलाल क़रार देते तो वह उसे हलाल मान लेते और जब वह किसी शय को हराम क़रार दे देते तो वह उसे हराम मान लेते।"

चुनाँचे हल्त व हुरमत का इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह का है, और जो कोई इस हक़ को इख़्तियार करता है वह गोया रब होने का दावा करता है। अब यह सारी क़ानून साज़ी जो शरीअत के खिलाफ़ की जा रही है यह हक़ीक़त के ऐतबार से उन लोगों की जानिब से खुदाई का दावा है जो इन क़ानून साज़ इदारों में बैठे हुए हैं, और जो वहाँ पहुँचने के लिये बेताब होते हैं और उसके लिये करोड़ों रुपया खर्च करते हैं। अगर तो पहले से यह तय हो जाये कि कोई क़ानून साज़ी किताब व सुन्नत के मनाफ़ी नहीं हो सकती तो फिर आप जायें और वहाँ जाकर क़ुरान व सुन्नत के दायरे के अन्दर-अन्दर क़ानून साज़ी कीजिये। लेकिन अगर यह तहदीद नहीं है और महज़ अक्सरियत की बुनियाद पर क़ानून साज़ी हो रही है तो यह शिर्क है।

अहले किताब से कहा गया कि तौहीद हमारे और तुम्हारे दरमियान मुश्तरक अक़ीदा है। इस तरह उन्हें गौर-ओ-फ़िक्र की दावत दी गयी कि वह मवाज़ ना करें कि इस क़द्रे मुश्तरक के मैयार पर इस्लाम पूरा उतरता है या यहूदियत और नस्रानियत?

"फिर अगर वह मुँह मोड़ लें तो (ऐ मुस्लमानों!) तुम कहो आप लोग गवाह रहें कि हम तो मुस्लमान हैं।"

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُوۡلُوا اشۡهَدُوۡا بِاَنَّا مُسۡلِمُوۡنَ ﴿۶۴﴾

हमने तो अल्लाह की इताअत क़ुबूल कर ली है और हम मुतज़क्किर बाला तीनों बातों पर क़ायम रहेंगे। आपको अगर यह पसंद नहीं तो आपकी मर्ज़ी!

आयत 65

"ऐ किताब वालों! तुम इब्राहीम अलै० के बारे में क्यों झगड़ते हो हालाँकि तौरात और इन्जील नहीं नाज़िल की गयी मगर उसके बाद?"

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوۡنَ فِىۡۤ اِبۡرٰهِيۡمَ وَمَاۤ اُنۡزِلَتِ التَّوۡرٰىةُ وَالۡاِنۡجِيۡلُ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ

यह बात तुम भी जानते और मानते हो कि तौरात भी हज़रत इब्राहीम अलै० के बाद नाज़िल हुई और इन्जील भी। यहूदियत भी हज़रत इब्राहीम अलै० के बाद की पैदावार है और नस्रानियत भी। वह तो मुस्लमान थे, अल्लाह के फ़रमाबरदार थे, यहूदी या नसरानी तो नहीं थे!

"तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?"

اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۵﴾

आयत 66

"देखो तुम लोग अब तक जो भी बहस मुबाहिसा करते रहे हो वह उन चीज़ों के बारे में है जिनका तुम्हें कुछ इल्म है"

هٰۤاَنۡتُمۡ هٰٓؤُلَآءِ حَاجَجۡتُمۡ فِيۡمَا لَكُمۡ بِهٖ عِلۡمٌ

"तो अब तुम ऐसी चीज़ों के ज़िमन में हुज्जत बाज़ी क्यों करते हो जिनके बारे में तुम्हारे पास कुछ भी इल्म नहीं है?"

فَلِمَ تُحَآجُّوۡنَ فِيۡمَا لَيۡسَ لَكُمۡ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ

इन चीज़ों के बारे में तो तुम्हारे पास कोई दलील नहीं, कोई इल्मी बुनियाद नहीं।

"अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।"

وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶۶﴾

आयत 67

"(तुम्हें भी अच्छी तरह मालूम है कि) इब्राहीम अलै० ना तो यहूदी थे ना नसरानी"

مَا كَانَ اِبۡرٰهِيۡمُ يَهُوۡدِيًّا وَّلَا نَصۡرَانِيًّا

"बल्कि वह तो बिल्कुल यक्सु होकर अल्लाह के फ़रमाबरदार थे।"

وَّلٰكِنۡ كَانَ حَنِيۡفًا مُّسۡلِمًا ؕ

"और ना वह मुशरिकों में से थे।"

وَمَا كَانَ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿۶۷﴾

नज़ूले क़ुरान के वक़्त अरबों में जो तीन तबक़ात मौजूद थे, यानि मुशरिकीने अरब, यहूदी और नसरानी, वह तीनों अपने आप को हज़रत इब्राहीम अलै० से मंसूब करते थे। मुशरिकीने अरब हज़रत इस्माइल अलै० की नस्ल से होने की निस्बत से कहते थे कि हमारा रिश्ता इब्राहीम अलै० से है। इसी तरह यहूदी और नसरानी भी मिल्लते इब्राहिमी अलै० होने के दावेदार थे। लेकिन क़ुरान ने दो टूक अंदाज़ में फ़रमाया कि इब्राहीम अलै० ना तो यहूदी थी, ना नसरानी थे और ना ही मुशरिकीन में से थे, बल्कि मुस्लमान थे।

आयत 68

اِنَّ اَوۡلَى النَّاسِ بِاِبۡرٰهِيۡمَ لَلَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡهُ

"यक़ीनन इब्राहीम अलै० से सबसे ज़्यादा क़ुरबत रखने वाले लोग तो वह हैं जिन्होंने उनकी पैरवी की"

وَهٰذَا النَّبِىُّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ؕ

"और अब यह नबी (हज़रत मुहम्मद ﷺ) और जो इन पर ईमान लाये (इस निस्बत के ज़्यादा हक़दार हैं)।"

وَاللّٰهُ وَلِىُّ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۶۸﴾

"और अल्लाह इन मोमिनों का साथी है।"

वह अहले ईमान का हामी व मददगार है, पुश्तपनाह है, हिमायती है।

आयत 69

وَدَّتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ لَوۡ يُضِلُّوۡنَكُمۡ ؕ

"अहले किताब का एक गिरोह आरज़ूमन्द है कि (ऐ मुस्लमानों!) तुम्हें किसी तरह गुमराह कर दें।"

وَمَا يُضِلُّوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۶۹﴾

"और वह नहीं गुमराह कर सकेंगे मगर अपने आप को, लेकिन उन्हें इसका शऊर नहीं है।"

आयत 70

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تَكۡفُرُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنۡتُمۡ تَشۡهَدُوۡنَ ﴿۷۰﴾

"ऐ अहले किताब! तुम क्यों अल्लाह तआला की आयात का इन्कार करते हो जबकि तुम ख़ुद गवाह हो?"

तुम क़ुरान और साहिबे क़ुरान ﷺ की हक़्क़ानियत के क़ायल हो, उनको पहचान चुके हो, दिल में जान चुके हो!

आयत 71

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تَلۡبِسُوۡنَ الۡحَقَّ بِالۡبَاطِلِ وَتَكۡتُمُوۡنَ الۡحَقَّ وَاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۷۱﴾

"ऐ अहले किताब! तुम क्यों हक़ के ऊपर बातिल का मलमा (पोलिश) चढाते हो और हक़ को छुपाते हो जानते-बूझते?"

सूरतुल बक़रह के पाँचवे रुकूअ (आयत:42) में यह मज़मून बाअल्फ़ाज़ आया था: {وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ} "يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ" के सीगा-ए-ख़िताब के साथ इन आयात में उसी तरह का दाईयाना अंदाज़ है जो सूरतुल बक़रह के पाँचवे रुकूअ में है।

आयात 72 से 80 तक

وَقَالَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اٰمِنُوۡا بِالَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَجۡهَ النَّهَارِ وَاكۡفُرُوۡۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ﴿۷۲﴾ وَلَا تُؤۡمِنُوۡۤا اِلَّا لِمَنۡ تَبِعَ دِيۡنَكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنۡ يُّؤۡتٰۤى اَحَدٌ مِّثۡلَ مَاۤ اُوۡتِيۡتُمۡ اَوۡ يُحَآجُّوۡكُمۡ عِنۡدَ رَبِّكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡفَضۡلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۷۳﴾ ۙ يَّخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ﴿۷۴﴾ وَمِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مَنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ بِقِنۡطَارٍ

يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ
قَآئِمًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ
﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ
الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ
وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ
الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ
كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ
تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ۗ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾

आयत 72

وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ

"और अहले किताब के एक गिरोह ने कहा कि इन अहले ईमान पर जो चीज़ नाज़िल की गयी है, उस पर ईमान लाओ सुबह के वक़्त और उसका इन्कार कर दो दिन के आख़िर में"

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾

"शायद (इस तदबीर से) उनमें से भी कुछ फिर जायें।"

यहाँ यहूद की एक बहुत बड़ी साज़िश का ज़िक्र हो रहा है जो उनके एक गिरोह ने मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की दावत को नाकाम बनाने के लिये मुस्लमानों के खिलाफ़ तैयार की थी। इस साज़िश का पसमंज़र यह था कि दुनिया के सामने यह बात आ चुकी थी कि जो कोई एक मर्तबा दायरा-ए-इस्लाम में दाख़िल हो जाता था वह वापस नहीं आता था, चाहे उसे बदतरीन तशद्दुद का निशाना बनाया जाये, भूखा-प्यासा रखा जाये, हत्ता कि जान से मार दिया जाये। इस तरह इस्लाम की एक धाक बैठ गयी थी कि इसके अन्दर कोई ऐसी कशिश, ऐसी हक्क़ानियत और ऐसी मिठास है कि आदमी एक मर्तबा इस्लाम क़ुबूल कर लेने के बाद बड़ी से बड़ी क़ुरबानी देने को तैयार हो जाता है, लेकिन इस्लाम से दस्तबरदार होने (त्याग करने) को तैयार नहीं होता। इस्लाम की यह जो साख बन गयी थी इसको तोड़ने का तरीक़ा उन्होंने यह सोचा कि ऐसा करो सुबह के वक़्त ऐलान करो कि हम ईमान ले आये। सारा दिन मुहम्मद (ﷺ) की सोहबत में रहो और शाम को कह दो हमने देख लिया, यहाँ कुछ नहीं है, यह दूर के ढोल सुहाने हैं, हम तो अपने कुफ़्र में वापस जा रहे हैं, हमें यहाँ से कुछ नहीं मिला। इससे मुस्लमानों में से कुछ लोग तो समझेंगे कि इन्होंने साज़िश की होगी, लेकिन यक़ीनन कुछ लोग यह भी समझेंगे कि भई बड़े मुत्तक़ी लोग थे, मुत्ला श्याने हक़ (हक़ को चाहने वाले) थे, बड़े जज़्बे और बड़ी शान के साथ इन्होंने कलमा पढ़ा था और ईमान क़ुबूल किया था, फिर सारा दिन रसूल अल्लाह ﷺ की महफ़िल में बैठे रहे हैं, आख़िर इन्होंने कुछ ना कुछ तो देखा ही होगा जो वापस पलट गये। इस अंदाज़ से आम लोगों के दिलों में वस्वसा अंदाज़ी करना बहुत आसान काम है। चुनाँचे उन्होंने मुनाफ़िक़ाना शरारत की यह साज़िश तैयार की। इस्लाम में क़त्ले मुर्तद की सज़ा का ताल्लुक़ इसी से जुड़ता है। इस्लामी रियासत में इस तरह की साज़िशों का रास्ता रोकने के लिये यह सज़ा तजवीज़ की गयी है कि जो शख्स ईमान लाने के बाद फिर कुफ़्र में जायेगा तो क़त्ल कर दिया जायेगा, क्योंकि इस्लामी रियासत एक नज़रियाती (ideological) रियासत है, ईमान और इस्लाम ही तो उसकी बुनियादें हैं। चुनाँचे उसकी बुनियादों को कमज़ोर करने और उसकी जड़ों को खोदने वाली जो चीज़ भी हो सकती है उसका सद्दे बाब पूरी क़ुव्वत से करना चाहिये।

आयत 73

"और देखो किसी की बात ना मानना मगर उसी की जो तुम्हारे दीन की पैरवी करे।" وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ

यानि इस साज़िशी गिरोह को यह ख़तरा भी था कि अगर हम जाकर चंद घंटे अल्लाह के रसूल ﷺ के पास गुज़ारेंगे तो कहीं ऐसा ना हो कि हममें से वाक़ई किसी को इंशराहे सद्र हो जाये और वह दिल से ईमान ले आये। लिहाज़ा वह तय करके गये कि देखो, उन पर ईमान नहीं लाना है, सिर्फ़ ईमान का ऐलान करना है। क़ुरान मजीद में यह शऊरी निफ़ाक़ की मिसाल है। यानि जो वक़्त उन्होंने अपने ईमान का ऐलान करने के बाद मुस्लमानों के साथ गुज़ारा उसमें वह क़ानूनन तो मुस्लमान थे, अगर इस दौरान कोई उनमें से मर जाता तो उसकी नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ी जाती, लेकिन खुद उन्हें मालूम था कि हम मुस्लमान नहीं है। यह शऊरी निफ़ाक़ है, जबकि एक गैर शऊरी निफ़ाक़ है कि अन्दर ईमान ख़त्म हो चुका होता है मगर इन्सान समझता है कि मैं तो मोमिन हूँ, हालाँकि उसका किरदार और अमल मुनाफ़िक़ाना है और उसके अन्दर से ईमान की पूंजी ख़त्म हो चुकी है, जैसे दीमक किसी शहतीर (लकड़ी की कड़ी) को चट कर चुकी होती है लेकिन उसके ऊपर एक पर्दा (veneer) बहरहाल बरक़रार रहता है। शऊरी निफ़ाक़ और गैर शऊरी निफ़ाक़ के इस फ़र्क़ को समझ लेना चाहिये।

"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कह दीजिये कि असल हिदायत तो अल्लाह ही की हिदायत है" قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ

आगे यहूद के साज़िशी टोले के क़ौल का तसल्सुल है कि देखो ईमान मत लाना!

"मबादा किसी को वह शय दे दी जाये जो तुम्हें दी गयी थी" اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ

यानि यह रिसालत व नबुवत और मज़हबी पेशवाई तो हमारी मीरास थी, हम अगर इन पर ईमान ले आयेंगे तो वह चीज़ हमसे इनको मुन्तक़िल हो जायेगी। लिहाज़ा मानना तो हरगिज़ नहीं है, लेकिन किसी तरह से इनकी हवा उखेड़ने के लिये हमें यह काम करना है।

"या तुम्हारे खिलाफ़ हुज्जत क़ायम करें तुम्हारे परवरदिगार के हुज़ूर।" اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ

"कह दीजिये कि फ़ज़ल तो कुल का कुल अल्लाह के हाथ में है" قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ

"वह जिसको चाहता है दे देता है।" يُّؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ

उसने दो हज़ार बरस तक तुम्हें एक मंसब पर फाइज़ रखा, अब तुम उस मंसब के नाअहल साबित हो चुके हो, लिहाज़ा तुम्हें माज़ूल कर दिया गया है, और अब एक नयी उम्मत (उम्मते मुहम्मद ﷺ) को उस मक़ाम पर फाइज़ कर दिया गया है।

"और अल्लाह बहुत वुसअत वाला और जानने वाला है।" وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ

आयत 74

"वह मुख्तस (ख़ास) कर लेता है अपनी रहमत के लिये जिसको चाहता है।" يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

"और अल्लाह बड़े फ़ज़ल का मालिक है।" وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

अगली आयत में हिकमते दावत के ऐतबार से बहुत अहम नुक्ता मौजूद है कि बुरे से बुरे गिरोह के अन्दर भी कहीं ना कहीं कोई अच्छे अफ़राद लाज़िमन होते हैं। दाई के लिये ज़रूरी है कि वह उनका तज़किरा भी करता

रहे कि उनमें अच्छे लोग भी हैं, ताकि ऐसे लोगों के दिलों के अन्दर नरमी पैदा हो। इसी तरह फ़र्द का मामला है कि बुरे से बुरे आदमी के अन्दर कोई अच्छाई भी मौजूद होती है। आप अगर उसे हक़ की दावत दे रहे हैं तो उसमें जो अच्छाई है उसको मानिये, ताकि उसे मालूम हो कि इसे मुझसे कोई दुश्मनी नहीं है, मेरी जो बात वाक़ई अच्छी है उसको यह तस्लीम कर रहा है, लेकिन जो बात गलत है उसको रद्द कर रहा है। इस तरह उसके दिल में कुशादगी पैदा होगी और वह आपकी बात सुनने पर आमादा होगा। फ़रमाया:

आयत 75

وَمِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مَنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ بِقِنۡطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيۡكَ‌ۚ

"और अहले किताब में से ऐसे लोग भी हैं कि अगर तुम उनके पास अमानत रखवा दो ढ़ेरो माल तो वह तुम्हें पूरा-पूरा वापस लौटा देंगे।"

यानि उनमें अमानतदार लोग भी मौजूद हैं।

وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ بِدِيۡنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيۡكَ

"और उनमें ऐसे भी हैं कि अगर तुम उनके पास एक दीनार भी अमानत रखवा दो तो वह तुम्हें वापस नहीं करेंगे"

اِلَّا مَا دُمۡتَ عَلَيۡهِ قَآئِمًا‌ؕ

"मगर जब तक कि तुम उसके सर पर खड़े रहो।"

अगर तुम उसके सर पर सवार हो जाओ और उसको अदायगी पर मजबूर कर दो तब तो तुम्हारी अमानत वापस कर देगा, वरना नहीं देगा। उनमें से अक्सर का किरदार तो यही है, लेकिन अहले किताब में से जो थोड़े बहुत दयानतदार थे उनकी अच्छाई का ज़िक्र भी कर दिया गया। बिलफ़अल इस क़िस्म के किरदार के हामिल लोग ईसाईयों में तो मौजूद थे, यहूदियों में ना होने के बराबर थे, लेकिन "अहले किताब" के उन्वान से उनका ज़िक्र मुश्तरक तौर पर कर दिया गया। आगे ख़ास तौर पर यहूद का तज़किरा है कि उनमें यह बद-दियानती, बेईमानी और खयानत क्यों आ गयी है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَالُوۡا لَيۡسَ عَلَيۡنَا فِى الۡاُمِّيّٖنَ سَبِيۡلٌ‌ۚ

"यह इसलिये कि वह कहते हैं कि इन उम्मियीन के मामले में हम पर कोई मलामत नहीं है।"

यहूदियों का यह अक़ीदा तौरात में नहीं है, लेकिन उनकी असल मज़हबी किताब का दर्जा तौरात की बजाये तालमूद को हासिल है। यूँ समझिये कि तौरात तो उनके लिये "उम्मुल किताब" है, जबकि उनकी सारी शरीअत, क़वानीन वज़ाबत (मापदंड) और इबादात की सारी तफ़ासील तालमूद में हैं। और तालमूद में यह बात मौजूद है कि यहूदी के लिये यहूदी से झूठ बोलना हराम है, लेकिन गैर यहूदी से जैसे चाहो झूठ बोलो। यहूदी के लिये किसी यहूदी का माल हड़प करना हराम और नाजायज़ है, लेकिन गैर यहूदी का माल जिस तरह चाहो, धोखा, फ़रेब और बद-दियानती से हड़प करो। हम पर उसका कोई मुआखज़ा नहीं है। उनके नज़दीक इंसानियत का शर्फ़ सिर्फ़ यहूदियों को हासिल है और गैर यहूदी इन्सान हैं ही नहीं, यह असल में इन्सान नुमा हैवान (Goyems & Gentiles) हैं और इनसे फ़ायदा उठाना हमारा हक़ है, जैसा कि घोड़े को तांगे में जोतना और बेल को हल के अन्दर जोत लेना इन्सान का हक़ है। यहूदी यह अक़ीदा रखते हैं कि इन इन्सान नुमा हैवानों से हम जिस तरह चाहें लूट-खसोट का मामला करें और जिस तरह चाहें इन पर ज़ुल्मो-सितम करें, इस पर हमारी कोई पकड़ नहीं होगी, कोई मुआखज़ा नहीं होगा। अमेरिका में इस पर एक मूवी भी बनाई गयी है: "The Other Side of Israel" यह दस्तावेज़ी फिल्म वहाँ के ईसाईयों ने बनाई है और इसमें एक शख्स ने एक यहूदी कुतुबखाने में जाकर वहाँ उनकी किताबें निकाल-निकाल कर उनके हवाले से यहूदियों के नज़रियात को वाज़ेह किया है और यहूदियत का असल चेहरा दुनिया को दिखाया है। (अब इसी उन्वान से किताब भी शाया [पब्लिश] हो चुकी है।)

"और वह झूठ घड कर अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर रहे हैं हालाँकि वह जानते हैं (कि अल्लाह ने ऐसी कोई बात नहीं फ़रमायी)।"

وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

आयत 76

"क्यों नहीं! जो कोई भी अल्लाह तआला से किये हुए अपने अहद को पूरा करेगा और तक़वा की रविश इख़्तियार करेगा तो बेशक अल्लाह तआला को अहले तक़वा पसंद हैं।"

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾

आयत 77

"यक़ीनन वह लोग जो अल्लाह तआला के अहद और अपनी क़समों को फ़रोख्त करते हैं हक़ीर सी क़ीमत पर"

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا

यानि जब वह देखते हैं कि लोग हमारी बात में कुछ शक कर रहे हैं तो ख़ुदा की क़सम खा कर कहते हैं कि ऐसा ही है।

"यह वह लोग हैं कि जिनके लिये कोई हिस्सा नहीं है आख़िरत में"

اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ

"और ना अल्लाह उनसे कलाम करेगा"

وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ

"और ना उनकी तरफ़ निगाह करेगा क़यामत के दिन"

وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

"और ना उनको पाक करेगा"

وَلَا يُزَكِّيْهِمْ

"और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾

यह मज़मून भी तक़रीबन पूरा सूरतुल बक़रह (आयत 174) में आ चुका है।

आयत 78

"और उनमें एक गिरोह ऐसा भी है जो अपनी ज़बान को तोड़ता-मरोड़ता है किताब को पढ़ते हुए, ताकि तुम समझो कि (जो कुछ वह पढ़ रहे हैं) वह किताब में से है, हालाँकि वह किताब में से नहीं होता।"

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ

उलमाए यहूद अल्फ़ाज़ को ज़रा सा इधर से उधर मरोड़ कर और मायने पैदा कर लेते थे। हम सूरतुल बक़रह में पढ़ चुके हैं कि यहूद से कहा गया "حِطَّةٌ" कहो तो "حِنْطَةٌ" कहने लगे। यानि बजाय इसके कि "ऐ अल्लाह हमारे गुनाह झाड़ दे" उन्होंने कहना शुरू कर दिया "हमें गेहूँ दे।" उन्हें तलक़ीन की गयी कि तुम कहो: "سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا" मगर उन्होंने कहा: "سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا"। इसी तरह का मामला वह तौरात को पढ़ते हुए भी करते थे। जब वह देखते कि जो साइल फ़तवा माँगने आया है उसकी पसंद कुछ और है जबकि तौरात का हुक्म कुछ और है तो वह अल्फ़ाज़ को तोड़-मरोड़ कर पढ़ देते कि देखो यह किताब के अन्दर मौजूद है, और इस तरह साइल को खुश करके उससे कुछ रक़म हासिल कर लेते।

"और वह कहते हैं यह अल्लाह की तरफ़ से है जबकि वह अल्लाह की तरफ़ से नहीं होता।"

وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

हम यह मज़मून सूरतुल बक़रह (आयत 79) में भी पढ़ चुके हैं।

"और वह अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं जानते-बूझते।"

وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٩﴾

आयत 79

"किसी इन्सान के शायाने-शान नहीं है कि अल्लाह तआला तो उसको किताब, हिकमत और नबुवत अता फ़रमाये"

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ

"फिर वह लोगों से कहने लगे कि मेरे बन्दे बन जाओ अल्लाह को छोड़ कर"

ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

यह अब नस्रानियों की तरफ़ इशारा हो रहा है कि हमने तुम्हारी तरफ़ रसूल भेजे, फिर ईसा अलै० इब्ने मरयम को भेजा, उन्हें किताब दी, हिकमत दी, नबुवत दी, मौज्ज़ात दिये। और इसका तो कोई इम्कान नहीं कि वह अलै० कहते कि मुझे अल्लाह के सिवा अपना मअबूद बना लो!

"बल्कि (वह तो यही दावत देगा कि) अल्लाह वाले बन जाओ इस वजह से कि तुम लोगों को किताब की तालीम देते हो और तुम खुद भी उसको पढ़ते हो।"

وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾

किताबे इलाही की तालीम व तअल्लम का यही तक़ाज़ा है। दीन का सीखना, सिखाना, क़ुरान का पढ़ना-पढ़ाना और हदीस व फ़िक़ह का दर्स व तदरीस इसलिये होना चाहिये कि लोगों को अल्लाह वाले बनाया जाये, ना यह कि अपने बन्दे बना कर और उनसे नज़राने वसूल करके उनका इस्तेहसाल किया जाये।

आयत 80

"और ना कभी वह तुम्हें इस बात का हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों को और अम्बिया को रब बना लो।"

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا

मुशरिकीने मक्का ने फ़रिश्तों को रब बनाया और उनके नाम पर लात, मनात और उज्ज़ा जैसी मूर्तियाँ बना लीं, जबकि नसारा ने अल्लाह के नबी हज़रत ईसा अलै० को अपना रब बना लिया।

"तो क्या वह तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा इसके बाद कि तुम मुस्लिम हो चुके हो?"

اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾

अल्लाह का वह बंदा जिसे ने किताब, हिकमत व नबुवत अता की हो, क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म दे सकता है जबकि तुम फ़रमाबरदारी इख़्तियार कर चुके हो?

आयात 81 से 91 तक

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ

جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا
يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
وَاَصْلَحُوْا ۗ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا
كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا
وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۗ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾

आयत 81

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ

"और याद करो जबकि अल्लाह ने तमाम अम्बिया से एक अहद लिया था कि"

لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ
جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۗ

"जो कुछ भी मैं तुम्हें किताब और हिकमत अता करूँ, फिर तुम्हारे पास आये कोई और रसूल जो तस्दीक़ करता हो उसकी जो तुम्हारे पास (पहले से) मौजूद है तो तुम्हें लाज़िमन उस पर ईमान लाना होगा और उसकी मदद करनी होगी।"

इसलिये कि अम्बिया और रुसुल का एक तवील सिलसिला चल रहा था, और हर नबी ने आइन्दा आने वाले नबी ﷺ की पेशनगोई की है और अपनी उम्मत को उसका साथ देने की हिदायत की है। और यह भी ख़त्मे नबुवत के बारे में बहुत बड़ी दलील है कि ऐसी किसी शय का ज़िक्र क़ुरान या हदीस में नहीं है कि मुहम्मदुन रसूल अल्लाह ﷺ से ऐसा कोई अहद लिया गया हो या आप ﷺ ने अपनी उम्मत को किसी बाद में आने वाले नबी की ख़बर देकर उस पर ईमान लाने की हिदायत फ़रमायी हो, बल्कि इसके बरअक्स क़ुरान में सराहत के साथ आँहुज़ूर ﷺ को खातमुन्न नबिय्यीन फ़रमाया गया है और मुतअद्दिद अहादीस में आप ﷺ ने फ़रमाया है कि आप ﷺ के बाद कोई नबी नहीं आयेगा। हज़रत मसीह अलै० मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की बशारत देकर गये हैं और दीगर अम्बिया की किताबों में भी बशारतें मौजूद हैं। इन्जील बरनबास का तो कोई सफ़ा खाली नहीं है जिसमें आँहुज़ूर ﷺ की बशारत ना हो, लेकिन बाक़ी इन्जीलों में से यह बशारतें निकाल दी गयी हैं।

قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ
اِصْرِىْ ۗ

"अल्लाह ने फ़रमाया क्या तुमने इक़रार कर लिया है और इस पर मेरी डाली हुई ज़िम्मेदारी क़ुबूल कर ली है?"

قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ۗ

"उन्होंने कहा हाँ हमने इक़रार किया।"

अम्बिया व रुसुल से यह अहद आलमे अरवाह में लिया गया। जिस तरह तमाम अरवाहे इंसानिया से "अहदे अलस्त" लिया गया था {اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۚ قَالُوْا بَلٰى ۛ} इसी तरह जिन्हें नबुवत से सरफ़राज़ होना था उनकी अरवाह से अल्लाह तआला ने यह इज़ाफ़ी अहद लिया कि मैं तुम्हें नबी बना कर भेजूँगा, तुम अपनी उम्मत को यह हिदायत करके जाना कि तुम्हारे बाद जो नबी भी आये उस पर ईमान लाना और उसकी मदद और नुसरत करना।

قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾

"अल्लाह तआला ने कहा अच्छा अब तुम भी गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ।

आयत 82

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

"तो जिसने भी मुँह मोड़ लिया इसके बाद तो यक़ीनन वही लोग सरकश (और नाहंजार) हैं।"

आयत 83

"तो क्या यह अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं?" اَفَغَيۡرَ دِيۡنِ اللّٰهِ يَبۡغُوۡنَ

"जबकि आसमानों और ज़मीन में जो भी है वह अल्लाह के सामने सरे तस्लीम ख़म किये हुए है, चाहे ख़ुशी से और चाहे मजबूरन, और उसी की तरफ़ उन सबको लौटा दिया जायेगा।" وَلَهٗۤ اَسۡلَمَ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّكَرۡهًا وَّاِلَيۡهِ يُرۡجَعُوۡنَ ﴿۸۳﴾

आयत 84

"कहिये हम ईमान लाये अल्लाह पर और जो नाज़िल किया गया हम पर" قُلۡ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡنَا

याद रहे कि सूरतुल बक़रह की आयत 136 में थोड़े से लफ्ज़ी फ़र्क़ के साथ यही मज़मून बयान हुआ है।

"और जो कुछ नाज़िल किया गया इब्राहीम अलै०, इस्माइल अलै०, इसहाक़ अलै०, याक़ूब अलै० और उनकी औलाद पर" وَمَاۤ اُنۡزِلَ عَلٰۤى اِبۡرٰهِيۡمَ وَاِسۡمٰعِيۡلَ وَاِسۡحٰقَ وَيَعۡقُوۡبَ وَالۡاَسۡبَاطِ

"और जो भी मूसा अलै०, ईसा अलै० और तमाम अम्बिया अलै० को दिया गया उनके रब की तरफ़ से।" وَمَاۤ اُوۡتِىَ مُوۡسٰى وَعِيۡسٰى وَالنَّبِيُّوۡنَ مِنۡ رَّبِّهِمۡ ۚ

"हम उनमें से किसी एक के माबैन भी कोई तफ़रीक़ नहीं करते, और हम तो अल्लाह ही के फ़रमाबरदार हैं।" لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ اَحَدٍ مِّنۡهُمۡ ۟ وَنَحۡنُ لَهٗ مُسۡلِمُوۡنَ ﴿۸۴﴾

आयत 85

"और जो कोई इस्लाम के सिवा कोई और दीन इख़्तियार करना चाहेगा तो वह उसकी जानिब से क़ुबूल नहीं किया जायेगा।" وَمَنۡ يَّبۡتَغِ غَيۡرَ الۡاِسۡلَامِ دِيۡنًا فَلَنۡ يُّقۡبَلَ مِنۡهُ ۚ

"और फिर आख़िरत में वह खसारा पाने वालों में से होकर रहेगा।" وَهُوَ فِى الۡاٰخِرَةِ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۸۵﴾

आयत 86

"कैसे हिदायत देगा अल्लाह उन लोगों को जो ईमान के बाद काफ़िर हो गये?" كَيۡفَ يَهۡدِى اللّٰهُ قَوۡمًا كَفَرُوۡا بَعۡدَ اِيۡمَانِهِمۡ

यानि उनके दिल ईमान ले आये थे, उन पर हक़ीक़त मुन्कशिफ़ हो गयी थी, लेकिन दुनियवी मसलहतें आड़े आ गयीं और ज़बान से इन्कार कर दिया। जैसे सूरतुल नमल में हम पढ़ेंगे: { وَجَحَدُوۡا بِهَا وَاسۡتَيۡقَنَتۡهَاۤ اَنۡفُسُهُمۡ ظُلۡمًا وَّعُلُوًّا } (आयत:14) "उन्होंने ज़ुल्म और तकब्बुर के मारे उन मौज्ज़ात का इन्कार किया हालाँकि उनके दिल उनके क़ायल हो चुके थे।"

"और उन्होंने गवाही दी कि यह रसूल हक़ हैं" وَشَهِدُوۡۤا اَنَّ الرَّسُوۡلَ حَقٌّ

अहले किताब जब आपस में बातें करते थे तो कहते थे कि यह वाक़िअतन नबी आखिरुज्ज़मान हैं जो हमारी किताबों में बयान करदा पेशनगोइयों का मिस्दाक़ हैं। चुनाँचे रिवायात में आता है कि अलक़मा के दो बेटे अबु हारसा और कर्ज़ जब जब नजरान से मदीना मुनव्वरा चले आ रहे थे तो रास्ते में कर्ज़ के घोड़े को कहीं ठोकर लगी तो उसने कहा "تَعِسَ الۡاَبۡعَدُ" (हलाक हो जाये वह दूर वाला यानी जिसकी तरफ़ हम जा रहे हैं)। उसका इशारा मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ था। इस पर उसके बड़े भाई अबु हारसा ने कहा "بَلۡ تَعِسَتۡ اُمُّكَ" (बल्कि तेरी माँ हलाक हो जाये!) उसने कहा मेरे भाई! तुम्हें मेरी बात इस क़दर बुरी क्यों लगी? अबु हारसा ने

कहा: अल्लाह की क़सम! यक़ीनन वह वही नबी उम्मी हैं जिसके हम मुन्तज़िर थे। कर्ज़ ने कहा: जब आप यह सब जानते हैं तो उन पर ईमान क्यों नहीं ले आते? अबु हारसा कहने लगा: उन बादशाहों ने हमें बड़ा मक़ाम व मरतबा अता कर रखा है, अगर हम ईमान ले आये तो वह हमसे यह सब कुछ छीन लेंगे। यह लोग सल्तनते रोमा के तहत थे और उन्हें मिस्र की हुकूमत की तरफ़ से बड़ी मराआत हासिल थीं, उन्हें माल व दौलत और इज़्ज़त व वजाहत हासिल थी। अभी यह लोग मुहम्मदे अरबी ﷺ से मुलाक़ात के लिये जा रहे थे तो यह हाल था, इससे अंदाज़ा किया जा सकता है कि आँहुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में कई रोज़ गुज़ारने के बाद मुबाहला से राहे फ़रार इख़्तियार करके वापस जाते हुए उन्हें किस क़दर यक़ीन हासिल हो गया होगा कि यही वह नबी आखिरुज़्ज़मान ﷺ हैं जिनके वह मुन्तज़िर थे। उनके दिल गवाही दे चुके थे कि यह रसूल बरहक़ (ﷺ) हैं।

وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ

"और उनके पास खुली-खुली निशानियाँ भी आ चुकी हैं।"

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ۝۸۶

"और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।"

आयत 87

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ۝۸۷

"यही वह लोग हैं कि जिनका बदला यह है कि उन पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और तमाम इंसानों की लानत है।"

आयत 88

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

"उसी (लानत) में वह हमेशा रहेंगे।"

لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ۝۸۸

"उनके अज़ाब में कोई तख़फ़ीफ़ नहीं की जायेगी और ना ही उनको कोई मोहलत मिलेगी।"

यह अल्फ़ाज़ भी सूरतुल बक़रह (आयात 161-162) में आ चुके हैं।

आयत 89

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا

"सिवाये उनके जो इसके बाद तौबा कर लें और इस्लाह कर लें"

यानि सच्चे दिल से ईमान लाकर अमले सालेह की रविश पर गामज़न हो जायें।

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۝۸۹

"तो यक़ीनन अल्लाह तआला बख़्शने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।"

तौबा का दरवाज़ा अभी बंद नहीं है।

आयत 90

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا

"बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया अपने ईमान के बाद, फिर वह अपने कुफ़्र में बढ़ते चले गये"

यानि हक़ को पहचान लेने के बाद, चाहे ज़बान से माना हो या ना माना हो, फिर अगर वह कुफ़्र करते हैं या ज़बान से मानने के बाद मुर्तद हो जाते हैं, और फिर वह अपने कुफ़्र में बढ़ते चले जाते हैं।

لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ

"उनकी तौबा कभी क़ुबूल नहीं होगी।"

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ۝۹۰

"और वह यक़ीनन गुमराहों में से हैं।"

आयत 91

“यक़ीनन वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया और मर गये इसी हाल में कि वह काफ़िर थे” — اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ

“तो उनमें से किसी से ज़मीन की मिक़दार के बराबर सोना भी फ़िदये में क़ुबूल नहीं किया जायेगा अगर वह पेश कर सके।” — فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰی بِهٖ ؕ

ज़ाहिर है कि यह महाल है, नामुमकिन है, लेकिन यह बात समझाने के लिये कि वहाँ पर कोई फ़िदया नहीं है फ़रमाया कि अगर कोई ज़मीन के हुजम के बराबर सोना देकर भी छुटना चाहेगा तो नहीं छुट सकेगा। यह वही बात है जो सूरतुल बक़रह की आयत 48 और आयत 123 में फ़रमायी गयी कि उस दिन किसी से कोई फ़िदया नहीं लिया जायेगा।

“यह वह लोग हैं कि जिनके लिये दर्दनाक अज़ाब है” — اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ

“और नहीं होंगे उनके लिये कोई मदद करने वाले।” — وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ۝٩١

आयात 92 से 101 तक

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰی تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ
۝٩٢ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ
قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝٩٣ فَمَنِ
افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩٤ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ
قف فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۝٩٥ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ
لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝٩٦ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ
ۚ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ
وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ۝٩٧ قُلْ یٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ
اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ شَهِیْدٌ عَلٰی مَا تَعْمَلُوْنَ ۝٩٨ قُلْ یٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ
اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٩٩ یٰٓاَیُّهَا
الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِیْعُوْا فَرِیْقًا مِّنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ یَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِیْمَانِكُمْ
كٰفِرِیْنَ ۝١٠٠ وَكَیْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰی عَلَیْكُمْ اٰیٰتُ اللّٰهِ وَفِیْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ
یَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِیَ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۝١٠١

आयत 92

“तुम हरगिज़ नहीं पहुँच सकते नेकी के मक़ाम को जब तक कि खर्च ना करो उसमें से जो तुम्हें पसंद है।” — لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰی تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ۬

आयतुल बिर्र (सूरतुल बक़रह:177) के ज़िमन में इस आयत का हवाला भी आया था कि नेकी के मज़ाहिर में से सबसे बड़ी और सबसे मुक़द्दम शय इंसानी हमदर्दी है, और इंसानी हमदर्दी में अपना वह माल खर्च करना मतलूब है जो खुद अपने आपको महबूब हो। ऐसा माल जो रद्दी हो, दिल से उतर गया हो, बोसीदा हो गया हो वह किसी को देकर समझा जाये कि हमने हातिम ताई की क़ब्र पर लात मार दी है तो यह बजाये खुद हिमाक़त है।

“और जो कुछ भी तुम खर्च करोगे अल्लाह उससे बाख़बर है।” — وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ۝٩٢

आयत 93

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيٓ اِسۡرَآءِيۡلَ

"खाने की सारी चीज़ें (जो शरीअते मुहम्मदी ﷺ में हलाल हैं) बनी इसराइल के लिये भी हलाल थीं"

اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسۡرَآءِيۡلُ عَلٰى نَفۡسِهٖ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ تُنَزَّلَ التَّوۡرٰىةُ‌ؕ

"सिवाय उन चीज़ों के जिन्हें इसराइल (हज़रत याक़ूब अलै०) ने हराम ठहरा लिया था अपनी जान पर, इस से पहले कि तौरात नाज़िल हो।"

यहूदी शरीअते मुहम्मदी ﷺ पर ऐतराज़ करते थे कि इसमें बाज़ ऐसी चीज़ें हलाल क़रार दी गयी हैं जो शरीअते मूसवी अलै० में हराम थीं। मसलन उनके यहाँ ऊँट का गोश्त हराम था, लेकिन शरीअते मुहम्मदी ﷺ में यह हराम नहीं है। अगर यह भी आसमानी शरीअत है तो यह तगय्युर कैसे हो गया? यहाँ उसकी हक़ीक़त बताई जा रही है कि तौरात के नुज़ूल से क़ब्ल हज़रत याक़ूब अलै० ने तबई कराहत या किसी मर्ज़ के बाइस बाअज़ चीज़ें अपने लिये ममनूअ क़रार दे ली थीं जिनमें ऊँट का गोश्त भी शामिल था। जैसे नबी अकरम ﷺ ने अपनी दो अज़वाज की दिलजोई की खातिर शहद ना खाने की क़सम खा ली थी, जिस पर यह आयत नाज़िल हुई (सूरह तहरीम:1): {يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ‌ ۚ تَبۡتَغِىۡ مَرۡضَاتَ اَزۡوَاجِكَ‌ ؕ} हज़रत याक़ूब अलै० की औलाद ने बाद में इन चीज़ों को हराम समझ लिया, और यह चीज़ उनके यहाँ रिवाज के तौर पर चली आ रही थी। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इन चीज़ों की हुरमत तौरात में नाज़िल नहीं हुई। खाने-पीने की वह तमाम चीज़ें जो इस्लाम ने हलाल की हैं वह बनी इसराइल के लिये भी हलाल थीं, सिवाय उन चीज़ों के जिन्हें हज़रत याक़ूब अलै० ने अपनी ज़ाती नापसंद के बाइस अपने ऊपर हराम ठहरा लिया था, और यह बात तौरात के नुज़ूल से बहुत पहले की है। इसलिये कि हज़रत याक़ूब अलै० में और नुज़ूले तौरात में चार-पाँच सौ साल का फ़सल है।

قُلۡ فَاۡتُوۡا بِالتَّوۡرٰىةِ فَاتۡلُوۡهَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝۹۳

"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कहिये लाओ तौरात और उसको पढ़ो अगर तुम (अपने ऐतराज़ में) सच्चे हो।"

तौरात के अन्दर तो कहीं भी ऊँट के गोश्त की हुरमत मज़कूर नहीं है।

आयत 94

فَمَنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ مِنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ۝۹۴

"पस जो लोग इसके बाद भी अल्लाह की तरफ़ झूठ मंसूब करते रहें तो वही लोग ज़ालिम हैं।"

आयत 95

قُلۡ صَدَقَ اللّٰهُ‌ ۟

"कह दीजिये अल्लाह ने जो कुछ फ़रमाया है सच फ़रमाया है"

فَاتَّبِعُوۡا مِلَّةَ اِبۡرٰهِيۡمَ حَنِيۡفًا‌ ؕ

"पस पैरवी करो मिल्लते इब्राहीम की जो यक्सु थे (या यक्सु होकर!)"

"حَنِيۡفًا" इब्राहीम का हाल है। अगर इसे "اِتَّبِعُوۡا" का हाल (बा-माअनी حَنِيۡفِيَّيۡنَ) माना जाये तो दूसरा तर्जुमा होगा। यानि यक्सु होकर, बाद की तमाम तक़सीमात से बुलन्दतर होकर, इब्राहीम अलै० के तरीक़े की पैरवी करो!

وَمَا كَانَ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ۝۹۵

"और वह मुशरिकीन में से नहीं थे।"

आयत 96

"यक़ीनन पहला घर जो लोगों के लिये बनाया गया (अल्लाह की इबादत के लिये) वही है जो मक्का में है" — اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِىْ بِبَكَّةَ

"بَكَّة" और "مِكَّة" दरहक़ीक़त एक ही लफ्ज़ के लिये दो तलफ्फ़ुज़ (pronunciations) हैं।

"बरकत वाला है और हिदायत का मरकज़ है तमाम जहान वालों के लिये।" — مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ۚ﴿۹۶﴾

आयत 97

"इसमें बड़ी वाज़ेह निशानियाँ हैं, जैसे मक़ामे इब्राहीम अलै०।" — فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ

सूरतुल बक़रह के निस्फ़े अव्वल के आखरी चार रुकूओं (15,16,17,18) में पहले हज़रत इब्राहीम अलै० और खाना काबा का ज़िक्र है, फिर बाक़ी सारी गुफ्तगू है। यहाँ सूरह आले इमरान के निस्फ़े अव्वल के तीसरे हिस्से में हज़रत इब्राहीम अलै० और खाना काबा का तज़किरा आख़िर में आया है। गोया मज़ामीन वही हैं, तरतीब बदल गयी है।

"और जो भी उसमें दाख़िल हो जाता है अमन में आ जाता है।" — وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۭ

जाहिलियत के बदतरीन दौर में भी बैतुल्लाह अमन का गहवारा था। पूरे अरब के अन्दर खूँरेज़ी होती थी, लेकिन हरमे काबा में अगर कोई अपने बाप के क़ातिल को भी देख लेता था तो उसे कुछ नहीं कहता था। हरम की यह रिवायात हमेशा से रही हैं और आज तक यह अल्लाह के फ़ज़लो करम से दारुल अमन है कि वहाँ पर अमन ही अमन है।

"और अल्लाह का हक़ है लोगों पर कि वह हज करें उसके घर का, जो भी इस्तताअत रखता हो उसके सफ़र की।" — وَلِلّٰهِ عَلَي النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۭ

"और जिसने कुफ़्र किया तो (वह जान ले कि) अल्लाह बे नियाज़ है तमाम जहान वालों से।" — وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾

नोट कीजिये की यहाँ लफ्ज़ "كَفَرَ" आया है। इसके मायने यह हैं कि जो कोई इस्तताअत के बावजूद हज नहीं करता वह गोया कुफ़्र करता है।

अगली आयत में अहले किताब को बड़े तीखे और झिंझोड़ने के से अंदाज़ में मुख़ातिब किया जा रहा है, जैसे किसी पर निगाहें गाड़ कर उससे बात की जाये।

आयत 98

"कह दीजिये ऐ अहले किताब! तुम क्यों अल्लाह की आयात का इन्कार कर रहे हो?" — قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ

"जबकि जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।" — وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰي مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۸﴾

आयत 99

"कह दीजिये ऐ किताब वालो! तुम क्यों रोकते हो अल्लाह के रास्ते से उसको जो ईमान ले आता है" — قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ

"तुम उसमें कजी पैदा करना चाहते हो" — تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا

तुम चाहते हो कि जो अहले ईमान हैं वह भी टेढ़े रास्ते पर चलें। चुनाँचे तुम साज़िशें करते हो कि सुबह को ईमान लाओ और शाम को काफ़िर हो जाओ ताकि अहले ईमान के दिलों में भी वस्वसे और दगदगे पैदा हो जायें।

"हालाँकि तुम खुद गवाह हो!" وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ

तुम राहे रास्त को पहचानते हो और जो कुछ कर रहे हो जानते-बूझते कर रहे हो।

"और अल्लाह गाफिल नहीं है उससे जो तुम कर रहे हो।" وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ○۹۹

लेकिन इन तमाम साज़िशों के जवाब में अहले ईमान से फ़रमाया गया है:

आयत 100

"ऐ वह लोगों जो ईमान लाये हो! अगर तुम इन अहले किताब के किसी गिरोह की बात मान लोगे तो यह तुमको तुम्हारे ईमान के बाद फिर कुफ़्र की हालत में लौटा कर ले जायेंगे।" يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ○۱۰۰

आयत 101

"और (ज़रा सोचो तो सही) यह कैसे हो सकता है कि तुम फिर कुफ़्र करने लगो जबकि तुम्हें अल्लाह की आयात पढ़ कर सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे अन्दर उसका रसूल मौजूद है।" وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ

तुम्हारे दरमियान मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ ब-नफ्से-नफ़ीस तुम्हारी रहनुमाई के लिये मौजूद हैं और तुम्हें अल्लाह तआला की आयात पढ़-पढ़ कर सुना रहे हैं। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि मदीना में उलमाये यहूद का कितना असर था। औस और खजरज के लोग उनसे मरऊब थे क्योंकि यह अनपढ़ लोग थे, इनके पास कोई किताब, कोई शरीअत और कोई क़ानून नहीं था, जबकि यहूद साहिबे किताब और साहिबे शरीअत थे, उनके यहाँ उलमा थे। लिहाज़ा औस और खजरज के जो लोग इस्लाम ले आये थे उनके बारे में अन्देशा होता था कि कहीं यहूदी की रेशा दवानियों का शिकार ना हो जायें। इस क़िस्म के खतरे से बचने की तदबीर भी बता दी गयी:

"और जो कोई अल्लाह से चिमट जाये उसको तो हिदायत हो गयी सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़।" وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ○۱۰۱

जो कोई अल्लाह की पनाह में आ जाये, अल्लाह का दामन मज़बूती से थाम ले उसे तो ज़रूर सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत मिलेगी और वह ज़लालत व गुमराही के ख़तरात से महफ़ूज़ हो जायेगा। जैसे शीर ख्वार बच्चे को कोई ख़तरा महसूस हो तो वह दौड़ कर आयेगा और अपनी माँ के साथ चिमट जायेगा। अब वह यह समझेगा कि मैं मज़बूत क़िले में आ गया हूँ, अब मुझे कोई कुछ नहीं कह सकता। वह नहीं जानता कि माँ बेचारी तमाम ख़तरात से उसकी हिफ़ाज़त नहीं कर सकती। उसे क्या पता कि कब कोई दरिन्दा सिफ्त इन्सान उसे माँ की गौद से खींच कर उछाले और किसी बल्लम या नेज़े की आनी में पिरो दे। बहरहाल बच्चा तो यही समझता है कि अब मैं माँ की गौद में आ गया हूँ तो महफ़ूज़ पनाह में आ गया हूँ। अल्लाह का दामन वाक़िअतन महफ़ूज़ पनाहगाह है, और जो कोई उसके साथ चिमट जाता है वह गुमराही की ठोकरों से महफ़ूज़ हो जाता है और जादेह मुस्तक़ीम पर गामज़न हो जाता है।

اللهم ربّنا اجعلنا منهم! آمين يا ربّ العالمين!!

आयात 102 से 109 तक

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ○۱۰۲
وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ
اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ

النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَلْتَكُنْ
مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ
وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا
لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

अब सूरह आले इमरान का निस्फ़े सानी शुरू हो रहा है, जिसका पहला हिस्सा दो रुकूओं पर मुश्तमिल है। आपने यह मुशाबेहत भी नोट कर ली होगी कि सूरतुल बक़रह के निस्फ़े अव्वल में भी एक मरतबा { يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا } से ख़िताब था: { يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ } इसी तरह सूरह आले इमरान के निस्फ़े अव्वल में भी एक आयत ऊपर आ चुकी है (आयत:100): { يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ } लेकिन मुस्लमानों से असल ख़िताब ग्याहरवे रुकूअ से शुरू हो रहा है और यहाँ पर असल में उम्मत को एक सह निकाती लाहिया (three pronged strategy) अमल दिया जा रहा है। ज़ाहिर है कि यह उम्मत अब क़यामत तक क़ायम रहने वाली है, और इसमें ज़वाल भी आयेगा और अल्लाह तआला ऊलूल अज़्म और बा-हिम्मत लोगों को भी पैदा करेगा, जैसा कि हमें मालूम है कि मुजद्दिदे दीने उम्मत हर सदी के अन्दर उठते रहे। लेकिन जब भी तजदीदे दीन का कोई काम हो, दीन को अज़सरे नौ तरो-ताज़ा करने की कोशिश हो, दीन को क़ायम करने की जद्दो-जहद हो तो उसका एक लाहिया अमल होगा। वह लाहिया अमल सूरह आले इमरान की इन तीन आयात (102,103,104) में निहायत जामियत के साथ सामने आया है। यह हुस्ने इत्तेफ़ाक़ है कि यह भी तीन आयात हैं जैसे सूरतुल अस्र की तीन आयात हैं, जो निहायत जामेअ हैं। इन आयात के मज़ामीन पर मेरी एक किताब भी मौजूद है "उम्मते मुस्लिमा के लिये सह निकाती लाहिया अमल" और उसका अंग्रेज़ी में भी तर्जुमा हो चुका है। इस लाहिया अमल का पहला नुक्ता यह है कि जब भी कोई काम करना है तो सबसे पहले अफ़राद की शख़्सियत साज़ी, किरदार साज़ी करना होगी। चुनाँचे फ़रमाया:

आयत 102

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ

"ऐ अहले ईमान! अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो जितना कि उसके तक़वे का हक़ है"

وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝

"और तुम्हें हरगिज़ मौत ना आने पाये मगर फ़रमाबरदारी की हालत में।"

क़ुरान मजीद में तक़वे की तलक़ीन के लिये यह सबसे गाढ़ी आयत है। इस पर सहाबा رضی اللہ عنہم घबरा गये कि या रसूल अल्लाह ﷺ! अल्लाह के तक़वे का हक़ कौन अदा कर सकता है? फिर जब सूरह तगाबुन की यह आयत नाज़िल हुई कि { فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ } (आयत:16) "अपनी इम्कानी हद तक अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो" तब उनकी जान में जान आयी। तक़वे के हुक्म के साथ ही यह फ़रमाया कि "मत मरना मगर हालते फ़रमाबरदारी में।" इसके मायने यह हैं कि कोई पता नहीं किस लम्हे मौत आ जाये, लिहाज़ा तुम्हारा कोई लम्हा नाफ़रमानी में ना गुज़रे, मबादा मौत का हाथ उसी वक़्त आकर तुम्हें दबोच ले। अगर पहले इस तरह की शख़्सियतें ना बनी हो तो इज्तमाई इस्लाह का कोई काम नहीं हो सकता। इसलिये पहले अफ़राद की किरदार साज़ी पर ज़ोर दिया गया। उसके बाद दूसरा मरहला यह है कि एक इज्तमाइयत इख़्तियार करो।

आयत 103

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا

"अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो मिल-जुल कर और तफ़रक़े में ना पड़ो।"

याद रहे कि इससे पहले आयत 101 इन अल्फ़ाज़ पर ख़त्म हुई है: { وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ} "और जो कोई अल्लाह तआला से चिमट जाये (अल्लाह की हिफ़ाज़त में आ जाये) उसको तो हिदायत हो गई सिराते मुस्तक़ीम की तरफ।" सूरतुल हज की आखरी आयत में भी यह अल्फ़ाज़ आया है: { وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ } "और अल्लाह से चिमट जाओ!" अब अल्लाह की हिफ़ाज़त में कैसे आया जाये? अल्लाह से कैसे चिमटें? उसके लिये फ़रमाया: { وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ } कि अल्लाह की रस्सी से चिमट जाओ, अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो। और यह अल्लाह की रस्सी कौनसी है? मुतअद्दिद अहादीस से वाज़ेह होता है कि यह "क़ुरान" है। एक तरफ़ इन्सान में तक़वा पैदा हो, और दूसरी तरफ़ उसमें इल्म आना चाहिये, क़ुरान का फ़हम पैदा होना चाहिये, क़ुरान के नज़रियात को समझना चाहिये, क़ुरान की हिकमत को समझना चाहिये। इंसानों में इज्तमाइयत जानवरों के गल्लों की तरह नहीं हो सकती कि भेड़-बकरियों का एक बड़ा रेवड़ है और एक चरवाहा एक लकड़ी लेकर सबको हाँक रहा है। इंसानों को जमा करना है तो उनके ज़हन एक जैसे बनाने होंगे, उनकी सोच एक बनानी होगी। यह हैवाने आक़िल हैं, बाशऊर लोग हैं। इनकी सोच एक हो, नज़रियात एक हो, मक़ासिद एक हों, हम-आहंगी हो, नुक्ता-ए-नज़रिया एक हो तभी तो यह जमा होंगे। इसके लिये वह चीज़ चाहिये जो उनमें यकरंगी ख्याल, यकरंगी नज़र, यकजहती और मक़ासिद की हम-आहंगी पैदा कर दे, और वह क़ुरान है, जो "हब्लुल्लाह" है।

हज़रत अली رضی اللہ عنہ से मरवी तवील हदीस में क़ुरान हकीम के बारे में रसूल अल्लाह ﷺ के अल्फ़ाज़ नक़ल हुए हैं: ((وَ هُوَ حَبْلُ اللّٰهِ الْمَتِيْنُ))[1] हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि आँहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:

كِتَابُ اللّٰهِ، حَبْلٌ مَمْدُودٌ مِنَ السَّمَاءِ اِلَى الْاَرْضَ

"अल्लाह की किताब (को थामे रखना), यही वह मज़बूत रस्सी है जो आसमान से ज़मीन तक तनी हुई है।"

एक और हदीस में फ़रमाया:

اَبْشِرُوْا اَبْشِرُوْا- - - - - فَاِنَّ هٰذَا الْقُرْآنَ سَبَبٌ، طَرْفُهٗ بِيَدِ اللّٰهِ وَطَرْفُهٗ بِاَيْدِيْكُمْ

"खुश हो जाओ, खुशियाँ मनाओ..... यह क़ुरान एक वास्ता है, जिसका एक सीरा अल्लाह के हाथ में है और एक सीरा तुम्हारे हाथ में है।"

चुनाँचे तक़र्रुब इलल्लाह का ज़रिया भी क़ुरान है, और मुस्लमानों को आपस में जोड़ कर रखने का ज़रिया भी क़ुरान है। यही वजह है कि हमारी दावत व तहरीक का मिम्बा व सरचश्मा और मन्बा (आधार) व मदार (क्षेत्र) क़ुरान है। इसका उन्वान ही "दावत रुजूअ इलल क़ुरान" है। मैंने अपनी पूरी ज़िन्दगी अल्हम्दुलिल्लाह इसी काम में खपाई है, और इसी के ज़रिये से अंजुमन हाय खुद्दामुल क़ुरान और क़ुरान अकेडमीज़ का सिलसिला क़ायम हुआ। इन अकेडमीज़ में "एक साला रुजूअ इलल क़ुरान कोर्स" बरसहा बरस से जारी है। इस कोर्स में जदीद तालीम याफ्ता लोग दाखिला लेते हैं, जो एम.ए./ एम.एस.सी. होते हैं, बाज़ पी.एच.डी. कर चुके होते हैं, डॉक्टर और इंजिनियर भी आते हैं। वह एक साल लगा कर अरबी सीखते हैं ताकि क़ुरान को समझ सकें। ज़ाहिर है जब क़ुरान मजीद के साथ आपकी वाबस्तगी होगी तो फिर आप दीन के उस रुख पर आगे चलेंगे। तो यह दूसरा नुक्ता हुआ कि अल्लाह की रस्सी को मिल-जुल कर मज़बूती से थाम लो और तफ़रक़े में ना पड़ो।

وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً

"और ज़रा याद करो अल्लाह का जो ईनाम जो तुम पर हुआ जबकि तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे"

فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ

"तो अल्लाह ने तुम्हारे दिलों के अन्दर उल्फ़त पैदा कर दी"

"पस तुम अल्लाह के फ़ज़लो करम से भाई-भाई बन गये।" فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا

यहाँ अव्वलीन मुख़ातिब अन्सार हैं। उनके जो दो क़बीले थे औस और खज़रज वह आपस में लड़ते आ रहे थे। सौ बरस से खानदानी दुश्मनियाँ चली आ रही थीं और क़त्ल के बाद क़त्ल का सिलसिला जारी था। लेकिन जब ईमान आ गया, इस्लाम आ गया, अल्लाह की किताब आ गयी, मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ आ गये तो अब वह शेर ओ शुक्र हो गये, उनके झगड़े ख़त्म हो गये। इसी तरह पूरे अरब के अन्दर ग़ारतगरी होती थी, लेकिन अब अल्लाह ने उसे दारुल अमन बना दिया।

"और तुम तो आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच गये थे" (बस उसमें गिरने ही वाले थे) وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ

"तो अल्लाह ने तुम्हें उससे बचा लिया।" فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا

"इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयात वाज़ेह कर रहा है ताकि तुम राह पाओ (और सही राह पर क़ायम रहो)।" كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝

उम्मते मुस्लिमा के लिये सह निकाती लाहिया अमल के यह दो नुक्ते बयान हो गये। सबसे पहले अफ़राद के किरदार की तामीर, उन्हें तक़वा और फरमाबरदारी जैसे औसाफ़ से मुत्तसिफ (तैयार) करना---और फिर उनको एक जमीअत, तंज़ीम या जमाअत की सूरत में मुनज्ज़म करना, और उस तंज़ीम का मानवी महवर क़ुरान मजीद होना चाहिये, जो हब्लुल्लाह है। बक़ौल अल्लामा इक़बाल: *"अ-तसा मश कुन कि हब्लुल्लाह ऊस्त!"* इसको मज़बूती से थामो कि यह हब्लुल्लाह है! इस जमाअत साज़ी का फ़ितरी तरीक़ा भी हम इसी सूरत की आयत 52 के ज़ेल में पढ़ चुके हैं कि कोई अल्लाह का बंदा दाई बन कर खड़ा हो और { مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ } की आवाज़ लगाये कि मैं तो इस रास्ते पर चल रहा हूँ, अब कौन है जो मेरे साथ इस रास्ते पर आता है और अल्लाह की राह में मेरा मददगार बनता है? ऐसी जमीअत जब वजूद में आयेगी तो वह क्या करेगी? इस ज़िमन में यह तीसरी आयत अहमतरीन है:

आयत 104

"और तुम में से एक जमाअत ऐसी ज़रूर होनी चाहिये जो खैर की तरफ़ दावत दे, नेकी का हुक्म देती रहे और बदी से रोकती रहे।" وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ

उस जमाअत के करने के तीन काम बताये गये हैं, जिनमें अव्वलीन दावत इलल खैर है, और वाज़ेह रहे कि सबसे बड़ा खैर यह क़ुरान है।

"और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।" وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

यहाँ लफ्ज़ "مِّنْكُمْ" बड़ा मायने खेज़ है कि तुम में से एक ऐसी उम्मत वजूद में आनी चाहिये। गोया एक तो बड़ी उम्मत है उम्मते मुस्लिमा, वह तो एक सौ पचास करोड़ नफ़ूस पर मुश्तमिल है, जो ख्वाबे गफ़लत में मदहोश है, अपने मंसब को भूले हुए हैं, दीन से दूर हैं। लिहाज़ा इस उम्मत के अन्दर एक छोटी उम्मत यानि एक जमाअत वजूद में आये जो "जागो और जगाओ" का फ़रीज़ा सर अंजाम दे। अल्लाह ने तुम्हें जागने की सलाहियत दे दी है, अब औरों को जगाओ और उसके लिये ताक़त फ़राहम करो, एक मुनज्ज़म जमाअत बनाओ! फ़रमाया कि यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। वह बड़ी उम्मत जो करोड़ों अफ़राद पर मुश्तमिल है और यह काम नहीं करती वह अगर फ़लाह और निजात की उम्मीद रखती है तो यह एक उम्मीद मौहूम है। फ़लाह पाने वाले सिर्फ़ यह लोग होंगे जो तीन काम करेंगे: (1) दावत इलल खैर (2) अम्र बिल मारूफ़ (3) नही अनिल मुन्कर। मैंने "मन्हजे इन्क़लाबे नबवी ﷺ" के मराहिल व मदारिज (स्तिथि) के ज़िमन में भी यह बात वाज़ेह की है कि इस्लामी इन्क़लाब के लिये आखरी अक़दाम भी "नही अनिल मुन्कर बिल यद" होगा। इसलिये कि हदीस में रसूल अल्लाह

ﷺ ने नही अनिल मुन्कर के तीन मरातिब बयान किये हैं। हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

مَنْ رَاٰی مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهٖ، فَاِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهٖ، فَاِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهٖ، وَذٰلِكَ اَضْعَفُ الْاِيْمَانِ۔

"तुम में से जो कोई किसी मुन्कर को देखे उसका फ़र्ज़ है कि उसे ज़ोरे बाज़ू से रोक दे। पस अगर इसकी ताक़त नहीं है तो ज़बान से रोके। फिर अगर इसकी भी हिम्मत नहीं है तो दिल में बुराई से नफ़रत ज़रूर रखे। और यह ईमान का कमज़ोर तरीन दर्जा है।"

अगर दिल में नफ़रत भी ख़त्म हो गई है तो समझ लो कि मता-ए-ईमान रुख्सत हो गयी है। बक़ौल इक़बाल:

वाये नाकामी मता-ए-कारवाँ जाता रहा
कारवाँ के दिल से अहसास-ए-ज़ियाँ जाता रहा!

हाँ, दिल में नफ़रत है तो अगला क़दम उठाओ। ज़बान से कहना शुरू करो कि भाई यह चीज़ गलत है, अल्लाह ने इसको हराम ठहराया है, यह काम मत करो। लेकिन इसके साथ-साथ अपनी एक ताक़त बनाते जाओ। एक जमाअत बनाओ, क़ुव्वत मुज्तमअ करो। जब वह ताक़त जमा हो जाये तो फिर खड़े हो जाओ कि अब हम यह गलत काम नहीं करने देंगे। फिर वह होगा "नही अनिल मुन्कर बिल यद" यानि ताक़त के साथ बुराई को रोक देना। और यह होगा इन्क़लाब का आखरी मरहला।

तो इन तीन आयात के अन्दर अज़ीम हिदायत है, इन्क़लाब का पूरा लाहिया अमल मौजूद है, बल्कि इसी में मन्हजे इन्क़लाबे नबवी ﷺ का जो आखरी अक़दामी अमल है वह भी पोशीदा है।

आयत 105

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ

"और उन लोगों की तरह ना हो जाना जो फिरक़ो में बंट गये और उन्होंने इख्तिलाफ़ पैदा कर लिये इसके बाद कि उनके पास वाज़ेह तालीमात आ गयी थीं।"

وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ﴿۱۰۵﴾

"और उन्हीं लोगों के लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।"

आयत 106

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ

"(क़यामत के दिन) जिस दिन बाज़ चेहरे बड़े रोशन और ताबनाक होंगे और बाज़ चेहरे सियाह होंगे।"

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫

"तो जिन लोगों के चेहरे सियाह होंगे (उनसे पूछा जायेगा)"

اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

"क्या तुम अपने ईमान के बाद कुफ़्र में लौट गये थे?"

हिदायत के आने के बाद तुम लोग तफ़रक़े में पड़ गये थे और हब्लुल्लाह को छोड़ दिया था।

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۱۰۶﴾

"तो अब अज़ाब का मज़ा चखो उस कुफ़्र के बाइस जो तुम करते रहे थे।"

आयत 107

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ

"और जिनके चेहरे रोशन और ताबनाक होंगे तो वह अल्लाह की रहमत में होंगे।"

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۷﴾

"वह उसी में हमेशा-हमेश रहेंगे।"

आयत 108

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ

"यह अल्लाह की आयात हैं जो हम आपको पढ़ कर सुना रहे हैं हक़ के साथ।"

وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٨

"और अल्लाह तआला तो जहान वालों के लिये ज़ुल्म का इरादा नहीं रखता।"

लोग अपने ऊपर खुद ज़ुल्म करते हैं, खुद गलत रास्ते पर पड़ते हैं और फिर उसकी सज़ा उन्हें दुनिया और आख़िरत में भुगतनी पड़ती है।

आयत 109

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

"और अल्लाह ही के लिये है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है।"

وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۧ ۝١٠٩

"और बिल आखिर सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटाये जायेंगे।"

क़ुरान हकीम में अहम मबाहिस के बाद अक्सर इस तरह की आयात आती हैं। यह गोया concluding remarks होते हैं।

आयात 110 से 120 तक

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ اَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝١١٠ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝١١١ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝١١٢ لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ۝١١٣ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١١٤ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝١١٥ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١١٦ مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝١١٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝١١٨ هَاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝١١٩ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۪ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۧ ۝١٢٠

आयत 110

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ

"तुम वह बेहतरीन उम्मत हो जिसे लोगों के लिये बरपा किया गया है"

यहाँ उम्मते मुस्लिमा की ग़र्ज़े तासीस (reason to establish) बयान की जा रही है। यानि यह पूरी उम्मते मुस्लिमा इस मक़सद के लिये बनायी गयी थी। यह दूसरी बात है कि उम्मते मुस्लिमा अपना मक़सदे हयात भूल जाये। ऐसी सूरत में उम्मत में से जो भी जाग जायें वह दूसरों को जगा कर "उम्मत के अन्दर एक उम्मत" (Ummah within Ummah) बनायें और मज़कूरा बाला तीन काम करें। लेकिन हक़ीक़त में तो मज्मुई तौर पर इस उम्मते मुस्लिमा का फ़र्ज़े मंसबी ही यही है।

क़ब्ल अज़ हम सूरतुल बक़रह की आयत 143 में उम्मते मुस्लिमा का फ़र्ज़े मंसबी बाअल्फ़ाज़ पढ़ चुके हैं:

{وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا}

सूरह आले इमरान की आयत ज़ेरे मुताअला इसी के हमवज़न और हमपल्ला आयत है। फ़रमाया: "तुम बेहतरीन उम्मत हो जिसे लोगों के लिये निकाला गया है।" दुनिया की दीगर क़ौमें अपने लिये ज़िन्दा रहती हैं। उनके पेशे नज़र अपनी तरक्क़ी, अपनी बेहतरी, अपनी बहबूद (कल्याण) और दुनिया में अपनी इज़्ज़त व अज़मत होती है, लेकिन तुम वह बेहतरीन उम्मत हो जिसे लोगों की रहनुमाई के लिये मबऊस किया गया है:

हम तो जीते हैं कि दुनिया में तेरा नाम रहे
कहीं मुमकिन है कि साक़ी ना रहे जाम रहे!

मुस्लमान की ज़िन्दगी का मक़सद ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को हिदायत की तरफ़ बुलाना और लोगों को जहन्नम की आग से बचाने की कोशिश करना है। तुम्हें जीना है उनके लिये, वह जीते हैं अपने लिये। तुम्हें निकाला गया है, बरपा किया गया है लोगों के लिये।

"तुम हुक्म करते हो नेकी का" تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

"और तुम रोकते हो बदी से" وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

"और तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर।" وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

नबी अकरम ﷺ के दौर में पूरी उम्मते मुस्लिमा की यह कैफ़ियत थी। और वह जो पहले बताया गया है कि एक जमाअत वजूद में आये (आयत 104) वह उस वक़्त के लिये है जब उम्मत अपने मक़सदे वजूद को भूल गयी हो। तो ज़ाहिर बात है जिनको होश आ जाये वह लोगों को जगायें और एक जमीअत फ़राहम करें।

"और अगर अहले किताब भी ईमान ले आते तो यह उनके हक़ में बेहतर था।" وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ

"उनमें से कुछ तो ईमान वाले हैं" مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ

इससे मुराद वह लोग भी हो सकते हैं जो उस वक़्त तक यहूदियों या नस्रानियों में से ईमान ला चुके थे, और वह भी जिनके अन्दर बिल क़ुव्वा (potentially) ईमान मौजूद था और अल्लाह को मालूम था कि वह कुछ अर्से के बाद ईमान ले आयेंगे।

"लेकिन उनकी अक्सरियत नाफ़रमानों पर मुश्तमिल है।" وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ

वही मामला जो आज उम्मते मुस्लिमा का हो चुका है। आज उम्मत की अक्सरियत का जो हाल है वह सबको मालूम है।

आयत 111

"(ऐ मुस्लमानों!) यह तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे सिवाय थोड़ी सी कोफ्त के।" لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى

यह तुम्हारे लिये थोड़ी सी ज़बान दराज़ी और कोफ्त का सबब तो बनते रहेंगे, लेकिन यह बिल फ़अल तुम्हें कोई ज़रर नहीं पहुँचा सकेंगे।

"और अगर यह तुमसे जंग करेंगे तो पीठ दिखा देंगे।" وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ

इनमें जुर्रात नहीं है, यह बुज़दिल हैं, तुम्हारा मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे।

"फिर उनकी मदद नहीं की जायेगी।" ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ

यह ऐसे बेबस होंगे कि इनको कहीं से मदद भी नहीं मिल सकेगी।

आयत 112

"उनके ऊपर ज़िल्लत थोप दी गयी है जहाँ कहीं भी पाये जायें" ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا

"सिवाये यह कि (उन्हें किसी वक़्त) अल्लाह का कोई सहारा हासिल हो जाये या लोगों की तरफ़ से कोई सहारा मिल जाये" اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ

जैसे आज पूरी ईसाई दुनिया उनका सहारा बनी हुई है। इसराइल अपने बल पर नही, बल्कि पूरी ईसाई दुनिया की पुश्तपनाही पर क़ायम है। खलीज की जंग में इत्तेहादी अफ़वाज के कमान्डर एंड चीफ ने साफ़ कह दिया था कि यह सारी जंग हमने इसराइल के तहफ्फ़ुज़ के लिये लड़ी है। गोया इस क़दर खूँरेज़ी से सिर्फ़ इसराइल का तहफ्फ़ुज़ पेशे नज़र था।

"और यह अल्लाह तआला के गज़ब के मुस्तहिक़ हो गये" وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ

"और इनके ऊपर कम हिम्मती मुसल्लत कर दी गयी।" وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ

"यह इसलिये हुआ कि यह अल्लाह तआला की आयात का इन्कार करते रहे" ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

"और अम्बिया को नाहक़ क़त्ल करते रहे।" وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ

"और यह इसलिये हुआ कि इन्होंने नाफ़रमानी की रविश इख़्तियार की और हुदूद से तजावुज़ करते रहे।" ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ

याद रहे कि यह आयत थोड़े से लफ्ज़ी फ़र्क़ के साथ सूरतुल बक़रह में भी गुज़र चुकी है। (आयत 61)

आयत 113

"यह सबके सब बराबर नहीं हैं।" لَيْسُوْا سَوَآءً

इनमें अच्छे भी हैं, बुरे भी हैं।

"अहले किताब में ऐसे लोग भी हैं जो (सीधे रास्ते पर) क़ायम हैं, रात के अवक़ात में अल्लाह की आयात की तिलावत करते हैं और सज्दा करते हैं।" مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ

रसूल अल्लाह ﷺ के ज़माने में ख़ास तौर पर ईसाई राहिबों की एक कसीर तादाद इस किरदार की हामिल थी। उन्ही में से एक बहीरा राहिब था जिसने बचपन में आँहुज़ूर ﷺ को पहचान लिया था। यहूद में भी इक्का-दुक्का लोग इस तरह के बाक़ी होंगे, लेकिन अक्सरो बेशतर यहूद में से यह किरदार ख़त्म हो चुका था, अलबत्ता ईसाईयों में ऐसे लोग बकसरत मौजूद थे।

आयत 114

"वह ईमान रखते हैं अल्लाह पर और यौमे आख़िर पर" يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

"और नेकी का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं" — وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

"और नेकियों में एक-दूसरे से आगे निकलने की कोशिश करते हैं।" — وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ

"और यक़ीनन यह लोग सालेहीन में से हैं।" — وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١١٤

आयत 115

"जो खैर भी यह करेंगे तो उसकी नाक़द्री नहीं की जायेगी।" — وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ

"और अल्लाह ऐसे मुत्तक़ी लोगों से खूब वाक़िफ है।" — وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝١١٥

आयत 116

"(इसके बरअक्स) जो लोग कुफ़्र पर अड़ गये, उनके काम नहीं आ सकेंगे ना उनके अमवाल ना उनकी औलाद अल्लाह से बचाने में कुछ भी।" — اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

"यही लोग जहन्नमी हैं।" — وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

"उसी में हमेशा रहेंगे।" — هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١١٦

आयत 117

"दुनिया की इस ज़िन्दगी में यह लोग जो भी खर्च करते हैं उसकी मिसाल ऐसी है" — مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

क़ुरेशे मक्का अहले अहले ईमान के खिलाफ़ जो जंगी तैयारियाँ कर रहे थे तो उसके लिये माल खर्च करते थे। फ़ौज तैयार करनी हो तो उसके लिये ऊँट और दीगर सवारियों की ज़रूरत है, सामाने हर्बो ज़र्ब की ज़रूरत है, तो ज़ाहिर है उसके लिये माल तो खर्च होगा। यह इस इन्फ़ाक़े माल की तरफ़ इशारा है कि यह लोग दुनिया की ज़िन्दगी में जो कुछ खर्च करते हैं या तो दीन की मुखालफ़त के लिये या अपने जी को ज़रा झूठी तसल्ली देने के लिये करते हैं कि हम कुछ सदक़ा व खैरात भी करते हैं, चाहे हमारा किरदार कितना ही गिर गया हो। तो उनके इन्फ़ाक़ की मिसाल ऐसी है:

"कि जैसे एक ज़ोरदार आँधी जिसमें पाला हो" — كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ

"वह किसी ऐसी क़ौम की खेती को आ पड़े जिसने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया हो, फिर वह उस (खेती) को तबाह व बर्बाद और तहस-नहस करके रख दे।" — اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ

यानि उनकी यह नेकियाँ, यह इन्फ़ाक़, यह जद्दो-जहद और दौड़-धूप सबकी सब बिल्कुल ज़ाया हो जाने वाली है।

"और उन पर अल्लाह ने कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपनी जानों पर खुद ज़ुल्म ढा रहे हैं।" — وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝١١٧

आयत 118

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ

"ऐ अहले ईमान! अपने सिवा किसी को अपना राज़दार ना बनाओ"

यानि जिस शख्स के बारे में इत्मिनान हो कि साहिबे ईमान है, मुस्लमान है, उसके अलावा किसी और शख्स को अपना भेदी और महरमे राज़ ना बनाओ। यहूदी एक अर्से से मदीने में रहते थे और औस व खज़रज के लोगों की उनसे दोस्तियाँ थीं, पुराने ताल्लुक़ात और रवाबित थे। इसकी वजह से बाज़ अवक़ात सादा लौ मुस्लमान अपनी सादगी में राज़ की बातें भी उन्हें बता देते थे। इससे उन्हें रोका गया।

لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا

"वह तुम्हारे लिये किसी खराबी में कोई कसर नहीं छोड़ते।"

وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ

"उन्हें पसंद है वह चीज़ जो तुम्हें तकलीफ़ और मशक्क़त में डाले।"

قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ

"उनकी दुश्मनी उनके मुँह से भी ज़ाहिर हो चुकी है।"

उनका कलाम ऐसा ज़हर आलूदा होता है कि उससे इस्लाम और मुस्लमानों की दुश्मनी टपकती पड़ती है। यह अपनी ज़बानों से आतिश बरसाते हैं।

وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ

"और जो कुछ उनके सीने छुपाये हुए हैं वह इससे भी बढ़ कर है।"

जो कुछ उनकी ज़बानों से ज़ाहिर होता है वह तो फिर भी कम है, उनके दिलों के अन्दर दुश्मनी और हसद की जो आग भड़क रही है वह इससे कहीं बढ़ कर है।

قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

"हमने तुम्हारे लिये अपनी आयात को वाज़ेह कर दिया है अगर तुम अक़्ल से काम लो।"

यानि अपने तर्ज़े अमल पर गौर करो और इससे बाज़ आ जाओ!

आयत 119

هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ

"यह तुम्ही हो कि उनको दोस्त रखते हो"

यह तुम्हारी शराफ़त और सादालोई है कि तुम उनसे मोहब्बत करते हो और पुराने ताल्लुक़ात और दोस्तियों को निभाना चाहते हो।

وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ

"लेकिन (जान लो कि) वह तो तुमसे मोहब्बत नहीं करते"

वह तुमसे दोस्ती नहीं रखते।

وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ

"हालाँकि (तुम्हारी शान यह है कि) तुम पूरी किताब को मानते हो।"

तुम तौरात को भी मानते हो, इन्जील को भी मानते हो। सूरतुन्निसा में अल्फ़ाज़ आये हैं: { اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ.... } (आयत:44) क्या तुमने उन लोगों को देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया था...." चुनाँचे तमाम आसमानी किताबें अल्लाह तआला की उस क़दीम किताब "उम्मुल किताब" ही के हिस्से हैं। उसी "उम्मुल किताब" में से पहले तौरात आयी, फिर इन्जील आयी और फिर यह क़ुरान मजीद आया है, जो हिदायते कामिला पर मुश्तमिल है। तो तुम तो पूरी की पूरी किताब को मानते हो।

وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا

"और जब वह तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं हम भी मोमिन हैं।"

وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ

"और जब वह ख़लवत में होते हैं तो अब तुम पर गुस्से की वजह से अपनी उँगलियाँ चबाते हैं।"

जब वह देखते हैं कि अब उनकी कुछ पेश नहीं जा रही और इस्लाम का मामला और आगे से आगे बढ़ता जा रहा है तो गुस्से में पेच व ताब खाते हैं और अपनी उँगलियाँ चबाते हैं।

قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ

"उनसे कहो मर जाओ अपने इस ग़म व गुस्से में।"

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾

"यक़ीनन अल्लाह तआला जो कुछ सीनों के अन्दर मुज़मर है उससे भी वाक़िफ है।"

आयत 120

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ

"(ऐ मुस्लमानों!) अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँच जाये तो उनको बुरी लगती है।"

अगर तुम्हें कोई कामयाबी हासिल हो जाये, कहीं फ़तह नसीब हो जाये तो उनको इससे तकलीफ़ पहुँचती है।

وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا

"और अगर तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचे तो इससे वह खुश होते हैं।"

अगर तुम्हें कोई गज़न्द (चोट) पहुँच जाये, कहीं आरज़ी तौर पर शिकस्त हो जाये, जैसे ओहद में हो गयी थी, तो बड़े खुश होते हैं, शादयाने बजाते हैं।

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا

"लेकिन अगर तुम सब्र करते रहो और तक़वा की रविश इख़्तियार किये रहो तो उनकी यह सारी चालें तुम्हें कोई मुस्तक़िल नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगी।

सूरतुल बक़रह में सब्र और सलाह (नमाज़) से मदद लेने की तलक़ीन की गयी थी, यहाँ सलाह की जगह लफ्ज़ तक़वा आ गया है कि अगर तुम यह करते रहोगे तो फिर बिलआखिर उनकी सारी साज़िशें नाकाम होंगी।

اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۰﴾

"जो कुछ यह कर रहे हैं यक़ीनन अल्लाह तआला उसका इहाता किये हुए है।"

यह अल्लाह तआला के दायरे से और उसकी खींची हुई हद से आगे नहीं निकल सकते। यह उसके अन्दर-अन्दर उछल-कूद कर रहे हैं और साज़िशें कर रहे हैं। लेकिन अल्लाह तआला तुम्हें यह ज़मानत दे रहा है कि यह तुम्हें कोई मुस्तक़िल नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे।

आयात 121 से 129 तक

وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ اِذْ
هَمَّتْ طَّاۗىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ
﴿۱۲۲﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ تَقُوْلُ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾
بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ
مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُكُمْ
بِهٖ ۭ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَاۗىِٕبِيْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ
اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۹﴾

यहाँ से सूरह आले इमरान के निस्फ़े सानी के दूसरे हिस्से का आगाज़ हो रहा है, जो छ: रुकूआत पर मुहीत है। यह छ: रुकूअ मुसलसल गज़वा-ए-ओहद के हालात व वाक़िआत और उन पर तबसिरे पर मुश्तमिल हैं। गज़वा-ए-ओहद शवाल 3 हिजरी में पेश आया था। इससे पहले रमज़ान 2

हिजरी में ग़ज़वा-ए-बद्र पेश आ चुका था, जिसका तज़किरा हम सूरतुल अन्फ़ाल में पढ़ेंगे। इसलिये कि तरतीबे मुसहफ़ ना तो तरतीबे ज़मानी के ऐतबार से है और ना ही तरतीबे नुज़ूली के मुताबिक़। ग़ज़वा-ए-बद्र में अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को बहुत ज़बरदस्त फ़तह दी थी और कुफ्फ़ारे मक्का को बड़ी ज़क (चोट) पहुँची थी। उनके सत्तर (70) सरबरावरदा लोग मारे गये थे, जिनमें क़ुरैश के तक़रीबन सारे बड़े-बड़े सरदार भी शामिल थे। अहले मक्का के सीनों में इन्तेक़ाम की आग भड़क रही थी और उनके इन्तक़ामी जज़्बात लावे की तरह खोल रहे थे। चुनाँचे एक साल के अन्दर-अन्दर उन्होंने पूरी तैयारी की और तमाम साज़ो सामान जो वह जमा कर सकते थे जमा कर लिया। अबु जहल गज़वा-ए-बद्र में मारा जा चुका था और अब क़ुरैश के सबसे बड़े सरदार अबु सुफ़ियान थे। (अबु सुफ़ियान चूँकि बाद में ईमान ले आये थे और सहाबियत के मरतबे से सरफ़राज़ हुए थे लिहाज़ा हम उनका नाम अहतराम से लेते हैं।) अबु सुफ़ियान तीन हज़ार जंगजुओं का लश्कर लेकर मदीना पर चढ़ दौड़े। अहले मक्का अपनी फ़तह यक़ीनी बनाने के लिये इस दफ़ा अपने बच्चों और ख़ास तौर पर ख्वातीन को भी साथ लेकर आये थे ताकि उनकी ग़ैरत बेदार रहे कि अगर कहीं मैदान से हमारे क़दम उखड गये तो हमारी औरतें मुस्लमानों के कब्ज़े में चली जायेंगी। अबु सुफ़ियान की बीवी हिन्दा बिन्ते उत्बा भी लश्कर के हमराह थी। (वह भी बाद में फ़तह मक्का के मौके पर ईमान ले आयी थीं।) गज़वा-ए-बद्र में हिन्दा का बाप, भाई और चचा मुस्लमानों के हाथों वासिल-ए-जहन्नम हो चुके थे, लिहाज़ा उसके सीने के अन्दर भी इन्तेक़ाम की आग भड़क रही थी। मक्का का शायद ही कोई घर बचा हो जिसका कोई फ़र्द गज़वा-ए-बद्र में मारा ना गया हो।

इस मौके पर नबी अकरम ﷺ ने मदीना मुनव्वरा में एक मुशावरत मुनअक्क़िद फ़रमायी कि अब क्या हिकमते अमली इख़्तियार करनी चाहिये, जबकि तीन हज़ार का लश्कर मदीना पर चढ़ाई करने आ रहा है। रसूल अल्लाह ﷺ का अपना रुझान इस तरफ़ था कि इस सूरते हाल में हम अगर मदीना में महसूर होकर मुक़ाबला करें तो बेहतर रहेगा। अजीब इत्तेफ़ाक़ है कि रईसुल मुनाफ़िक़ीन अब्दुल्लाह बिन उबई की भी यही राय थी। लेकिन वह लोग जो बद्र के बाद ईमान लाये थे और वह जो गज़वा-ए-बद्र में शरीक नहीं हो पाये थे उनमें से ख़ास तौर पर नौजवानों की तरफ़ से खुसूसी जोशो खरोश का मुज़ाहिरा हो रहा था कि हमें मैदान में निकल कर दुश्मन का डट कर मुक़ाबला करना चाहिये, हमें तो शहादत दरकार है, हमें आख़िर मौत से क्या डर है?

शहादत है मतलूब-ओ-मक़सूदे मोमिन
ना माले गनीमत ना किशवर कुशाई!

चुनाँचे रसूल अल्लाह ﷺ ने उनके जज़्बात का लिहाज़ करते हुए फ़ैसला फ़रमा दिया कि दुश्मन का खुले मैदान में मुक़ाबला किया जायेगा। नबी अकरम ﷺ ने एक हज़ार की नफ़री लेकर मदीना से जबल-ए-ओहद की जानिब कूच फ़रमाया, लेकिन रास्ते ही में अब्दुल्लाह बिन उबई अपने तीन सौ आदमियों को साथ लेकर यह कह कर वापस चला गया कि जब हमारे मशवरे पर अमल नहीं होता और हमारी बात नहीं मानी जाती तो हम ख्वाहमा ख्वाह अपनी जानें जोखिम में क्यों डालें? तीन सौ मुनाफ़िक़ीन के चले जाने के बाद इस्लामी लश्कर में सिर्फ़ सात सौ अफ़राद बाक़ी रह गये थे, जिनमें कमज़ोर ईमान वाले भी थे। चुनाँचे दामने ओहद में पहुँच कर मदीना के दो खानदानों बनु हारसा और बनु सलमा के क़दम भी थोड़ी देर के लिये डगमगाये और उन्होंने वापस लौटना चाहा, लेकिन फिर अल्लाह तआला ने उनको हौसला दिया और उनके क़दम जमा दिये।

इसके बाद जंग हुई तो अल्लाह की तरफ़ से मदद आयी। अल्लाह ने लश्करे इस्लाम को फ़तह दे दी और मुशरिकीन के क़दम उखड़ गये। नबी अकरम ﷺ ने ओहद पहाड़ को अपनी पुश्त पर रखा था और उसके दामन में सफ़बंदी की थी। सामने दुश्मन का लश्कर था। पहाड़ में एक दर्रा था और हुज़ूर ﷺ को अन्देशा था कि ऐसा ना हो कि वहाँ से हम पर हमला हो जाये और हम दो तरफ़ से चक्की के दो पाटों के दरमियान आ जायें। लिहाज़ा आप ﷺ ने उस दर्रे पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की इमारत में पचास तीर अंदाज़ तैनात फ़रमा दिये थे और उन्हें ताकीद फ़रमायी थी यहाँ से मत हिलना। चाहे तुम देखो कि हम सब मारे गये हैं और हमारा गोश्त चीलें और कव्वे नोच रहे हैं तब भी यह जगह मत

छोड़ना! लेकिन जब मुस्लमानों को फ़तह हो गयी तो दर्रे पर मामूर हज़रात में इख्तलाफ़े राये हो गया। उनमें से अक्सर ने कहा कि रसूल ﷺ ने हमें जो इतनी ताकीद फ़रमायी थी वह तो शिकस्त की सूरत में थी, अब तो फ़तह हो गयी है, लिहाज़ा अब हमें भी चल कर माले गनीमत जमा करने में बाक़ी सब लोगों का साथ देना चाहिये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० वहाँ के लोकल कमांडर थे, वह उन्हें मना करते रहे कि यहाँ से हरगिज़ मत हटो, रसूल अल्लाह ﷺ का हुक्म याद रखो। लेकिन वह तो हुज़ूर ﷺ के हुक्म की तावील कर चुके थे। उनमें से 35 अफ़राद दर्रा छोड़ कर चले गये और सिर्फ़ 15 बाक़ी रह गये।

खालिद बिन वलीद (जो उस वक़्त तक ईमान नहीं लाये थे) मुशरिकीन की घुड़सवार फ़ौज (cavalry) के कमांडर थे। उनकी उक़ाबी निगाह ने देख लिया कि वह दर्रा खाली है। उनकी पैदल फ़ौज (infantry) शिकस्त खा चुकी थी और भगदड़ मच चुकी थी। ऐसे में वह अपने दो सौ घुड़सवारों के दस्ते के साथ ओहद का चक्कर काट कर पुश्त से उस दर्रे के रास्ते मुस्लमानों पर हमलावर हो गये। दर्रे पर सिर्फ़ 15 तीर अंदाज़ बाक़ी थे, उनके लिये दो सौ घुड़सवारों की यलगार को रोकना मुमकिन नहीं था और वह मज़ाहमत (प्रतिरोध) करते हुए शहीद हो गये। इस अचानक हमले से यकायक जंग का पांसा पलट गया और मुस्लमानों की फ़तह शिकस्त में बदल गयी। सत्तर सहाबा किराम रज़ि० शहीद हो गये। रसूल अल्लाह ﷺ खुद भी ज़ख़्मी हो गये। खौद की कड़ियाँ आप ﷺ के रुख्सार में घुस गयीं और दन्दाने मुबारक शहीद हो गये। खून इतना बहा कि आप ﷺ पर बेहोशी तारी हो गयी, और यह भी मशहूर हो गया कि हुज़ूर ﷺ का इन्तेक़ाल हो गया है। इससे मुस्लमानों के हौंसले पस्त हो गये। लेकिन फिर जब रसूल अल्लाह ﷺ ने लोगों को पुकारा तो लोग हिम्मत करके जमा हुए। तब आप ﷺ ने यह फ़ैसला किया कि इस वक़्त पहाड़ पर चढ़ कर बचाव कर लिया जाये, और आप ﷺ तमाम मुस्लमानों को लेकर कोहे ओहद पर चढ़ गये। इस मौक़े पर अबु सुफ़ियान और खालिद बिन वलीद के माबैन इख्तलाफ़े राय हो गया। खालिद बिन वलीद का कहना था कि हमें उनके पीछे पहाड़ पर चढ़ना चाहिये और उन्हें ख़त्म करके ही दम लेना चाहिये। लेकिन अबु सुफ़ियान बड़े हक़ीक़त पसंद और ज़रीक शख्स थे। उन्होंने कहा कि नहीं, मुस्लमान ऊँचाई पर हैं, वह ऊपर से पत्थर फेंकेगे और तीर बरसायेंगे तो हमारे लिये शदीद जानी नुक़सान का अन्देशा है। हमने बद्र का बदला ले लिया है, यही बहुत है। चुनाँचे मुशरिकीन वहाँ से चले गये। मुताअला-ए-आयात से क़ब्ल गज़वा-ए-ओहद के सिलसिला-ए-वाक़िआत का यह इज्माली ख़ाका ज़हन में रहना चाहिये।

आयत 121

وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ

"(और ऐ नबी ﷺ! याद कीजिये जबकि सुबह को आप ﷺ अपने घर से निकले थे और मुस्लमानों को जंग के मोर्चों में मामूर कर रहे थे।"

गज़वा-ए-ओहद की सुबह आप ﷺ हज़रत आयशा के हुजरे से बरामद हुए थे और जंग के मैदान में सफ़बंदी कर रहे थे, वहाँ मोर्चे मुअय्यन कर रहे थे और उनमें सहाबा किराम رضی اللہ عنہم को मामूर कर रहे थे

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۙ

"जबकि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है।"

आयत 122

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ

"जबकि तुम में से दो गिरोह बुज़दिली दिखाने पर आमादा हो गये थे"

उन्होंने कुछ कमज़ोरी दिखाई, हौसला छोड़ने लगे और उनके पाँव लड़खड़ाये।

وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ

"हालाँकि अल्लाह उनका पुश्त पनाह था।"

"और अल्लाह ही पर तवक्कुल करना चाहिये अहले ईमान को।"

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾

जंग के आगाज़ से पहले अन्सार के दो घरानों बनु हारसा और बनु सलमा के क़दम वक़्ती तौर पर डगमगा गये थे, बर-बनाये तबा-ए-बशरी उनके हौसले पस्त होने लगे थे और उन्होंने वापसी का इरादा कर लिया था, लेकिन अल्लाह तआला ने उनके दिलों को साबित अता फ़रमाया और उनके क़दमों को जमा दिया। फिर उनका ज़िक्र क़ुरान में कर दिया गया। और वह इस पर फ़ख्र करते थे कि हम वह लोग हैं जिनका ज़िक्र अल्लाह तआला ने क़ुरान में {مِنْكُمْ} और {وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا} के अल्फ़ाज़ में किया है। गौरतलब बात यह है कि तीन सौ मुनाफ़िक़ीन जो मैदाने जंग से चले गये थे अल्लाह तआला ने उनका ज़िक्र तक नहीं किया। गोया वह इस लायक़ भी नहीं हैं कि उनका बराहे रास्त ज़िक्र किया जाये। अलबत्ता आख़िर में उनका ज़िक्र बिल्वास्ता तौर पर (indirectly) आयेगा।

आयत 123

"और अल्लाह ने तो तुम्हारी मदद बद्र में भी की थी जबकि तुम बहुत कमज़ोर थे।"

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

गज़वा-ए-बद्र में एक हज़ार मुशरिकीन के मुक़ाबले में अहले ईमान सिर्फ़ तीन सौ तेरह थे, जबकि सबके पास तलवारें भी नहीं थीं। कुल आठ तलवारें थीं। कुफ्फ़ारे मक्का एक सौ घोड़ों का रिसाला लेकर आये थे और इधर सिर्फ़ दो घोड़े थे। उधर सात सौ ऊँट थे और इधर सत्तर ऊँट थे। इस सबके बावजूद अल्लाह ने तुम्हारी मदद की थी और तुम्हें अपने से ताक़तवर दुश्मन पर गलबा अता फ़रमाया था।

"तो अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो ताकि तुम अल्लाह का (सही मायने में) शुक्र अदा कर सको।"

فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

आयत 124

"(ऐ नबी ﷺ!) जब आप कह रहे थे अहले ईमान से कि क्या तुम्हारे लिये यह काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों से जो आसमान से उतरने वाले होंगे?"

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾

यानि ऐ मुस्लमानों! अगर मुक़ाबले में तीन हज़ार का लश्कर आ गया है तो क्या गम है। मैं तुम्हे खुशख़बरी देता हूँ कि अल्लाह तआला तुम्हारी मदद को तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजेगा जो आसमान से उतरेंगे। अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ की इस खुशख़बरी को, जो एक तरह से इस्तदआ (इच्छा) भी हो सकती थी, फ़ौरी तौर पर शर्फ़े क़ुबूलियत अता फ़रमाया और इसकी मंज़ूरी का ऐलान फ़रमा दिया।

आयत 125

"क्यों नहीं (ऐ मुस्लमानों!) अगर तुम सब्र करोगे और तक़वा की रविश पर रहोगे और अगर वह फ़ौरी तौर पर तुम पर हमलावर हो जायें"

بَلٰٓى اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا

"तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार फ़रिश्तों के ज़रिये से जो निशानज़दा घोड़ों पर आएँगे।"

يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

आयत 126

"और अल्लाह ने इसको नहीं बनाया मगर तुम्हारे लिये बशारत"

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ

وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ

"और ताकि तुम्हारे दिल इससे मुत्मईन हो जायें।"

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝

"वरना मदद तो होनी ही अल्लाह की तरफ़ से है जो ग़ालिब और हिकमत वाला है।"

यह तो अल्लाह तआला की तरफ़ से बशारत के तौर पर तुम्हारे दिलों के इत्मिनान के लिये तुम्हें बता दिया गया है, वरना अल्लाह फ़रिश्तों को भेजे बगैर भी तुम्हारी मदद कर सकता है, वह "कुन-फ़-यकून" की शान रखता है। तुम्हें यह बशारत तुम्हारी तबअ बशरी के हवाले से दी गयी है कि अगर तीन हज़ार की तादाद में दुश्मन सामने हुआ तो तुम्हारी मदद को तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार आएँगे, और अगर वह फ़ौरी तौर पर हमलावर हो गये तो हम पाँच हज़ार फ़रिश्ते भेज देंगे।

.

आयत 127

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

"(और यह मदद वह तुम्हें इसलिये देगा) ताकि काफ़िरों का एक बाज़ू काट दे"

اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ۝

"या उन्हें ज़लील कर दे कि वह खाइब (असफ़ल) व खासिर (हारे हुए) होकर लौट जायें।"

यह बात ज़हन में रहे कि यहाँ गज़वा-ए-ओहद के हालात व वाक़िआत और उन पर तबसिरा ज़मानी तरतीब से नहीं है। सबसे पहले रसूल अल्लाह ﷺ का अपने घर से निकल कर मैदाने जंग में मोर्चाबंदी का ज़िक्र हुआ। फिर उससे पहले का ज़िक्र हो रहा है जब ख़बरें पहुँची होंगी कि तीन हज़ार का लश्कर मदीना पर हमलावर होने के लिये आ रहा है और रसूल अल्लाह ﷺ ने अहले ईमान को अल्लाह तआला की मदद व नुसरत की खुशखबरी दी होगी। अब इस जंग के दौरान मुस्लमानों से जो कुछ खताएँ और गलतियाँ हुईं उनकी निशानदेही की जा रही है। खुद आँहुज़ूर ﷺ से भी ख़ता का एक मामला हुआ, उस पर भी गिरफ्त है, बल्कि सबसे पहले उसी मामले को लाया जा रहा है। जब आप ﷺ शदीद ज़ख़्मी हो गये और आप ﷺ पर बेहोशी तारी हो गयी, फिर जब होश आया तो आप ﷺ की ज़बान पर यह अल्फ़ाज़ आ गये:

كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ خَضَبُوْا وَجْهَ نَبِيِّهِمْ بِالدَّمِ وَهُوَ يَدْعُوْهُمْ اِلَى اللّٰهِ

"यह क़ौम कैसे फ़लाह पायेगी जिसने अपने नबी के चेहरे को खून से रंग दिया जबकि वह उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुला रहा था!"

तलवार का वार आँहुज़ूर ﷺ के रुख्सार की हड्डी पर पड़ा था और उससे आप ﷺ के दो दाँत भी शहीद हो गये थे। ज़ख्म से खून का फ़व्वारा छूटा था जिससे आप ﷺ का पूरा चेहरा मुबारक लहूलुहान हो गया था। खून इतनी मिक़दार में बह गया था कि आप ﷺ पर बेहोशी तारी हो गयी। आप ﷺ होश में आये तो ज़बाने मुबारक से यह अल्फ़ाज़ अदा हो गये। इस पर यह आयत नाज़िल हुई: {.... لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ } ऐ नबी ﷺ इस मामले में आप ﷺ का कोई इख़्तियार नहीं है, आप ﷺ का काम दावत देना और तब्लीग करना है। लोगों की हिदायत और ज़लालत के फ़ैसले हम करते हैं। और देखिये अल्लाह ने क्या शान दिखाई? जिस शख्स की वजह से मुस्लमानों को हज़ीमत (हार) उठाना पड़ी, यानि खालिद बिन वलीद, अल्लाह तआला ने हुज़ूर ﷺ ही की ज़बाने मुबारक से उसे "سَيْفٌ مِنْ سُيُوْفِ اللّٰهِ" (अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार) का ख़िताब दिलवा दिया।

आयत 128

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ

"(ऐ नबी ﷺ!) इस मामले में आपको कोई इख़्तियार नहीं"

اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ

"अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे"

यह अल्लाह के इख़्तियार में है, वह चाहेगा तो उनको तौबा की तौफ़ीक़ दे देगा, वह ईमान ले आएँगे, या अल्लाह चाहेगा तो उन्हें अज़ाब देगा।

"इसलिये कि वह ज़ालिम हैं।" فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ○١٢٨

उनके ज़ालिम होने में कोई शुबह नहीं, लिहाज़ा वह सज़ा के हक़दार तो हो चुके हैं। लेकिन हो सकता है अल्लाह उन्हें हिदायत दे दे। देखिये, यह वक़्त-वक़्त की बात होती है। चंद साल पहले ताइफ़ में रसूल अल्लाह ﷺ से जिस तरह बदसुलूकी का मुज़ाहिरा किया गया वह आप ﷺ की ज़िन्दगी का शदीद-तरीन दिन था। इस पर जिब्राइल अलै० ने आकर कहा कि यह मलाकुल जिबाल (पहाड़ों का फ़रिश्ता) हाज़िर है। यह कहता है कि मुझे अल्लाह ने भेजा है, आप ﷺ फ़रमायें तो इन दोनों पहाड़ों को टकरा दूँ जिनके माबैन वादी के अन्दर यह शहर ताइफ़ आबाद है, ताकि यह सब पिस जायें, इनका सुरमा बन जाये। आप ﷺ ने फ़रमाया कि नहीं, क्या अजब कि अल्लाह तआला उनकी आइन्दा नस्लों को हिदायत दे दे। लेकिन यह वक़्त कुछ ऐसा था कि बरबनाये तबअ बशरी ज़बान मुबारक से वह जुमला निकल गया। इसलिये कि:

وَالْعَبْدُ عَبْدٌ وَاِنْ تَرَقّٰى وَالرَّبُّ رَبٌّ وَاِنْ تَنَزَّلْ

"बंदा, बंदा ही रहता है चाहे कितना ही बुलन्द हो जाये, और रब, रब ही है चाहे कितना ही नुज़ूल फ़रमा ले!"

आयत 129

"अल्लाह ही के लिये है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है।" وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

"वह जिसको चाहता है बख़्श देता है और जिसको चाहता है अज़ाब देता है।" يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

"और अल्लाह गफ़ूर व रहीम है।" وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○١٢٩

आयात 130 से 143 तक

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ○١٣٠ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ○١٣١ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○١٣٢ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ
وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ○١٣٣ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ
الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○١٣٤ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا
فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۫ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ○١٣٥ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ
مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ
الْعٰمِلِيْنَ ○١٣٦ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ○١٣٧ هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ○١٣٨ وَلَا
تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ○١٣٩ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ
مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ○١٤٠ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ○١٤١ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ○١٤٢ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تَلْقَوْهُ ۪ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ○١٤٣

आयत 130

"ऐ अहले ईमान! सूद मत खाओ दोगुना-चौगुना बढ़ता हुआ" يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰٓوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً

यहाँ पर सूद मुरक्कब (compund interest) का ज़िक्र आया है जो बढ़ता-चढ़ता रहता है। वाज़ेह रहे कि शराब और जुए की तरह सूद की हुरमत के अहकाम भी तदरीजन (धीरे-धीरे) नाज़िल हुए हैं। सबसे पहले एक मक्की सूरत, सूरह रूम में इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह और सूद को एक-दूसरे के मक़ाबिल रख कर सूद की क़बाहत और शनाअत को वाज़ेह कर दिया गया:

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿۳۹﴾

जैसे कि शराब और जुए की खराबी को सूरतुल बक़रह (आयत 219) में बयान कर दिया गया था। इसके बाद आयत ज़ेरे मुताअला में दूसरे क़दम के तौर पर महाजनी सूद (usury) से रोक दिया गया। हमारे यहाँ आज-कल भी ऐसे सूदखोर मौजूद हैं जो बहुत ज़्यादा शरह सूद पर लोगों को क़र्ज़ देते हैं और उनका खून चूस जाते हैं। तो यहाँ उस सूद की मज़म्मत आयी है। सूद के बारे में आखरी और हत्मी हुक्म 9 हिजरी में नाज़िल हुआ, लेकिन तरतीबे मुसहफ़ में वह सूरतुल बक़रह में है। वह पूरा रुकूअ (नम्बर 38) हम मुताअला कर चुके हैं। वहाँ पर सूद को दो टूक अंदाज़ में हराम क़रार दे दिया गया और सूदखोरी से बाज़ ना आने पर अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की तरफ़ से जंग का अल्टीमेटम दे दिया गया।

सवाल पैदा होता है कि गज़वा-ए-ओहद के हालत व वाक़िआत के दरमियान सूदखोरी की मज़म्मत क्यों बयान हुई? ऐसा महसूस होता है कि दर्रे पर मामूर पचास तीर अंदाज़ों में से पैंतीस अपनी जगह छोड़ कर जो चले गये थे तो उनके तहतुल शऊर में माले गनीमत की कोई तलब थी, जो नहीं होनी चाहिये थी। इस हवाले से सूदखोरी की मज़म्मत बयान की गयी कि यह भी इन्सान के अन्दर माल व दौलत से ऐसी मोहब्बत पैदा कर देती है जिसकी वजह से उसके किरदार में बड़े-बड़े खला पैदा हो सकते हैं।

"और अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।" وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾

आयत 131

"और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तैयार की गयी है।" وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۱﴾

आयत 132

"और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाये।" وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

आयत 133

"और मुसाबक़त (competition) करो अपने रब की मग़फ़िरत के हुसूल के लिये और उस जन्नत को हासिल करने के लिये जिसका फैलाव आसमानों और ज़मीन जितना है" وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ

"वह तैयार की गयी है (और सँवारी गयी है) अहले तक़वा के लिये।" اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۳﴾

आयत 134

"वो लोग जो खर्च करते हैं कुशादगी में भी और तंगी में भी" الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ

यहाँ भी तक़ाबुल मुलाहिज़ा कीजिये कि सूद के मुक़ाबले में इन्फ़ाक़ का ज़िक्र हो रहा है।

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ

"और वह अपने गुस्से को पी जाने वाले और लोगों की खताओं से दरगुज़र करने वाले हैं।"

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۚ﴿۱۳۴﴾

"और अल्लाह तआला ऐसे मोहसिनीन को पसंद करता है।"

यह दर्जा-ए-अहसान है, जो इस्लाम और ईमान के बाद का दर्जा है।

आयत 135

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ

"और जिनका हाल यह है कि अगर कभी उनसे किसी बेहयाई का इरतकाब हो जाये या अपने ऊपर कोई और ज़ुल्म कर बैठें तो फ़ौरन उन्हें अल्लाह याद आ जाता है"

فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۫

"पस वह उससे अपने गुनाहों की बख्शीश माँगते हैं।"

यह मज़मून सूरतुन्निसा में आयेगा कि किसी मुस्लमान शख्स से अगर कोई खता हो जाये और वह फ़ौरन तौबा कर ले तो अल्लाह तआला ने अपने ऊपर वाजिब ठहरा लिया है कि उसकी तौबा ज़रूर क़ुबूल फ़रमायेगा।

وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۫

"और कौन है जो माफ़ कर सके गुनाहों को सिवाय अल्लाह के?"

وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ

"और वह अपने उस गलत फ़अल (काम) पर जानते-बूझते इसरार नहीं करते।"

﴿۱۳۵﴾

यानि ऐसा नहीं कि गुनाह पर गुनाह करते चले जा रहे हैं कि मौत आने पर तौबा कर लेंगे। उस वक़्त की तौबा तौबा नहीं है। एक मुस्लमान से अगर जज़्बात की रू में बह कर या भूल-चूक में कोई गुनाह सरज़द हो जाये और वह होश आने पर अल्लाह के हुज़ूर गिड़गिड़ाये, अज़मे मुसम्मम (वादा) करे कि दोबारा ऐसा नहीं करेगा, और पूरी पशेमानी के साथ समीम क़ल्ब से अल्लाह की जनाब में तौबा करे तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़ुबूल करने की ज़मानत देता है।

आयत 136

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ

"यह हैं वह लोग कि जिनका बदला हैं उनके रब की तरफ़ से मगफ़िरत"

وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ

"और वह बाग़ात कि जिनके दामन में नदियाँ बहती होंगी और वह उनमें हमेशा-हमेश रहेंगे।"

وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۖ﴿۱۳۶﴾

"और क्या ही अच्छा बदला है अमल करने वालों के लिये।"

आयत 137

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ

"तुमसे पहले भी बहुत से हालात व वाक़िआत गुज़र चुके हैं"

فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

"तो ज़मीन में घूमो-फिरो"

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ

"और देखो कि कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का!"

﴿۱۳۷﴾

क़ुरैश के तिजारती काफ़िले शाम (सीरिया) की तरफ़ जाते थे तो रास्ते में क़ौमे समूद का मसकन भी आता था और वह बस्तियाँ भी आती थीं जिनमें

कभी हज़रत लूत अलै० ने तब्लीग की थी। उनके खण्डरात से इबरत हासिल करो कि उनके साथ क्या कुछ हुआ।

आयत 138

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

"यह वज़ाहत है लोगों के लिये और हिदायत और नसीहत है मुत्तक़ीन के हक़ में।"

आयत 139

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا

"और ना कमज़ोर पड़ो और ना गम खाओ"

وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

"और तुम ही सर बुलन्द रहोगे अगर तुम मोमिन हुए।"

यह आयत बहुत अहम है। यह अल्लाह तआला का पुख्ता वादा है कि तुम ही ग़ालिब व सरबुलन्द होगे, आखरी फ़तह तुम्हारी होगी, बशर्ते कि तुम मोमिन हुए। यह आयत हमें दावते फ़िक्र देती है कि आज दुनिया में जो हम ज़लील हैं, ग़ालिब व सरबुलन्द नहीं हैं, तो नतीजा क्या निकलता है? यह कि हमारे अन्दर ईमान नहीं है, हम हक़ीक़ी ईमान से महरूम हैं। हम जिस ईमान के मुद्दई हैं वह महज़ एक मौरूसी अक़ीदा है, यक़ीने क़ल्बी और conviction वाला ईमान नहीं है। यह हो नहीं सकता कि उम्मत के अन्दर हक़ीक़ी ईमान मौजूद हो और फिर भी वह दुनिया में ज़लील व ख्वार हो।

आयत 140

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ

"अगर तुम्हें अब चरका लगा है तो तुम्हारे दुश्मन को भी ऐसा ही चरका इससे पहले लग चुका है।"

अहले ईमान को गज़वा-ए-ओहद में इतनी बड़ी चोट पहुँची थी कि सत्तर सहाबा रज़ि० शहीद हो गये। उनमें हज़रत हमज़ा रज़ि० भी थे और मुसअब बिन उमैर रज़ि० भी। अन्सार का कोई घराना ऐसा नहीं था जिसका कोई फ़र्द शहीद ना हुआ हो। रसूल अल्लाह ﷺ और मुस्लमान जब मदीना वापस आये तो हर घर में कोहराम मचा हुआ था। उस वक़्त तक मय्यत पर बैन करने की मुमानियत नहीं हुई थी। औरतें मरसिये कह रही थीं, बैन (नौहा) कर रही थीं, मातम कर रही थीं। इस हालत में खुद आँहुज़ूर ﷺ की ज़बाने मुबारक से अल्फ़ाज़ निकल गये: لٰكِنَّ حَمْزَةَ لَا بَوَاكِىَ لَهٗ![1] "हाय हमज़ा के लिये तो कोई रोने वालियाँ भी नहीं है!" क्योंकि मदीना में हज़रत हमज़ा रज़ि० की कोई रिश्तेदार ख्वातीन नहीं थीं। हमज़ा रज़ि० तो मुहाजिर थे। अन्सार के घरानों की ख्वातीन अपने-अपने मकतूलों पर आँसू बहा रही थीं और बैन (नौहा) कर रही थीं। फिर अन्सार ने अपने घरों से जाकर ख्वातीन को हज़रत हमज़ा रज़ि० की हमशीरा हज़रत सफ़िया रज़ि० के घर भेजा कि वहाँ जाकर ताज़ियत करें। बहरहाल दुःख तो मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ को भी पहुँचा है। आख़िर आप ﷺ के सीने के अन्दर एक हस्सास दिल था, पत्थर का कोई टुकड़ा तो नहीं था। यहाँ अल्लाह तआला अहले ईमान की दिलजोई के लिये फ़रमा रहा है कि इतने ग़मगीन ना हो, इतने मलूल ना हो, इतने दिल गिरफ्ता ना हो। इस वक़्त अगर तुम्हें कोई चरका लगा है तो तुम्हारे दुश्मन को इस जैसा चरका इससे पहले लग चुका है। एक साल पहले उनके भी सत्तर अफ़राद मारे गये थे।

وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ

"यह तो दिन हैं जिनको हम लोगों में उलट-फेर करते रहते हैं।"

यह ज़माने के नशेबो फ़राज़ हैं जिन्हें हम लोगों के दरमियान गर्दिश देते रहते हैं। किसी क़ौम को हम एक सी कैफ़ियत में नहीं रखते।

وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

"और यह इसलिये होता है कि अल्लाह देख ले कि कौन हक़ीक़तन मोमिन हैं"

अगर इम्तिहान और आज़माइश ना आये, तकलीफ़ ना आये क़ुर्बानी ना देनी पड़े, कोई ज़क ना पहुँचे तो कैसे पता चले कि हक़ीक़ी मोमिन कौन है? इम्तिहान व आज़माइश से तो पता चलता है कि कौन साबित क़दम

रहा। अल्लाह तआला जानना चाहता है, देखना चाहता है, ज़ाहिर करना चाहता है कि किसने अपना सब कुछ लगा दिया? किसने सब्र किया?

"और वह चाहता है कि तुम में से कुछ को मक़ामे शहादत अता करे।" وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ

उन्हें अपनी गवाही के लिये क़ुबूल कर ले।

"अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।" وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ

अगर तुम्हें तकलीफ़ पहुँची है तो इसका यह मतलब नहीं है कि अल्लाह ने कुफ्फ़ार की मदद की है और उनको पसंद किया है (माज़ अल्लाह!)

आयत 141

"और यह इसलिये हुआ है कि अल्लाह अहले ईमान को बिल्कुल पाक पाक-साफ़ कर दे और काफिरों को मिटा दे।" وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ

मुस्लमानों में से ख़ास तौर पर अन्सारे मदीना की आज़माइश मतलूब है जो अभी ईमान लाये हैं, उनमें कुछ पुख्ता ईमान वाले हैं, कुछ कमज़ोर ईमान वाले हैं और कुछ मुनाफ़िक़ भी हैं। अल्लाह चाहता है कि वह पूरे तरीक़े से पुख्ता हो जायें, और अगर कोई कच्चा ही रहता है तो वह अहले ईमान से कट जाये, ताकि बहैसियते मज्मुई जमाती क़ुव्वत को कोई ज़ौफ़ (नुक़सान) ना पहुँचे। तो यह जो तुम्हारे अन्दर हर तरह के लोग गडमड हो गये हैं कि कुछ मोमिन सादिक़ हैं, पुख्ता ईमान वाले हैं, कुछ कमज़ोर ईमान वाले हैं और कुछ मुनाफ़िक़ भी हैं, तो अल्लाह तआला ने यह तम्हीस की है कि सबको छाँट कर अलग कर दिया है। चुनाँचे अब्दुल्लाह बिन उबइ और उसके तीन सौ साथियों के निफ़ाक़ का पर्दा चाक हो गया, वरना उनकी असलियत तुम पर कैसे ज़ाहिर होती? "बहस व तम्हीस" हम उर्दू में भी इस्तेमाल करते हैं। बहस के मायने हैं कुरेदना और तम्हीस अलग-अलग करना।

आयत 142

"क्या तुमने समझा था कि जन्नत में यूँ ही दाख़िल हो जाओगे?" اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ

"हालाँकि अभी तो अल्लाह ने देखा ही नहीं है तुम में से कौन वाक़िअतन (अल्लाह की राह में) जिहाद करने वाले हैं और सब्र व इस्तक़ामत का मुज़ाहिरा करने वाले हैं।" وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ

गोया ~ *"अभी इश्क़ के इम्तिहान और भी हैं!"* अभी तो तुम्हारे लिये इस रास्ते में कड़ी से कड़ी मंज़िलें आने वाली हैं। याद रहे कि यह मज़मून हम सूरतुल बक़रह की आयत 214 में पढ़ आये हैं। नोट कीजिये कि ज़ेरे मुताअला आयत का नम्बर 142 है, यानि हंदसों की सिर्फ़ तरतीब बदली है।

आयत 143

"और तुम तो मौत की तमन्ना कर रहे थे इससे पहले कि उससे मुलाक़ात होती।" وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ

"सो अब तुमने उसको देख लिया है अपनी आँखों से।" فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ

यहाँ रुए सुखन उन लोगों की तरफ़ है जो नये-नये ईमान लाये थे और उनमें से ख़ास तौर पर नौजवानों ने कहा था कि हमें तो शहादत चाहिये और हम तो खुले मैदान में जाकर मुक़ाबला करेंगे। उनके जज़्बात पर थोड़ा सा तबसिरा हो रहा है कि उस वक़्त तो जोशे क़िताल और ज़ोक़े शहादत का

इज़हार हो रहा था, अब तुमने मौत देख ली है ना! तो यह है मौत जिसे इन्सान इतनी आसानी के साथ क़ुबूल नहीं करता।

आयात 144 से 148 तक

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝۱۴۴ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَ سَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ۝۱۴۵ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝۱۴۶ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْۤ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝۱۴۷ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۱۴۸ ۚ

आयत 144

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ

"मुहम्मद (ﷺ) इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल हैं।"

गज़वा-ए-ओहद के दौरान जब यह अफ़वाह उड़ गई कि मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ का इन्तेक़ाल हो गया है तो बाज़ लोग बहुत दिल गिरफ्ता हो गये कि अब किस लिये जंग करनी है? हज़रत उमर रज़ि० भी उनमें से थे। आप रज़ि० ने रसूल अल्लाह ﷺ की वफ़ात की ख़बर सुन कर तलवार फेंक दी और दिल बर्दाश्ता होकर बैठ गये कि अब हमने जंग करके क्या लेना है! यहाँ इस तर्ज़े अमल पर गिरफ़्त हो रही है कि तुम्हारा यह रवैय्या गलत था। मुहम्मद ﷺ इसके सिवा कुछ नहीं हैं कि वह अल्लाह के रसूल हैं, वह मअबूद तो नहीं हैं। तुम उनके लिये जिहाद नहीं कर रहे, बल्कि अल्लाह के लिये कर रहे हो, अल्लाह के दीन के गलबे के लिये अपने जान व माल क़ुर्बान कर रहे हो। मुहम्मद ﷺ तो अल्लाह के रसूल हैं।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ

"उनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं।"

اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ

"तो क्या अगर उनका इन्तेक़ाल हो जाये या क़त्ल कर दिये जायें तो तुम अपनी एड़ियों के बल लौट जाओगे?"

क्या इस सूरत में तुम उल्टे पाँव राहे हक़ से फिर जाओगे? क्या यही तुम्हारे दीन और ईमान की हक़ीक़त है?

وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ

"और जो कोई भी अपनी एड़ियों के बल लौट जायेगा वह अल्लाह का कुछ भी नुक़सान ना करेगा।"

وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝۱۴۴

"हाँ अल्लाह बदला देगा शुक्र करने वालों को।"

हज़रत उमर रज़ि० चूँकि जज़्बाती इन्सान थे लिहाज़ा रसूल अल्लाह ﷺ की वफ़ात की ख़बर सुन कर हौंसला छोड़ गये। आप रज़ि० की तक़रीबन यही कैफ़ियत फिर हुज़ूर ﷺ के इन्तेक़ाल पर हो गयी थी। आप रज़ि० तलवार सूंत कर बैठ गये थे कि जो कहेगा कि मुहम्मद ﷺ का इन्तेक़ाल हो गया है मैं उसका सर उड़ा दूँगा। हज़रत अबु बक्र रज़ि० "सानी-ए-इस्लाम व गार-ओ-बदर व क़ब्र" उस वक़्त मदीना के मज़ाफ़ात में थे। आप रज़ि० आते ही सीधे अपनी बेटी हज़रत आयशा रज़ि० के हुजरे में गये। रसूल अल्लाह ﷺ के चेहरे मुबारक पर चादर थी, आप रज़ि० ने चादर हटाई और झुक कर आँहुज़ूर ﷺ की पेशानी को बोसा दिया और रो दिये। फिर कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, मेरे माँ-बाप आप ﷺ पर क़ुर्बान! अल्लाह तआला आप ﷺ पर दो मौतें जमा नहीं करेगा। यानि अब दोबारा आप ﷺ पर मौत वारिद नहीं होगी, अब तो आप ﷺ को हयाते जावेदानी

हासिल हो चुकी है। हज़रत अबु बक्र रज़ि० बाहर आये और लोगों से ख़िताब शुरू किया तो हज़रत उमर रज़ि० बैठ गये। हज़रत अबु बक्र रज़ि० ने अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद फ़रमाया: مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ، وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ "जो कोई मुहम्मद ﷺ की इबादत करता था वह जान ले कि मुहम्मद ﷺ का इन्तेक़ाल हो चुका है, और जो कोई अल्लाह की इबादत करता था उसे मालूम हो कि अल्लाह तो ज़िन्दा है, जिसे मौत नहीं आयेगी।" इसके बाद आप रज़ि० ने यह आयत तिलावत फ़रमायी:

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَاْىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓي اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰي عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـــًٔا ۭ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝۱۴۴

हज़रत अबु बक्र रज़ि० की ज़बानी यह आयत सुन कर लोगों को ऐसे महसूस होता था कि जैसे यह आयत उसी वक़्त नाज़िल हुई हो।(1)

आयत 145

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ

"और किसी जान के लिये यह मुमकिन नहीं है कि वह मर सके मगर अल्लाह के हुक्म से"

كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۭ

"(हर एक की मौत का) वक़्त मुक़र्रर लिखा हुआ है।"

अज्ले मुअय्यन के साथ हर एक का वक़्त तय है। लिहाज़ा इन्सान की बेहतरीन मुहाफ़िज़ खुद मौत है। आपकी मौत का जो वक़्त मुक़र्रर है उससे पहले कोई आपके लिये मौत नहीं ला सकता।

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ

"जो कोई दुनिया का अज्र व सवाब चाहता है हम उसे उसमें से दे देते हैं।"

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ

"और जो वाक़िअतन आख़िरत का अज्र चाहता है हम उसे उसमें से देंगे।"

यह मज़मून सूरतुल बक़रह की आयात 200-202 में हज के सिलसिले में आ चुका है।

وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ ۝۱۴۵

"और शुक्र करने वालों को हम भरपूर जज़ा देंगे।"

आयत 146

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ

"कितने ही नबी ऐसे गुज़रे हैं कि जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने जंग की।"

ऐ मुस्लमानों! तुम्हारे साथ जो यह वाक़िया पेश आया है वह पहला तो नहीं है। अल्लाह के बहुत से नबी ऐसे गुज़रे हैं जिनकी मईयत (साथ) में बहुत सारे अल्लाह वालों ने, अल्लाह के मानने और चाहने वालों ने, अल्लाह के दीवानों और मतवालों ने, अल्लाह के गुलामों और आशिक़ों ने अल्लाह के दुश्मनों से जंगें की हैं। "ربّیٗ" और "ربّانی" का लफ्ज़ आज भी यहूदियों के यहाँ इस्तेमाल होता है।

فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

"तो अल्लाह की राह में जो भी तकलीफ़ें उन पर आयीं उस पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी"

وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۭ

"और ना उन्होंने कमज़ोरी दिखाई और ना ही (बातिल के आगे) सर निगो (सर झुकाना) हुए।"

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝۱۴۶

"और अल्लाह तआला को ऐसे ही साबिरों से मोहब्बत है।"

तो ऐ मुस्लमानों! उनका किरदार अपनाओ और दिल गिरफ्ता ना हो।

आयत 147

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْۤ اَمْرِنَا

"और उनका तो हर मरहले पर यही क़ौल होता था कि वह दुआ करते थे कि ऐ रब हमारे! बख़्श दे हमें हमारे गुनाह और अगर हमसे अपने किसी मामले में हद से तजावुज़ हो गया हो तो उसे माफ़ फ़रमा दे"

وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

"और हमारे क़दमों को जमा दे और हमारी मदद फ़रमा काफ़िरों के मुक़ाबले में।"

हज़रत तालूत के साथियों की भी यही दुआ थी और सूरतुल बक़रह के इख़्तताम पर आने वाली दुआ के अल्फ़ाज़ भी यही थे: { فَانْصُرْنَا عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ}।

आयत 148

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ

"तो उन लोगों को अल्लाह तआला ने दुनिया का सवाब भी अता फ़रमाया और आख़िरत के सवाब का भी बहुत ही उम्दा हिस्सा अता किया।"

उन्हें दुनिया की सरबुलन्दी भी दी, फ़तुहात से भी नवाज़ा और आख़िरत का बहतरीन अज्र भी अता फ़रमाया।

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴۸﴾

"और अल्लाह तआला ऐसे ही मोहसिनीन को पसंद करता है।"

आयात 149 से 155 तक

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿۱۵۰﴾ سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۲﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَاۗىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَاۗىِٕفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۵۵﴾

आयत 149

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ

"ऐ अहले ईमान! अगर तुम उन लोगों का कहना मानोगे जिन्होंने कुफ़्र की रविश

इख़्तियार की है तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल वापस ले जायेंगे"

"फिर तुम बिल्कुल नामुराद होकर रह जाओगे।" فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

आयत 150

"हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा मौला तो अल्लाह है।" بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ

तुम्हें यह समझना चाहिये कि तुम्हारा मौला, मददगार, पुश्तपनाह, साथी और हिमायती अल्लाह है।

"और वही है जो सबसे अच्छा मददगार है।" وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

आयत 151

"हम अनक़रीब काफ़िरों के दिलों में रौब डाल देंगे" سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ

"इस सबब से कि उन्होंने ऐसी चीज़ों को अल्लाह का शरीक ठहराया जिनके हक़ में उसने कोई सनद नहीं उतारी।" بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ

"और उनका ठिकाना जहन्नम है, और बहुत ही बुरा ठिकाना है उन ज़ालिमों के लिये।" وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾

इस आयत में दरअसल तौजीह (खुलासा) बयान हो रही है कि गज़वा-ए-ओहद में मुशरिकीन वापस क्यों चले गये, जबकि उनको इस दर्जा खुली फ़तह हासिल हो चुकी थी और मुस्लमानों को हज़ीमत उठाना पड़ी थी। रसूल अल्लाह ﷺ और सहाबा किराम रज़ि० ने पहाड़ के ऊपर चढ़ कर पनाह ले ली थी। खालिद बिन वलीद कह रहे थे कि हमें उनका तअक़्क़ुब करना चाहिये और इस मामले को ख़त्म कर देना चाहिये। लेकिन अबु सुफ़ियान के दिल में अल्लाह ने उस वक़्त ऐसा रौब डाल दिया कि वह लश्कर को लेकर वहाँ से चले गये। वरना वाक़िअतन उस वक़्त सूरते हाल बहुत मख्दूश (बुरी) हो चुकी थी।

आयत 152

"और अल्लाह ने तो तुमसे (ताइद व नुसरत का) जो वादा किया था वह पूरा कर दिया जबकि तुन उनको तहे तैग़ (क़त्ल) कर रहे थे अल्लाह के हुक्म से।" وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ

गज़वा-ए-ओहद में जो आरज़ी शिकस्त हो गयी थी और मुस्लमानों को ज़क पहुँची थी, जिससे उनके दिल ज़ख़्मी थे उसके ज़िमन में अब यह आयत एक क़ौले फ़ैसल के अंदाज़ में आयी है कि देखो मुस्लमानों! तुम हमसे कोई शिकायत नहीं कर सकते, अल्लाह ने तुमसे ताइद व नुसरत का जो वादा किया था वह पूरा कर दिया था जबकि तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, गाजर-मूली की तरह काट रहे थे। तुम्हें फ़तह हासिल हो गयी थी और हमारा वादा पूरा हो चुका था।

"यहाँ तक कि जब तुम ढीले पड़ गये और अम्र में तुमने झगड़ा किया" حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ

فَشِلْتُمْ का तर्जुमा बाज़ मुतर्जिमीन ने कुछ और भी किया है, लेकिन मेरे नज़दीक यहाँ नज़म (Discipline) को ढीला करना मुराद है। इस्लामी नज़मे जमाअत में सम-ओ-ताअत (Listen & Obey) को बुनियादी अहमियत हासिल है, और ज़ाहिर है कि सम-ओ-ताअत में एक ही शख्स की इताअत मक़सूद नहीं होती। रसूल अल्लाह ﷺ की इताअत भी फ़र्ज़ थी और आप ﷺ अगर किसी को अमीर मुक़र्रर करते तो उसकी इताअत

भी फ़र्ज़ थी। हज़रत अबु हुरैरा रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

مَنْ اَطَاعَنِیْ فَقَدْ اَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَانِیْ فَقَدْ عَصَی اللهَ، وَمَنْ اَطَاعَ اَمِیْرِیْ فَقَدْ اَطَانِیْ، وَمَنْ عَصٰی اَمِیْرِیْ فَقَدْ عَصَانِیْ

"जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की। और जिसने मेरे मुक़र्रर करदा अमीर की इताअत की उसने मेरी इताअत की, और जिसने मेरे नामज़दकरदा अमीर की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की।"

अगरचे रसूल अल्लाह ﷺ के हुक्म की तो उन्होंने तावील कर ली थी कि हुज़ूर ﷺ ने जो यह फ़रमाया था कि अगर हम सब भी अल्लाह की राह में क़त्ल हो जायें और तुम देखो कि चीलें और कव्वे हमारा गोश्त खा रहे हैं तब भी यहाँ से ना हटना, तो यह शिकस्त की सूरत में था, लेकिन अब तो फ़तह हो गयी है। चुनाँचे उन्होंने जान-बूझ कर अल्लाह के रसूल ﷺ के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी नहीं की थी। लेकिन उन्होंने अपने मक़ामी अमीर (लोकल कमांडर) के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की थी। मेरे नज़दीक यहाँ "وَعَصَيْتُمْ" से यही हुक्म अदूली मुराद है, इस्लामी नज़मे जमाअत में ऊपर से लेकर नीचे तक, सिपहसालार से लेकर लोकल कमांडर तक, दर्जा-ब-दर्जा निज़ामे सम-ओ-ताअत की पाबंदी ज़रूरी है। फ़ौज का एक सिपहसालार है, लेकिन फिर पूरी फ़ौज के कई हिस्से होते हैं और हर एक का एक अमीर होता है। मैसरह, मेमना, क़ल्ब और हरावल दस्ते वगैरह, हर एक का एक कमांडर होता है। अब अगर उन कमांडरों के अहकाम से सरताबी होगी तो ऐसी फ़ौज का जो अंजाम होगा वह मालूम है। चुनाँचे एक जमाअत के अन्दर दर्जा-ब-दर्जा जो भी निज़ामे सम-ओ-ताअत है उसकी पूरी-पूरी पाबन्दी ज़रूरी है।

وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ

"और तुमने नाफ़रमानी की इसके बाद कि तुमने वह चीज़ देख ली जो तुम्हें महबूब है।"

{عَصَيْتُمْ } के बारे में वज़ाहत हो चुकी है कि इससे मुराद अल्लाह के रसूल ﷺ की नाफ़रमानी नहीं, बल्कि लोकल कमांडर की नाफ़रमानी है। { مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ } से अक्सर मुफ़स्सिरीन ने माले ग़नीमत मुराद लिया है, कि दर्रे पर मामूर हज़रात माले ग़नीमत की तलब में दर्रा छोड़ कर चले गये, लेकिन मेरे नज़दीक यह बात दुरुस्त नहीं है। इसलिये कि माले ग़नीमत की तक़सीम का क़ानून तो गज़वा-ए-बद्र के बाद सूरतुल अन्फ़ाल में नाज़िल हो चुका था। उसकी रू से चाहे कोई शख्स कुछ जमा करे या ना करे उसे माले ग़नीमत में से बराबर का हिस्सा मिलेगा। यहाँ { مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ} से मुराद दरअसल "फ़तह" है और इसके लिये "القُرآن يُفسِّر بعضُه بَعضًا" की रू से सूरतुस्सफ़ की यह आयत (आयत:13) हमारी रहनुमाई करती है: { وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ۭ نَصْرٌ مِّنَ اللهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ۭ} गोया बंदा-ए-मोमिन को दुनिया में फ़तह व नुसरत महबूब होती है, लेकिन उसे इसको अपना मक़सूद नहीं बनाना। उसका मक़सूद अल्लाह की रज़ाजोई और अपने फ़र्ज़ की अदायगी है। बाक़ी कामयाबी या नाकामी अल्लाह की मर्ज़ी और उसकी हिकमत के तहत होती है। अल्लाह कब फ़तह लाना चाहता है वह बेहतर जानता है।

مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا

"तुम में से वह भी हैं जो दुनिया चाहते हैं"

यानि वह ख्वाहिश रखते हैं कि दुनिया में फ़तह व नुसरत और कामयाबी हासिल हो जाये, हमारा बोल-बाला हो जाये, हमारी हुकूमत क़ायम हो जाये।

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ

"और तुम में से वह भी हैं जो सिर्फ़ आख़िरत के तलबगार हैं।"

ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ

"फिर अल्लाह ने तुम्हारा रुख फेर दिया उनकी तरफ़ से ताकि तुम्हारी आज़माइश करे।"

पहले वह भाग रहे थे और तुम उनका तअक्कुब कर रहे थे, अब मामला उल्टा हो गया कि तुम पसपा (पीछे हटना) हो गये और अपनी जानें बचाने

के लिये इधर-उधर जाये पनाह (बचने की जगह) ढूँढने लगे। तुम्हारी यह पसपाई तुम्हारे लिये आज़माइश थी।

"और अल्लाह तुम्हें माफ़ कर चुका है।" وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ

तुम में से जिस किसी से जो भी खता हुई अल्लाह ने उसे माफ़ फ़रमा दिया।

"और अल्लाह तआला अहले ईमान के हक़ में बहुत फ़ज़ल वाला है।" وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾

आयत 153

"याद करो, जबकि तुम (पहाड़ पर) चढ़े चले जा रहे थे (जान बचाने के लिये) और किसी की तरफ़ मुड़ कर भी नहीं देख रहे थे" اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى اَحَدٍ

"और रसूल (ﷺ) तुम्हें पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे से" وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ

ग़ज़वा-ए-ओहद में खालिद बिन वलीद के अचानक हमले से एक भगदड़ सी मच गयी थी। बाज़ सहाबा रज़ि० ने रसूल अल्लाह ﷺ को अपने हिफ़ाज़ती हिसार में ले लिया था और उन्होंने अपने जिस्मों को ढाल बना कर आँहुज़ूर ﷺ की हिफ़ाज़त की। बहुत से लोग सरासीमा (भौचक्के) होकर अपनी जान बचाने की खातिर भाग खड़े हुए। बाज़ कोहे ओहद पर चढ़े जा रहे थे। अल्लाह के रसूल ﷺ उन्हें पुकार-पुकार कर वापस बुला रहे थे।

"तो अल्लाह तआला तुम पर ग़म के बाद ग़म मुसलसल डालता रहा" فَاَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ

"ताकि (आइन्दा के लिये तुम्हें यह सबक़ मिले कि) तुम ग़मगीन ना हुआ करो उस पर कि जो तुम्हारे हाथ से जाता रहे और ना उस तकलीफ़ पर कि जो तुम पर आ पड़े।" لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ

यानि *"रन्ज से खूंगर हुआ इन्सान तो मिट जाता है रन्ज!"* आदमी को अगर कभी इत्तेफ़ाक़न ही रन्ज व ग़म का सामना करना पड़े तो उसका असर बहुत ज़्यादा होता है, लेकिन जब पे-दर-पे रन्ज व ग़म उठाने पड़ें तो उनकी शिद्दत में कमी वाक़ेअ हो जाती है। दामने ओहद में मुसलमानों को पे-दर-पे तकालीफ़ बर्दाश्त करना पड़ीं। सबसे बड़ा रन्ज जो पेश आया वह हुज़ूर ﷺ के इन्तेक़ाल की ख़बर थी, जिस पर किसी को अपने तन-बदन का तो होश ही नहीं रहा कि खुद उसको क्या ज़ख्म लगा है। इस तरह अल्लाह तआला ने उस वक़्त की कैफ़ियत में एक तख़्फ़ीफ़ पैदा कर दी।

"और अल्लाह बाख़बर है उससे जो तुम कर रहे थे।" وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

आयत 154

"फिर उस ग़म के बाद अल्लाह तआला ने तुम पर इत्मिनान नाज़िल फ़रमाया" ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً

"यानि नींद जो तुम में से एक गिरोह पर तारी हो गयी" نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ

इन्सान को नींद जो आती है यह इत्मिनाने क़ल्ब का मज़हर होती है कि जैसे अब उसने सब कुछ भुला दिया। ऐन हालते जंग में ऐसी कैफ़ियत अल्लाह की रहमत का मज़हर थी।

"और एक गिरोह ऐसा था कि जिन्हें अपनी जानों की पड़ी हुई थी" وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ

يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ

"वह अल्लाह के बारे में नाहक़ जहालत वाले गुमान कर रहे थे।"

अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके तीन सौ साथी तो मैदाने जंग के रास्ते ही से वापस हो गये थे। उसके बाद भी अगर मुसलमानों की जमात में कुछ मुनाफ़िक़ीन बाक़ी रह गये थे तो उनका हाल यह था कि उस वक़्त उन्हें अपनी जानों के लाले पड़े हुए थे। ऐसी कैफ़ियत में उन्हें ऊँघ कैसे आती? उनका हाल तो यह था कि उनके दिलों में वसवसे आ रहे थे कि अल्लाह ने तो मदद का वादा किया था, लेकिन वह वादा पूरा नही हुआ, अल्लाह की बात सच्ची साबित नहीं हुई। इस तरह उनके दिल व दिमाग में खिलाफ़े हक़ीक़त ज़माना-ए-जाहिलियत के गुमान पैदा हो रहे थे।

يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

"वह कह रहे थे कि हमारे लिये भी इख़्तियार में कोई हिस्सा है या नहीं?"

यह वह लोग हो सकते हैं जिन्होंने जंग से क़ब्ल मशवरा दिया था (जैसे हुज़ूर ﷺ की अपनी राय भी थी) कि मदीने के अन्दर महसूर (बंद) रह कर जंग की जाये। जब उनके मशवरे पर अमल नही हुआ तो वह कहने लगे कि इन मामलात में हमारा भी कोई इख़्तियार है या सारी बात मुहम्मद (ﷺ) ही की चलेगी? यह भी जमाती ज़िन्दगी की एक ख़राबी है कि हर शख़्स चाहता है कि मेरी बात भी मानी जाये, मेरी राय को भी अहमियत दी जाये। आख़िर हम सब अपने अमीर ही की राय क्यों मानते चले जायें? हमारा भी कुछ इख़्तियार है या नहीं?

قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ

"कह दीजिये कि सारा मामला अल्लाह के इख़्तियार में है।"

يُخْفُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ

"(ऐ नबी ﷺ) यह अपने दिल में वह बात छुपा रहे हैं जो आप पर ज़ाहिर नहीं कर रहे।"

उनके दिल में क्या है, अब अल्लाह खोल कर बता रहा है।

يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ

"यह (अपने दिल में) कहते हैं कि अगर इख़्तियार में हमारा भी कुछ हिस्सा होता तो हम यहाँ ना मारे जाते।"

अगर हमारी राय मानी जाती, हमारे मशवरे पर अमल होता तो हम यहाँ क़त्ल ना होते। यानि हमारे इतने लोग यहाँ पर शहीद ना होते।

قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ

"इनसे कहिये अगर तुम सबके सब अपने घरों में होते"

لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ

"तब भी जिन लोगों का क़त्ल होना मुक़द्दर था वह अपनी क़त्लगाहों तक पहुँच कर रहते।"

अल्लाह की मशीयत (मर्ज़ी) में जिनके लिये तय था कि उन्हें शहादत की खलअत फाखरह (लिबास) पहनाई जायेगी वह खुद-ब-खुद अपने घरों से निकाल आते और कशां-कशां (एक-एक करके) उन जगहों पर पहुँच जाते जहाँ उन्होंने खलअत शहादत ज़ेब तन करनी (पहननी) थी। यह तो अल्लाह तआला के फ़ैसले होते हैं, तुम्हारी तदबीर से उनका कोई ताल्लुक़ नहीं है।

وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ

"और यह (मामला जो पेश आया) इसलिये था कि अल्लाह उसे आज़मा ले जो कुछ तुम्हारे सीनों में था"

وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ

"और ताकि वह बिल्कुल पाक और खालिस कर दे जो कुछ तुम्हारे दिलों में है।"

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

"और अल्लाह तआला सीनों के अन्दर मख़्फी (छुपी) बातों को भी जानता है।"

आयत 155

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ

"तुम में से वह लोग जो मैदाने जंग से चले गये उस दिन जब दो गिरोह एक-दूसरे के मुक़ाबले में आये"

यह ऐसे मुख्लिस हज़रात का तज़किरा है जो अचानक हमले के बाद जंग की शिद्दत से घबरा कर अपनी जान बचाने के लिये वक़्ती तौर पर पीठ फेर गये। उनमें से कुछ लोग कोहे ओहद पर चढ़ गये थे और कुछ उससे ज़रा आगे बढ़ कर मैदान ही से बाहर चले गये थे। उनमें बाज़ कबार (सीनियर) सहाबा का नाम भी आता है। दरअसल यह भगदड़ मच जाने के बाद ऐसी अज़तरारी (emergency) कैफ़ियत थी कि उसमें किसी से भी किसी ज़ौफ़ (कमी) और कमज़ोरी का इज़हार हो जाना बिल्कुल क़रीने क़यास (मुमकिन सी) बात है।

إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا

"असल में शैतान ने उनके पाँव फिसला दिये थे उनके बाज़ अफ़आल (कामों) की वजह से।"

किसी वक़्त कोई तक़सीर (गलती) हो गयी हो, कोई कोताही हो गयी हो, या किसी कमज़ोरी का इज़हार हो गया हो, यह मुख्लिस मुसलमानों से भी बईद (दूर) नहीं। ऐसा मामला हर एक से पेश आ सकता है। मासूम तो सिर्फ़ नबी होते हैं। इंसानी कमज़ोरियों की वजह से शैतान को मौक़ा मिल जाता है कि किसी वक़्त वह अड़ंगा लगा कर उस शख्स को फिसला दे, ख्वाह वह कितना ही नेक और कितना ही साहिबे रुतबा हो।

وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ

"और अल्लाह उन्हें माफ़ कर चुका है।"

यह अल्फ़ाज़ बहुत अहम हैं। बाज़ गुमराह फिरक़े इस बात को बहुत उछालते हैं और बाज़ सहाबा किराम रज़ि० की तौहीन करते हैं, उन पर तनक़ीद (आलोचना) करते हैं कि यह मैदाने जंग से पीठ दिखा कर भाग गये थे। लेकिन वह यह भूल जाते हैं कि अल्लाह तआला उनकी माफ़ी का ऐलान कर चुका है। इसके बाद अब किसी मुस्लमान के लिये जायज़ नहीं है कि उन पर ज़बाने तअन दराज़ (निंदा) करे।

إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾

"यक़ीनन अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाने वाला और बुर्दबार है।"

आयात 156 से 180 तक

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي
الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ
حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾ وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾ وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ
لَاِاَلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ
الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ
فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾ اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا
غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۚ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ
تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ
بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ
اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا
مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾ اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ
اَنّٰى هٰذَا ۭ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَآ اَصَابَكُمْ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚ

بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝۱۸۰

आयत 156

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

"ऐ अहले ईमान! तुम उन लोगों की मानिंद ना हो जाना जिन्होंने कुफ़्र किया"

وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ

"और जिन्होंने अपने भाइयों के बारे में जबकि वह ज़मीन में सफ़र पर निकले हुए थे या किसी जिहाद में शरीक थे (और वहाँ उनका इन्तेक़ाल हो गया) कहा कि अगर वह हमारे पास होते तो ना मरते, ना क़त्ल होते।"

हर शख्स की मौत का वक़्त तो मुअय्यन है। वह अगर तुम्हारी गोद में बैठे हो तब भी मौत आ जायेगी। चाहे वह बहुत ही मज़बूत पहरे वाले क़िलों में हों मौत तो वहाँ भी पहुँच जायेगी। तो तुम इस तरह की बातें ना करो। यह तो काफ़िरों के अन्दाज़ की बातें हैं कि अगर हमारे पास होते और जंग में ना जाते तो बच जाते। यह सारी बातें दरहक़ीक़त ईमान के मनाफ़ी हैं। एक हदीस में आता है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ((فَاِنَّ لَوْ تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطَانِ))[1] "काश का लफ्ज़ शैतान के अमल का दरवाज़ा खोल देता है।" यानि यह कहना कि काश ऐसे हो जाता तो यूँ हो जाता, इस कलमे ही से शैतान का अमल शुरू हो जाता है। जो हुआ इसलिये हुआ कि अल्लाह तआला को उसका होना मंज़ूर था, उसकी हिकमतें उसे मालूम हैं, हम उसकी हिकमत का इहाता नहीं कर सकते।

وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا
لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا
لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ۝۱۶۷ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا
لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۱۶۸
وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ
۝۱۶۹ فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ
خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۱۷۰ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ
وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۱۷۱ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ
مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝۱۷۲ اَلَّذِيْنَ
قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا
حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ۝۱۷۳ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ
سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ۝۱۷۴ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ
اَوْلِيَآءَهٗ ۖ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۱۷۵ وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ
يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي
الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝۱۷۶ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا
اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۱۷۷ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ
لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝۱۷۸ مَا كَانَ اللّٰهُ
لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝۱۷۹ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ

لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

"(यह बात इसलिये इनकी ज़ुबान पर आती है) ताकि अल्लाह इसको उनके दिलों में हसरत का बाइस बना दे।"

इस क़िस्म की बातों से अल्लाह तआला उनके दिलों में हसरत की आग जला देता है। यह भी गोया उनके कुफ़्र की सज़ा है।

وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ

"और देखो अल्लाह ही ज़िन्दा रखता है और वही मौत वारिद करता है।"

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۵۶﴾

"और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।"

आयत 157

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ

"और अगर तुम अल्लाह की राह में क़त्ल हो जाओ या वैसे ही तुम्हें मौत आ जाये"

لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

"तो अल्लाह तआला की तरफ़ से जो मग़फ़िरत और रहमत तुम्हें मिलेगी वह कहीं बेहतर है उन चीज़ों से जो यह जमा कर रहे हैं।"

अगर दुनिया में 10-15 साल और जी लेते तो क्या कुछ जमा कर लेते? अल्लाह तआला ने तुम्हें शहादत की मौत दे दी, तुम्हारे लिये इससे बड़ी सआदत और क्या होगी!

आयत 158

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِاَلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

"और चाहे तुम मरो या क़त्ल हो, बहरहाल अल्लाह ही के पास इकट्ठे किये जाओगे।"

चाहे तुम्हें अपने बिस्तरों पर मौत आये और चाहे तुम क़त्ल हो, हर हाल में तुम्हें अल्लाह की जनाब में हाज़िर कर दिया जायेगा। तुम्हारी आखरी मंज़िल तो वही है, ख्वाह तुम बिस्तर पर पड़े हुए दम तोड़ दो या मैदाने जंग के अन्दर जामे शहादत नोश कर लो।

आयत 159

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ

"(ऐ नबी ﷺ!) यह तो अल्लाह की रहमत है कि आप इनके हक़ में बहुत नर्म हैं।"

इस सूरह मुबारका की यह आयत भी बड़ी अहम है। जमाअती ज़िन्दगी में जो भी अमीर हो, साहिबे अम्र हो, जिसके पास ज़िम्मेदारियाँ हों, जिसके गिर्द उसके साथी जमा हों, उसे यह ख्याल रहना चाहिये कि आख़िर वह भी इन्सान हैं, उनके भी कोई जज़्बात और अहसासात हैं, उनकी इज़्ज़ते नफ्स भी है, लिहाज़ा उनके साथ नरमी की जानी चाहिये, सख्ती नहीं। वह कोई मुलाज़िम नहीं हैं, बल्कि रज़ाकार (volunteers) हैं। आँहुज़ूर ﷺ के साथ जो लोग थे वह कोई तनख्वाह याफ्ता सिपाही तो नहीं थे। यह लोग ईमान की बुनियाद पर जमा हुए थे। अब भी कोई दीनी जमाअत वजूद में आती है तो जो लोग उसमें काम कर रहे हैं वह दीनी जज़्बे के तहत जुड़े हुए हैं, लिहाज़ा उनके उमरा को उनके साथ नर्म रवैय्या इख़्तियार करना चाहिये। रसूल अल्लाह ﷺ को मुख़ातिब करके कहा जा रहा है कि यह अल्लाह की रहमत का मज़हर है कि आप ﷺ इनके हक़ में बहुत नर्म हैं।

وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ

"और अगर आप ﷺ तंदखू और सख्त दिल होते तो यह आप ﷺ के इर्द-गिर्द से मुन्तशिर हो जाते।"

कोई कारवाँ से टूटा, कोई बदगुमाँ हरम से
कि अमीर कारवाँ में नहीं खोये दिल नवाज़ी!

"पस आप उनसे दरगुज़र करें" فَاعْفُ عَنْهُمْ

चूँकि बाज़ सहाबा रज़ि० से इतनी बड़ी गलती हुई थी कि उसके नतीजे में मुसलमानों को बहुत बड़ा चरका लगा था, लिहाज़ा आँहुज़ूर ﷺ से कहा जा रहा है कि अपने इन साथियों के लिये अपने दिल में मैल मत आने दीजिये। इनकी गलती और कोताही को अल्लाह ने माफ़ कर दिया है तो आप ﷺ भी इन्हें माफ़ कर दें। आम हालात में भी आप इन्हें माफ़ करते रहा करें।

"और इनके लिये मगफ़िरत तलब करें" وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ

इनसे जो भी खता हो जाये उस पर इनके लिये इस्तगफ़ार किया करें।

"और मामलात में इनसे मशवरा लेते रहें।" وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ

ऐसा तर्ज़े अमल इख़्तियार ना करें कि आइन्दा उनकी कोई बात नहीं सुननी, बल्कि उनको भी मशवरे में शामिल रखिये। इससे भी बाहमी ऐतमाद पैदा होता है कि हमारा अमीर हमसे मशवरा करता है, हमारी बात को भी अहमियत देता है। यह भी दरहक़ीक़त इज्तमाई ज़िन्दगी के लिये बहुत ही ज़रूरी बात है।

"फिर जब आप फ़ैसला कर लें तो अब अल्लाह पर तवक्कुल करें।" فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ

मशवरे के बाद जब आप ﷺ का दिल किसी राय पर मुत्मईन हो जाये और आप एक फ़ैसला कर लें तो अब किसी शख्स की बात की परवाह ना करें, अब सारा तवक्कुल अल्लाह की ज़ात पर हो। गज़वा-ए-ओहद से पहले रसूल अल्लाह ﷺ ने मशवरा किया था, उस वक़्त कुछ लोगों की राय वही थी जो आँहुज़ूर ﷺ की राय थी, यानि मदीना में महसूर होकर जंग की जाये। लेकिन कुछ हज़रात ने कहा हम तो खुले मैदान में जंग करना चाहते हैं, हमें तो शहादत की मौत चाहिये तो हुज़ूर ﷺ ने उनकी रिआयत की और बाहर निकलने का फ़ैसला फ़रमा दिया। इसके फ़ौरन बाद जब आप ﷺ हज़रत आयशा के हुजरे से बरामद हुए तो खिलाफ़े मामूल आप ﷺ ने ज़िरह पहनी हुई थी और हथियार लगाये हुए थे। इससे लोगों को अंदाज़ा हो गया कि कुछ सख्त मामला पेश आने वाला है। चुनाँचे उन लोगों ने कहा हुज़ूर ﷺ हम अपनी राय वापस लेते हैं, जो आप ﷺ की राय है आप उसके मुताबिक़ फ़ैसला कीजिये। लेकिन आप ﷺ ने फ़रमाया कि नहीं, यह फ़ैसला बरक़रार रहेगा। नबी को यह ज़ेबा नहीं है कि हथियार बाँधने के बाद जंग किये बगैर उन्हें उतार दे। यह आयत गोया नही अकरम ﷺ के तर्ज़े अमल की तौसीक़ में नाज़िल हुई है कि जब आप एक फ़ैसला कर लें तो अल्लाह पर तवक्कुल कीजिये।

"यक़ीनन अल्लाह तआला तवक्कुल करने वालों को पसंद करता है।" إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾

आयत 160

"(ऐ मुसलमानों! देखो) अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा तो कोई तुम पर ग़ालिब नही आ सकता।" إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ

"और अगर वह तुम्हें छोड़ दे (तुम्हारी मदद से दस्त-कश हो जाये) तो कौन है जो तुम्हारी मदद करेगा इसके बाद?" وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ

"और अल्लाह ही पर तवक्कुल करना चाहिये ईमान वालों को।" وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾

आयत 161

"और किसी नबी की यह शान नहीं है कि वह ख्यानत करे।" وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ

غَلَّ يَغُلُّ غُلُوْلًا के मायने हैं ख्यानत करना और माले ग़नीमत में से किसी चीज़ का चोरी कर लेना, जबकि غَلَّ يَغِلُّ غِلًّا के मायने दिल में कीना होने के हैं। रिवायात में आता है कि आँहुज़ूर ﷺ पर मुनाफ़िक़ों ने इल्ज़ाम लगाया था कि आप ﷺ ने माले ग़नीमत में कोई ख्यानत की है (माज़ अल्लाह सुम्मा माज़ अल्लाह!) यह उस इल्ज़ाम का जवाब दिया जा रहा है कि किसी नबी ﷺ की शान नहीं है कि वह ख्यानत का इरतकाब करे। अलबत्ता मौलाना इस्लाही साहब ने यह राय ज़ाहिर की है कि इस लफ्ज़ को सिर्फ़ माली ख्यानत के साथ मखसूस करने की कोई दलील नहीं। यह दरअसल मुनाफ़िक़ीन के उस इल्ज़ाम की तरदीद (इन्कार) है जो उन्होंने ओहद की शिकस्त के बाद रसूल अल्लाह ﷺ पर लगाया था कि हमने तो इस शख्स पर ऐतमाद किया, इसके हाथ पर बैत की, अपने नेक व बद का इसको मालिक बनाया, लेकिन यह इस ऐतमाद से बिल्कुल गलत फ़ायदा उठा रहे हैं और हमारे जान व माल को अपने ज़ाती हुसूलों और उमंगों के लिये तबाह कर रहे हैं। यह अरब पर हुकूमत करना चाहते हैं और इस मक़सद के लिये इन्होंने हमारी जानों को तख्ता-ए-मश्क़ बनाया है। यह सरीहन क़ौम की बदख्वाही और उसके साथ गद्दारी व बेवफ़ाई है। क़ुरान ने उनके इस इल्ज़ाम की तरदीद फ़रमायी है कि तुम्हारा यह इल्ज़ाम बिल्कुल झूठ है, कोई नबी अपनी उम्मत के साथ कभी बेवफ़ाई और बदअहदी नहीं करता। नबी जो क़दम भी उठाता है रज़ा-ए-इलाही की तलब में और उसके अहकाम के तहत उठाता है।

وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

"और जो कोई ख्यानत करेगा तो वह अपनी ख्यानत की हुई चीज़ समेत हाज़िर होगा क़यामत के दिन।"

अल्लाह तआला के क़ानून-ए-जज़ा-ओ-सज़ा से एक नबी से बढ़ कर कौन बाख़बर होगा?

ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾

"फिर हर जान को पूरा-पूरा दे दिया जायेगा जो कुछ उसने कमाया होगा और उन पर कुछ ज़ुल्म ना होगा।"

नोट कीजिये लफ्ज़ "تُوَفّٰى" यहाँ भी पूरा-पूरा दे दिये जाने के मायने में आया है।

आयत 162

اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ

"तो क्या भला वह शख्स जिसने अल्लाह की रज़ा की पैरवी की उसकी मानिंद हो जायेगा जो अल्लाह के ग़ज़ब और गुस्से को कमा कर लौटा?"

وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ

"और उसका ठिकाना जहन्नम है।"

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾

"और वह बहुत ही बुरी जगह है पहुँचने की।"

आयत 163

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

"उनकी भी दर्जाबंदियाँ हैं अल्लाह के यहाँ।"

जैसे नेकोकारों के दर्जे हैं इसी तरह वहाँ बदकारों के भी दर्जे हैं। सब बदकार बराबर नहीं और सब नेकोकार बराबर नहीं।

وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾

"और जो कुछ यह कर रहे हैं अल्लाह उसे देख रहा है।"

अब आगे जो आयत आ रही है, यह मज़मून सूरतुल बक़रह में दो मरतबा आ चुका है। पहली मरतबा सूरतुल बक़रह के पंद्रहवें रुकूअ में हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माइल अलै० की दुआ (आयत:129) में यह मज़मून बाअल्फ़ाज़ आया था:

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ

फिर अट्ठारहवें रुकूअ के आख़िर में यह अल्फ़ाज़ आये थे (आयत 151):

كَمَآ اَرۡسَلۡنَا فِيۡكُمۡ رَسُوۡلًا مِّنۡكُمۡ يَتۡلُوۡا عَلَيۡكُمۡ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيۡكُمۡ وَيُعَلِّمُكُمُ الۡكِتٰبَ وَالۡحِكۡمَةَ وَيُعَلِّمُكُمۡ مَّا لَمۡ تَكُوۡنُوۡا تَعۡلَمُوۡنَ ۝

अब यह मज़मून तीसरी मरतबा यहाँ आ रहा है:

आयत 164

لَقَدۡ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ

"दरहक़ीक़त अल्लाह ने यह बहुत बड़ा अहसान किया है अहले ईमान पर"

اِذۡ بَعَثَ فِيۡهِمۡ رَسُوۡلًا مِّنۡ اَنۡفُسِهِمۡ

"जब उनमें उठाया एक रसूल ﷺ उन्ही में से"

यानि उनकी अपनी क़ौम में से।

يَتۡلُوۡا عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِهٖ

"जो तिलावत करके उन्हें सुनाता है उसकी आयात"

وَيُزَكِّيۡهِمۡ

"और उन्हें पाक करता है"

وَيُعَلِّمُهُمُ الۡكِتٰبَ وَالۡحِكۡمَةَ

"और तालीम देता है उन्हें किताब व हिकमत की।"

यह इन्क़लाबे नबवी ﷺ के असासी मन्हाज के चार अनासिर हैं, जिन्हें क़ुरान इसी तरतीब से बयान करता है: तिलावते आयात, तज़किया और तालीम किताब व हिकमत। हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माइल अलै० की दुआ में जो तरतीब थी, अल्लाह ने उसको तब्दील किया है। इस पर सूरतुल बक़रह आयत 151 के ज़ेल में गुफ्तगू हो चुकी है।

وَاِنۡ كَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ۝

"और यक़ीनन इससे पहले (यानि रसूल ﷺ की आमद से क़ब्ल) तो वह लाज़िमन खुली गुमराही के अन्दर मुब्तला थे।"

आयत 165

اَوَلَمَّاۤ اَصَابَتۡكُمۡ مُّصِيۡبَةٌ قَدۡ اَصَبۡتُمۡ مِّثۡلَيۡهَا ۙ قُلۡتُمۡ اَنّٰى هٰذَا ؕ

"और क्या जब तुम पर एक मुसीबत आयी, जबकि तुम उससे दोगुनी मुसीबत उनको पहुँचा चुके हो तो तुम कहने लगे कि यह कहाँ से आ गई?"

यानि यह क्यों हो गया? अल्लाह ने पहले मदद की थी, अब क्यों नहीं की?

قُلۡ هُوَ مِنۡ عِنۡدِ اَنۡفُسِكُمۡ ؕ

"(ऐ नबी ﷺ) कह दीजिये यह तुम्हारे अपने नफ्सों (की शरारत की वजह) से हुआ है।"

गलती तुमने की थी, अमीर के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी तुमने की थी, जिसका खामियाज़ा तुमको भुगतना पड़ा।

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝

"यक़ीनन अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है।"

गोया उसी मज़मून को यहाँ दोहरा कर लाया गया है जो पीछे आयत 152 में बयान हो चुका है कि अल्लाह तो वादा अपना कर चुका था और तुम दुश्मन पर ग़ालिब आ चुके थे, मगर तुम्हारी अपनी गलती की वजह से जंग का पांसा पलट गया। अल्लाह चाहता तो तुम्हें कोई सज़ा ना देता, बगैर सज़ा दिये माफ़ कर देता, लेकिन अल्लाह की हिकमत का तक़ाज़ा यह हुआ कि तुम्हें सज़ा दी जाये। इसलिये कि अभी तो बड़े-बड़े मराहिल आने हैं। अगर इसी तरह तुम नज़म को तोड़ते रहे और अहकाम की खिलाफ़वर्ज़ी करते रहे तो फिर तुम्हारी हैसियत एक जमाअत की तो नहीं होगी, फिर तो एक अनबूह होगा, "हुजूम-ए-मोमिनीन" होगा, जबकि अल्लाह के दीन को ग़ालिब करने के लिये एक मुनज्ज़म जमाअत, लश्कर, फ़ौज, हिज़बुल्लाह दरकार है।

आयत 166

"और जो भी मुसीबत तुम पर आयी है उस दिन जब दोनों लश्कर आपस में भिड गये थे वह अल्लाह के इज़्न से आयी है"

وَمَآ اَصَابَكُمۡ يَوۡمَ الۡتَقَى الۡجَمۡعٰنِ فَبِاِذۡنِ اللّٰهِ

अल्लाह के इज़्न के बगैर तो यह तकलीफ़ नहीं आ सकती थी।

"और यह इसलिये थी कि अल्लाह ज़ाहिर कर दे ईमान वालों को।"

وَلِيَعۡلَمَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۙ﴿۱۶۷﴾

यह ज़ाहिर हो जाये कि कौन हैं असल मोमिन, हक़ीक़ी मोमिन जो सब्र व इस्तक़ामत का मुज़ाहिरा करते हैं।

आयत 167

"और ताकि उन लोगों को भी ज़ाहिर कर दे जिन्होंने मुनाफ़क़त इख़्तियार की।"

وَلِيَعۡلَمَ الَّذِيۡنَ نَافَقُوۡا ۚ

"لِيَعۡلَمَ" के मायने हैं "ताकि जान ले" --- लेकिन चूँकि अल्लाह तआला हर चीज़ का जानने वाला है लिहाज़ा ऐसे मक़ामात पर तर्जुमा किया जाता है: "ताकि अल्लाह ज़ाहिर कर दे।" जैसा की अल्लाह तआला ने वाक़िअतन ज़ाहिर कर दिया कि कौन मोमिन है और कौन मुनाफ़िक़! अब्दुल्लाह बिन उबई अपने तीन सौ साथियों को लेकर चला गया तो सब पर उनका निफ़ाक़ ज़ाहिर हो गया। अब आइन्दा अहले ईमान उनकी बात पर ऐतबार तो नहीं करेंगे, उनकी चिकनी-चुपड़ी बातें कान लगा कर तो नहीं सुनेंगे। तो अल्लाह तआला ने चाहा कि यह बिल्कुल वाज़ेह हो जाये कि Who is who & What is what?

"और उन (मुनाफ़िक़ों) से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में जंग करो या (कम से कम शहर का) दिफ़ा (बचाव) करो।"

وَقِيۡلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡا قَاتِلُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَوِ ادۡفَعُوۡا ؕ

अब्दुल्लाह बिन उबई जब अपने तीन सौ आदमियों को लेकर वापस जा रहा था तो उस वक़्त उनसे कुछ लोगों ने कहा होगा कि बेवकूफों! कहाँ जा रहे हो? इस वक़्त तो लश्कर सामने है। अगर एक हज़ार में से तीन सौ आदमी निकाल जायेंगे तो बाक़ी लोगों के दिलों में भी कुछ ना कुछ कमज़ोरी पैदा होगी। अगर तुम मैदाने जंग में दुश्मन का मुक़ाबला नहीं कर सकते तो कम से कम मदीने के दिफ़ा के लिये तो कमरबस्ता (तैयार) हो जाओ। अगर मदीने पर हमला हुआ तो क्या होगा? अगर यहाँ पर यह लश्कर शिकस्त खा गया तो क्या दुश्मन तुम्हारी बहू-बेटियों को अपनी बांदियाँ (गुलाम) बना कर नहीं ले जायेंगे?

"उन्होंने कहा कि अगर हम समझते कि जंग होनी है तो हम ज़रूर तुम्हारा साथ देते।"

قَالُوۡا لَوۡ نَعۡلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعۡنٰكُمۡ ؕ

यानि यह तो दरहक़ीक़त नूराकुश्ती हो रही है, यह हक़ीक़त में जंग है ही नहीं। यह जो मक्के से मुहम्मद (ﷺ) के साथी मुहाजिरीन आये हैं और अब यह जो मक्का ही से लश्कर हम पर चढ़ाई करके आया है यह सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं और हमारा इनसे कोई सरोकार नहीं।

"यह लोग उस दिन ईमान की निस्बत कुफ़्र से क़रीबतर थे।"

هُمۡ لِلۡكُفۡرِ يَوۡمَئِذٍ اَقۡرَبُ مِنۡهُمۡ لِلۡاِيۡمَانِ ۚ

"यह अपने मुँहों से वह बात कह रहे हैं जो इनके दिलों में नहीं है।"

يَقُوۡلُوۡنَ بِاَفۡوَاهِهِمۡ مَّا لَيۡسَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ

"और अल्लाह उस चीज़ को ख़ूब जानता है जो कुछ वह छुपा रहे हैं।"

وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يَكۡتُمُوۡنَ ۚ﴿۱۶۸﴾

आयत 168

الَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا

"यह वह लोग हैं जो खुद तो बैठे रहे और अपने (शहीद हो जाने वाले) भाइयों की निस्बत कहा कि अगर वह भी हमारे साथ आ गये होते तो क़त्ल ना होते।"

قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

"तो (ऐ नबी ﷺ) इनसे कहिये अच्छा अगर तुम (अपने इस क़ौल में) सच्चे हो तो अपनी जानों से मौत को हटा कर दिखा दो।"

क्या तुम अपने आप से मौत को टाल लोगे? खुद मौत से बचे रहोगे? क्या मौत तुम्हें अपने घरों में नहीं आयेगी?

आयत 169

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا

"और हरगिज़ ना समझना उन लोगों को जो अल्लाह की राह में क़त्ल हो जायें कि वह मुर्दा हैं।"

यही मज़मून क़ब्ल अज़ सूरतुल बक़रह में आ चुका है:

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ

بَلْ اَحْيَاۗءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ

"बल्कि वह तो ज़िन्दा हैं, अपने रब के पास रिज़्क़ पा रहे हैं।"

आयत 170

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ

"शादाँ व फ़रहाँ हैं उस पर जो कुछ अल्लाह तआला ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता किया है"

وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ

"और बशारत हासिल कर रहे हैं उन लोगों के बारे में जो उनके पीछे (दुनिया में) रह गये हैं और अभी उनसे नहीं मिले"

اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

"कि ना उन पर कोई खौफ़ होगा और ना वह हुज़्न से दो-चार होंगे।"

आयत 171

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ

"वह खुशियाँ मना रहे हैं अल्लाह तआला की नेअमत की वजह से और उसके फ़ज़्ल की बिना पर"

وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ

"और इस बात पर कि अल्लाह तआला अहले ईमान के अज्र को ज़ाया नहीं करता।"

अब आगे जो आयात आ रही हैं उनके बारे में तारीख व सीरत की किताबों में दो क़िस्म की रिवायात आती हैं। एक तो यह कि कुफ्फ़ार की फ़ौज के वापस चले जाने के बाद रसूल अल्लाह ﷺ ने बाज़ ज़रूरी अमूर निबटाये और शुहदा की तद्फ़ीन (दफ़न) की। उसके बाद आप ﷺ को अचानक ख्याल आया कि यह कुफ्फ़ार चले तो गये हैं, लेकिन हो सकता है उन्हें अपनी गलती का अहसास हो कि इस वक़्त तो मुस्लमान इस हालत में थे कि हम उन्हें ख़त्म कर सकते थे, लिहाज़ा वह कहीं दोबारा पलट कर हमलावर ना हो जायें। चुनाँचे रसूल अल्लाह ﷺ ने मुसलमानों को क़ुरैश के तअक़्क़ुब के लिये तैयार हो जाने का हुक्म दिया, ताकि उन्हें मालूम हो जाये कि हमने हिम्मत नहीं हार दी। इसके बावजूद कि अहले ईमान के जिस्म ज़ख्मों से चूर-चूर थे, इतना बड़ा सदमा पहुँचा था, वह फिर तैयार हो गये और हुज़ूर ﷺ जाँनिसारों की एक जमाअत के साथ कुफ्फ़ार के तअक़्क़ुब में हमरा अल असद तक गये जो मदीना से 8 मील के फ़ासले पर

है। इधर अबु सुफ़ियान को वाक़िअतन अपनी गलती का अहसास हो चुका था और वह मक़ामे रव्हा पर रुक कर अपनी फ़ौज की अज़सर नौ तंज़ीम करके वापस पलट कर मदीना पर हमलावर होने का इरादा कर रहा था। उधर से आने वाले एक ताजिर से उसने कहा भी था कि जाकर मुसलमानों को बता दो कि मैं बहुत बड़ा लश्कर लेकर दोबारा आ रहा हूँ। लेकिन जब अबु सुफ़ियान ने देखा कि मुसलमानों के अज़म व हौसले में कोई कमी नहीं आयी है और वह उनके तअक़्क़ुब में आ रहे हैं तो इरादा बदल लिया और लश्कर को मक्का की तरफ़ कूच का हुक्म दे दिया।

इसी तरह का एक और वाक़िया बयान होता है कि अबु सुफ़ियान जाते हुए यह कह गया था कि अब अगले साल बद्र में दोबारा मुलाक़ात होगी। यानि एक साल पहले बद्र में जंग हुई थी, अब ओहद में हमारा मुक़ाबला हो गया। अब अगले साल फिर हमारे और तुम्हारे दरमियान तीसरा मुक़ाबला बद्र में होगा। चुनाँचे अगले साल रसूल अल्लाह ﷺ सहाबा किराम (रज़ि०) को लेकर बद्र तक गये। यह मुहिम "बद्रे सुगरा" कहलाती है। उधर से अबु सुफ़ियान पूरे लाव-लश्कर के साथ आ गया और इस मरतबा भी कुछ लोगों के ज़रिये से अहले ईमान में खौफ़ व हरास फ़ैलाने की कोशिश की कि लोगो क्या कर रहे हो, क़ुरैश तो बहुत बड़ा लश्कर लेकर आ रहे हैं, तुम उसका मुक़ाबला ना कर पाओगे! तो इसके जवाब में मुसलमानों ने सब्र व तवक्कुल का मुज़ाहिरा किया और वह कलिमात कहे जो आगे आ रहे हैं। तो यह आयात दोनों वाक़िआत पर मुन्तबिक़ हो सकती हैं।

आयत 172

"जिन लोगों ने लब्बैक कही अल्लाह और रसूल ﷺ की पुकार पर इसके बाद कि उनको चरका लग चुका था।"

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ

यह आयत साबक़ा आयात के तसल्सुल में आयी है। यानि इस अज़्ने अज़ीम के मुस्तहिक़ वह लोग ठहरेंगे जो कि ओहद की शिकस्त का ज़ख्म खाने के बाद भी उनके अज़म व ईमान का यह हाल है कि ज्यों ही अल्लाह और रसूल की जानिब से उन्हें एक ताज़ा मुहिम के लिये पुकारा गया वह फ़ौरन तैयार हो गये।

"उनमें से जो भी मोहसिनीन और मुत्तक़ीन हैं उनके लिये बहुत बड़ा अज्र है।"

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۚ﴿۱۷۲﴾

आयत 173

"यह वह लोग हैं जिनसे लोगों ने कहा कि तुम्हारे खिलाफ़ बड़ी फ़ौजें जमा हो गयी हैं, पस उनसे डरो!"

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ

"तो इस बात ने उनके ईमान में और ज़्यादा इज़ाफ़ा कर दिया"

فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا

"और उन्होंने कहा अल्लाह हमारे लिये काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज़ है।"

وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾

उसी का सहारा सबसे अच्छा सहारा है। चुनाँचे यह लोग बेख़ौफ़ होकर मुक़ाबले के लिये निकले।

आयत 174

"पस वह लौट आये अल्लाह की नेअमत और उसके फ़ज़ल के साथ"

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ

अबु सुफ़ियान को जब पता चला कि मुहम्मद ﷺ हमारे तअक़्क़ुब में आ रहे हैं तो उसने आफ़ियत इसी में समझी कि सीधा मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रुख कर लिया जाये। "बद्रे सुगरा" की मुहिम में भी यही हुआ कि जब उसने सुना कि मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ तो अपने पूरे साथियों के साथ मुक़ाबले पर आ गये हैं तो वह कन्नी कतरा कर और तरह देकर निकल गया और मुक़ाबले में नहीं आया।

"उनको किसी क़िस्म का भी ज़र्र नहीं पहुँचा" لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ

उन्हें इस मुहिम में कोई तकलीफ़ नहीं पहुँची। यह अल्लाह की तरफ़ से एक आज़माइश थी जिसमें वह पूरे उतरे।

"और उन्होंने तो अल्लाह की रज़ा की पैरवी की।" وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ

उन्हें अल्लाह की रज़ा व खुशनुदी पर चलने का शर्फ़ हासिल हो गया।

"और यक़ीनन अल्लाह तआला बड़े फ़ज़ल का मालिक है। وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ

आयत 175

"(ऐ मुसलमानों!) यह शैतान है जो तुम्हें डराता है अपने साथियों से" اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ

वह तो चाहता है कि अपने साथी कुफ्फ़ार यानि हिज़्बुश्शैतान का खौफ़ तुम पर तारी कर दे। इसके एक मायने यह भी लिये गये हैं कि शैतान अपने दोस्तों को डराता है। यानि शैतान की इस तख्वीफ़ का असर उन्हीं पर होता है जो उसके वली होते हैं, लेकिन जो औलिया अल्लाह हैं उन पर शैतान की तरफ़ से इस क़िस्म की वस्वसा अंदाज़ी का असर नहीं होता।

"तो तुम उनसे ना डरो, मुझसे डरो" فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ

"अगर तुम मोमिने सादिक़ हो।" اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

आयत 176

"और (ऐ नबी ﷺ) यह लोग आपके लिये बाइसे गम ना बनें जो कुफ़्र के मामले में इस क़दर भाग-दौड़ कर रहे हैं।" وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ

मदीना के यहूद और मक्का के मुशरिकीन मुसलमानों के खिलाफ़ साज़-बाज़ में मसरूफ़ रहते। कभी यहूदियों का कोई वफ़द सरदाराने मक्का के पास जाकर कहता कि तुम मुसलमानों पर चढ़ाई करो, हम अन्दर से तुम्हारी मदद करेंगे। कभी क़ुरैश यहूदियों से राब्ता करते। गोया आज-कल की इस्तलाह में बड़ी Diplomatic Activity हो रही थी। इन हालात में रसूल अल्लाह ﷺ और आप ﷺ की वसातत से अहले ईमान को इत्मिनान दिलाया जा रहा है कि इनकी सरगर्मियों से रंजीदा ना हों, इनकी सारी रेशादवानियों की हैसियत सैलाब के ऊपर आ जाने वाले झाग के सिवा कुछ नहीं है।

"वह अल्लाह को हरगिज़ कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे।" اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا

"अल्लाह चाहता है कि इनके लिये आख़िरत में कोई हिस्सा ना रखे।" يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْاٰخِرَةِ

यह गोया अल्लाह के इस फ़ैसले का ज़हूर है कि इनका आख़िरत में कोई हिस्सा ना हो।

"और उनके लिये तो बड़ा अज़ाब है।" وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ

आयत 177

"यक़ीनन जिन लोगों ने ईमान हाथ से देकर कुफ़्र खरीद लिया वह अल्लाह को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते।" اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا

"और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।" وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

आयत 178

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ

"और मत समझें यह काफ़िर कि हम जो इन्हें मोहलत दे रहे हैं तो यह इनके हक़ में बेहतर है।"

काफ़िरों को मोहलत इसलिये मिलती है कि वह अपने कुफ़्र में और बढ़ जायें ताकि अपने आपको बुरे से बुरे अज़ाब का मुस्तहिक़ बना लें। अल्लाह उनको ढील ज़रूर देता है, लेकिन यह ना समझो कि यह ढील उनके हक़ में अच्छी है।

اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ

"हम तो इनको सिर्फ़ इसलिये ढील देते हैं ताकि वह गुनाह में और इज़ाफ़ा कर लें।"

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾

"और उनके लिये अहानत आमेज़ अज़ाब होगा।"

आयत 179

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ

"अल्लाह वह नहीं कि छोड़े रखे मुसलमानों को इस हालत में जिस पर तुम हो"

حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ

"यहाँ तक कि वह ख़बीस को तय्यब से मुमय्यज़ (distinguish) कर दे।"

यह आयत भी फ़लसफ़ा-ए-आज़माइश के ज़िमन में बहुत अहम है कि अल्लाह तआला अपने नेक और सालेह बन्दों को तकलीफ़ में क्यों डालता है, हालाँकि वह तो क़ादिरे मुतलक़ है, आने वाहिद में जो चाहे कर सकता है। फ़रमाया जा रहा है कि यह बात अल्लाह की हिकमत के मुताबिक़ नहीं है कि वह तुम्हें उसी हाल में छोड़े रखे जिस पर तुम हो। अभी तुम्हारे अन्दर कमज़ोर और पुख्ता ईमान वाले गडमड हैं, बल्कि अभी तो मुनाफ़िक़ और मोमिन भी गडमड हैं। तो जब तक इन अनासिर को अलग-अलग ना कर दिया जाये और तुम्हारी इज्तमाइयत से यह तमाम नापाक अनासिर निकाल ना दिये जायें उस वक़्त तक तुम आइन्दा पेश आने वाले मुश्किल और कठिन हालात के लिये तैयार नहीं हो सकते। आगे तुम्हें सल्तनत रोमा से टकराना है, तुम्हें सल्तनत किसरा से टक्कर लेने है। अभी तो यह अन्दरून मुल्क अरब तुम्हारी जंगें हो रही हैं। इन आज़माइशों का मक़सद यह है कि तुम्हारी इज्तमाइयत की ततहीर (purge) होती रहे, यहाँ तक कि मुनाफ़िक़ीन और सादिक़ुल ईमान लोग बिल्कुल निखर कर अलैहदा हो जायें।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ

"और अल्लाह तआला का यह भी तरीक़ा नहीं है कि तुम्हें गैब की ख़बरें बताये"

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪

"लेकिन (इस काम के लिये) अल्लाह मुन्तखब कर लेता है अपने रसूलों में से जिसको चाहता है।"

वह अपने रसूलों में से जिसको चाहता है गैब के हालात भी बताता है। रसूलों को गैब अज़-खुद मालूम नहीं होता, अल्लाह के बताने से मालूम होता है। यानि इन आज़माइशों में क्या हिकमतें हैं और इनमें तुम्हारे लिये क्या खैर पिन्हा है, हर चीज़ हर एक को नहीं बतायी जायेगी, अलबत्ता यह चीज़ें हम अपने रसूलों को बता देते हैं।

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ

"पस ईमान पुख्ता रखो अल्लाह पर और उसके रसूलों (अलै०) पर।"

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۹﴾

"और अगर तुम (यह दो शर्तें पूरी कर दोगे) ईमान में साबित क़दम रहोगे और तक़वा पर कारबंद रहोगे तो तुम्हारे लिये बहुत बड़ा अज्र है।"

आयत 180

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ

"और ना ख्याल करें वो लोग जो बुख्ल कर रहे हैं उस माल में जो अल्लाह ने उन्हें दिया है अपने फ़ज़ल में से कि यह बुख्ल उनके हक़ में बेहतर है।"

ज़ाहिर बात है कि जब जंग-ए-ओहद के लिये तैयारी हो रही होगी तो हुज़ूर ﷺ ने मुसलमानों को इन्फ़ाक़े माल की दावत दी होगी ताकि असबाबे जंग फ़राहम किये जायें। लेकिन जिन लोगों ने दौलतमन्द होने के बावजूद बुख्ल किया उनकी तरफ़ इशारा हो रहा है कि उन्होंने बुख्ल करके जो अपना माल बचा लिया वह यह ना समझें कि उन्होंने कोई अच्छा काम किया है। यह माल अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से अता किया था, इसमें बुख्ल से काम लेकर उन्होंने अच्छा नहीं किया।

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ

"बल्कि यह उनके हक़ में बहुत बुरा है।"

سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

"उसी माल के तौक़ बना कर उनकी गर्दनों में पहनाये जाएँगे जिसमें उन्होंने बुख्ल किया था, क़यामत के दिन।"

وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

"और आसमानों और ज़मीन की विरासत बिलआख़िर अल्लाह ही के लिये है।"

दुनिया का माल-ओ-असबाब आज तुम्हारे पास है तो कल किसी और के पास चला जायेगा और बिलआख़िर सब कुछ अल्लाह के लिये रह जायेगा। आसमानों और ज़मीन की मीरास का हक़ीक़ी वारिस अल्लाह तआला ही है।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۧ

"और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बाख़बर है।"

यहाँ वह छ: रुकूअ मुकम्मल हो गये हैं जो गज़वा-ए-ओहद के हालात व वाक़िआत और उन पर तबसिरे पर मुश्तमिल थे। इस सूरह मुबारका के आख़िरी दो रुकूअ की नौइयत "हासिले कलाम" की है। यह गोया concluding रुकूअ हैं।

आयात 181 से 189 तक

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۱۸۱﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۸۲﴾ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۳﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۫ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۧ ﴿۱۸۹﴾

आयत 181

"अल्लाह ने सुन लिया है क़ौल उन लोगों का जिन्होंने कहा कि अल्लाह फ़क़ीर है और हम ग़नी हैं।"

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ

यह बात कहने वालों में मुनाफ़िक़ीन भी शामिल हो सकते हैं और यहूदी भी। जब रसूल अल्लाह ﷺ मुसलमानों को इन्फ़ाक़े माल की तरग़ीब देते थे कि अल्लाह को क़र्ज़े हस्ना दो तो यहूदियों और उनके ज़ेरे असर मुनाफ़िक़ों ने इसका मज़ाक उड़ाते हुए कहना शुरू कर दिया कि हाँ अल्लाह फ़क़ीर हो गया है और हमसे क़र्ज़ माँग रहा है, जबकि हम ग़नी हैं, हमारे पास दौलत है।

"हम लिख रखेंगे जो कुछ उन्होंने कहा है"

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا

इन अल्फ़ाज़ में अल्लाह तआला की शदीद नाराज़गी झलकती है। अल्लाह तआला फ़ौरन तो गिरफ्त नहीं करता लेकिन एक वक़्त आयेगा जिस दिन उन्हें अपने इस क़ौल की पूरी सज़ा मिल जायेगी। और सिर्फ़ यही नहीं:

"और इनके नाहक़ क़त्ल अम्बिया को भी (लिख रखेंगे)"

وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ

इससे पहले यह जो नबियों को नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं इनका यह जुर्म भी इनके नामा-ए-आमाल में सब्त है।

"और हम कहेंगे अब चखो मज़ा इस जला देने वाली आग़ के अज़ाब का।"

وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾

आयत 182

"यह सब कुछ तुम्हारे अपने ही हाथों ने आगे भेजा है"

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ

"और अल्लाह तो अपने बन्दों के हक़ में हरगिज़ ज़ालिम नहीं है।"

وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾

आयत 183

"जो लोग यह कहते हैं कि अल्लाह ने हमसे एक अहद ले लिया था"

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ

"कि हम किसी रसूल पर ईमान ना लायें जब तक वह ऐसी क़ुर्बानी पेश ना करे जिसे आग़ खा जाये।"

اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ

यहाँ रुए सुखन फिर यहूद की तरफ़ हो गया है। नौए इन्सानी जब अहदे तफ़ूलियत (बचपन के दौर) में थी तो खर्क़े आदत चीज़ें बहुत हुआ करती थीं। उनमें से एक बात यह भी थी कि अगर कोई शख्स अल्लाह की जनाब में कोई जानवर ज़िबह करके पेश करता तो आसमान से एक आग़ उतरती जो उसे भस्म कर देती थी और यह इस बात की अलामत होती थी कि यह क़ुर्बानी क़ुबूल हो गयी। जैसे हाबील और क़ाबील के क़िस्से (अल मायदा:27) में आया है कि: { اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ } "जब दोनों ने क़ुर्बानी पेश की तो एक की क़ुर्बानी क़ुबूल हो गयी और दूसरे की क़ुबूल नहीं हुई।" यह पाता कैसे चला? ईद-उल-अज़हा के मौक़े पर हम जो क़ुर्बानियाँ करते हैं उनके बारे में हम नहीं जानते कि किसकी क़ुर्बानी क़ुबूल हुई और किसकी क़ुबूल नहीं हुई। यह तो अल्लाह ही जानता है। लेकिन पहले ऐसी हिस्सी अलामात होती थीं कि पता चल जाता था कि यह क़ुर्बानी अल्लाह ने क़ुबूल कर ली है। बनी इस्राईल के इब्तदाई दौर में भी यह निशानी मौजूद थी कि आसमान से उतरने वाली आग़ का क़ुर्बानी को भस्म कर देना उसकी क़ुबूलियत की अलामत थी। मदीने के यहूद ने कटहुज्जती का मुज़ाहिरा करते हुए कहा कि हमसे तो अल्लाह ने यह अहद ले लिया था कि हम किसी रसूल पर ईमान नहीं लायेंगे जब तक कि वह

यह मौज्जज़ा ना दिखाये। तो अगर मौहम्मद (ﷺ) वाक़ई रसूल ﷺ हैं तो यह मौज्जज़ा दिखायें। उसका जवाब दिया जा रहा है:

قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ

"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कहिये तुम्हारे पास मुझसे पहले बहुत से रसूल आ चुके हैं वाज़ेह मौज्जज़ों के साथ"

وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ

"और वह चीज़ भी लेकर आये जिसके लिये तुम कह रहे हो"

उन्होंने सौ ख़तनी क़ुर्बानी का मौज्जज़ा भी दिखाया जिसका तुम मुतालबा कर रहे हो।

فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۱۸۳

"फिर तुमने उन्हें क्यों क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो?"

आयत 184

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ

"फिर (ऐ नबी ﷺ) अगर वह आप ﷺ को झुठला दें"

तो यह कोई तअज्जुब की बात नहीं। यह मामला सिर्फ़ आप ﷺ ही के साथ नहीं हुआ।

فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ

"तो आप ﷺ से पहले भी बहुत से रसूलों को झुठलाया जा चुका है"

यह तो इस रास्ते का एक आम तजुर्बा है, जिससे आप ﷺ को भी गुज़रना पड़ेगा।

جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝۱۸۴

"जो आये थे वाज़ेह निशानियाँ और सहीफ़े और रोशन किताब लेकर।"

आयत 185

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ

"हर ज़ी नफ्स को मौत का मज़ा चखना है।"

मौत तो एक दिन आकर रहनी है।

وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

"और तुमको तुम्हारे आमाल का पूरा-पूरा बदला तो क़यामत ही के दिन दिया जायेगा।"

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ

"तो जो कोई बचा लिया गया जहन्नम से और दाख़िल कर दिया गया जन्नत में तो वह कामयाब हो गया।"

اللهم ربنا اجعلنا منهم- ऐ अल्लाह! हमें भी उन लोगों में शामिल फरमाना!

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝۱۸۵

"और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो इसके सिवा कुछ नहीं की सिर्फ़ धोखे का सामान है।"

आयत 186

لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ

"(मुसलमानों! याद रखो) तुम्हें लाज़िमन आज़माया जायेगा तुम्हारे मालों में भी और तुम्हारी जानों में भी।"

यह वही मज़मून है जो सूरतुल बक़रह के उन्नीसवे रुकूअ में गुज़र चुका है: { وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۭ } (आयत:155) "और हम तुम्हें लाज़िमन आज़माएंगे किसी क़दर खौफ़ से भूख से और मालों, जानों और समरात (फलों) के नुक़सान से।" यहाँ मजहूल का सीगा है कि तुम्हें लाज़िमन आज़माया जायेगा, तुम्हारी आज़माइश की जायेगी तुम्हारे मालों में भी और तुम्हारी जानों में भी। कान खोल कर सुन लो कि यह ईमान का रास्ता फूलों की सेज नहीं है, यह काँटों भरा बिस्तर है। ऐसा नहीं होगा कि ठण्डे-ठण्डे और बगैर तकलीफ़ें उठाये तुम्हें जन्नत

मिल जायेगी। सूरतुल बक़रह (आयत:214) में हम पढ़ चुके हैं कि "क्या तुमने यह समझ रखा है कि यूँही जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालाँकि अभी तो तुम पर वह हालात व वाक़िआत वारिद नहीं हुए जो तुमसे पहलों पर हुए थे....."

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ

"और तुम्हें लाज़िमन सुननी पड़ेंगी उन लोगों से भी जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गयी थी और उनसे भी जिन्होंने शिर्क किया, बड़ी तकलीफ़देह बातें।"

यह सब कुछ सुनों और सब्र करो। जैसे रसूल अल्लाह ﷺ से इब्तदा में कहा गया था: {وَاصْبِرْ عَلٰي مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا} (अल मुज़म्मिल:10) "और उन बातों पर सब्र कीजिये जो यह लोग कहते हैं और वज़अदारी (गर्व) के साथ इनसे अलग हो जाइये।" आप ﷺ को क्या कुछ नहीं सुनना पड़ा। किसी ने कह दिया मजनून है, किसी ने कह दिया शायर है, किसी ने कहा साहिर है, किसी ने कहा मसहूर है। सूरतुल हिज्र के आख़िर में इरशाद है (आयत 97): {وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ} "(ऐ नबी ﷺ) हमें खूब मालूम है कि यह (मुशरिकीन) जो कुछ कह रहे हैं उससे आप ﷺ का सीना भिंचता है।" इनकी ज़बानों से जो कुछ आप ﷺ को सुनना पड़ रहा है उससे आप ﷺ को तकलीफ़ पहुँचती है, लेकिन सब्र कीजिये! वही बात मुसलमानों से कही जा रही है।

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝۱۸۶

"और अगर तुम सब्र करते रहोगे (साबित क़दम रहोगे) और तक़वा की रविश इख़्तियार किये रखोगे तो बेशक यह बड़े हिम्मत के कामों में से है।"

आयत 187

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

"और याद करो जबकि अल्लाह ने उन लोगों से एक क़ौल व क़रार लिया था जिनको किताब दी गयी थी"

لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ

"कि तुम लाज़िमन उसे लोगों के सामने वाज़ेह करोगे और उसे छुपाओगे नहीं"

فَنَبَذُوْهُ وَرَاۗءَ ظُهُوْرِهِمْ

"तो उन्होंने उस अहद को पसे-पुश्त फ़ेंक दिया"

وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ

"और उसकी बड़ी हक़ीर सी क़ीमत वसूल कर ली।"

فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ۝۱۸۷

"तो बहुत ही बुरी शय है जो वह (उसके बदले में) हासिल कर रहे हैं।"

आयत 188

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا

"आप उनके बारे में ख्याल ना करें जो अपने किये पर ख़ुश होते हैं"

अगर कुछ नेकी कर लेते हैं, किसी को कुछ दे देते हैं तो उस पर बहुत इतराते हैं, अकड़ते हैं कि हमने यह कुछ कर लिया है।

وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا

"और (इससे भी बढ़ कर) चाहते हैं कि उनकी तारीफ़ की जाये ऐसे कामों पर जो उन्होंने किये ही नहीं"

आज कल इसकी सबसे बड़ी मिसाल स्पासनामे हैं, जो तक़रीबात में मदऊ (invited) शख्सियात को पेश किये जाते हैं। इन स्पासनामों में उन हज़रात के ऐसे-ऐसे कारहाये नुमाया बयान किये जाते हैं जो उनकी पुश्तों में से भी किसी ने ना किये हों। इस तरह उनकी ख़ुशामद और चापलूसी की जाती है और वह उसे पसंद करते हैं।

عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿۱۹۶﴾ مَتَاعٌ
قَلِيْلٌ ۚ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۹۷﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ
لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا
ۣ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾

सूरह आले इमरान का आख़री रुकूअ क़ुरान मजीद के अज़ीम-तरीन मक़ामात में से है। इसकी पहली छ: आयात के बारे में रिवायत आती है कि जिस शब में यह नाज़िल हुईं तो पूरी रात हुज़ूर ﷺ पर रक़्त (संवेदना) तारी रही और आप ﷺ खड़े, बैठे, लेटे हुए रोते रहे। नमाज़े तहज्जुद के दौरान भी आप ﷺ पर रक़्त तारी रही। फिर आप ﷺ ने बहुत तवील सज्दा किया, उसमें भी गिरया तारी रहा और सज्दागाह आँसूओं से तर हो गयी। फिर आप ﷺ कुछ देर लेटे रहे लेकिन वह कैफ़ियत बरक़रार रही। यहाँ तक कि सुबह सादिक़ हो गयी। हजरत बिलाल रज़ि० जब फज्र की नमाज़ की इत्तलाअ देने के लिये हाज़िर हुए और आप ﷺ को इस कैफ़ियत में देखा तो वजह दरयाफ्त की। आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ बिलाल, मैं क्यों ना रोऊँ कि आज की शब मेरे रब ने मुझ पर यह आयात नाज़िल फ़रमायी हैं।" फिर आप ﷺ ने इन आयात की तिलावत फ़रमायी (इस रिवायत को इमाम राज़ी ने तफ़सीर कबीर में बयान किया है) यानि वह गिरया और रक़्त शुक्र के जज़्बे के तहत थी।

यह भी नोट कीजिये कि यह सूरह आले इमरान का बीसवाँ रुकूअ शुरू हो रहा है और सूरतुल बक़रह के बीसवें रुकूअ की पहली आयत के अल्फ़ाज़ यह थे:

فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ

"तो उनके बारे में यह ख्याल ना करें कि वह अज़ाब से बच जायेंगे।"

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾

"और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

आयत 189

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

"और अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाही।"

وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸۹﴾ۧ

"और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।"

आयात 190 से 200 तक

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ
﴿۱۹۰﴾ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰي جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾
رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا
سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۣ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا
وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۚ ﴿۱۹۳﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰي رُسُلِكَ وَلَا
تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَآ
اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا
وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ وَالۡفُلۡكِ الَّتِیۡ تَجۡرِیۡ فِی الۡبَحۡرِ بِمَا یَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡیَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِیۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصۡرِیۡفِ الرِّیٰحِ وَالسَّحَابِ الۡمُسَخَّرِ بَیۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۶۴﴾

इसी "अयातुल आयात" का ख़ुलासा यहाँ आ गया है:

आयत 190

"यक़ीनन आसमानों और ज़मीन की तख्लीक़ में और रात और दिन के उलट-फेर में"	اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ
"होशमन्द लोगों के लिये निशानियाँ हैं।"	لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ ﴿۱۹۰﴾

सूरतुल बक़रह की आयत 164 इन अल्फ़ाज़ पर ख़त्म हुई थी: {لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ} "उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं।" यहाँ उन लोगों को "ऊलूल अल्बाब" का नाम दिया गया। यह हिदायत का पहला क़दम है कि क़ायनात को देखो, मज़ाहिरे फ़ितरत का मुशाहिदा करो—

खोल आँख, ज़मीं देख, फ़लक देख, फ़ज़ा देख
मशरिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख!

यह सब आयाते इलाहिया हैं, इनको देखो और अल्लाह को पहचानो। अगला क़दम यह है कि जब अल्लाह को पहचान लिया तो अब उसे याद रखो। यानि—

फ़िक्रे क़ुरान इख्तलाते ज़िक्र-ओ-फ़िक्र
फ़िक्र रा कामिल ना दीदम जुज़-बा-ज़िक्र!

आयत 191

"जो अल्लाह का ज़िक्र करते रहते हैं, खड़े भी, बैठे भी और अपने पहलुओं पर भी"	الَّذِیۡنَ یَذۡكُرُوۡنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوۡدًا وَّعَلٰی جُنُوۡبِهِمۡ
"और मज़ीद गौर-ओ-फ़िक्र करते रहते हैं आसमानों और ज़मीन की तख्लीक़ में।"	وَیَتَفَكَّرُوۡنَ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ

इस गौर-ओ-फ़िक्र से वह एक दूसरे नतीजे पर पहुँचते हैं और वो पुकार उठते हैं:

"ऐ हमारे रब! तूने यह सब कुछ बे-मक़सद तो पैदा नहीं किया है।"	رَبَّنَا مَا خَلَقۡتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ

और फिर उनका ज़हन अपनी तरफ़ मुन्तक़िल होता है कि मेरी ज़िन्दगी का मक़सद क्या है? मैं किस लिये पैदा किया गया हूँ? क्या मेरी ज़िन्दगी बस यही है कि खाओ-पीओ, औलाद पैदा करो और दुनिया से रुख्सत हो जाओ? मालूम हुआ कि नहीं, कोई खला है। इंसानी आमाल के नतीजे निकलने चाहिये, इन्सान को उसकी नेकी और बदी का बदला मिलना चाहिये, जो इस दुनिया में अक्सर-ओ-बेशतर नहीं मिलता। दुनिया में अक्सर यही देखा गया है कि नेकोकार फ़ाक़ों से रहते हैं और बदकार ऐश करते हैं। चुनाँचे कोई और ज़िन्दगी होनी चाहिये, कोई और दुनिया होनी चाहिये जिसमें अच्छे-बुरे आमाल का भरपूर बदला मिल जाये, मकाफ़ाते अमल (काम का बदला) हो। लिहाज़ा वह कह उठते हैं:

"तू पाक है (इससे कि कोई अबस [बेकार] काम करे), पस तू हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा!"	سُبۡحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾

तूने यक़ीनन एक दूसरी दुनिया तैयार कर रखी है, जिसमें जज़ा व सज़ा के लिये जन्नत भी है और जहन्नम भी!

आयत 192

"ऐ हमारे रब! जिसको तूने दाख़िल कर दिया आग में बेशक उसको तूने रुसवा कर दिया।"	رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنۡ تُدۡخِلِ النَّارَ فَقَدۡ اَخۡزَیۡتَهٗ ؕ

وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾

"और ज़ालिमों के लिये कोई मददगार नहीं होंगे।"

आयत 193

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا

"ऐ हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले को सुना"

يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا

"जो ईमान की निदा दे रहा था कि ईमान लाओ अपने रब पर, तो हम ईमान ले आये।"

ईमान बिल्लाह और ईमान बिल आख़िरत के बाद ऐसे लोगों के कानों में ज्यों ही किसी नबी या रसूल की पुकार आती है तो फ़ौरन लब्बैक कहते हैं, ज़रा भी देर नहीं लगाते। जैसे हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़ौरी तौर पर रसूल अल्लाह ﷺ की दावत क़ुबूल कर ली, इसलिये कि ईमान बिल्लाह और ईमान बिल आख़िरत तक तो वह ख़ुद पहुँच चुके थे। सूरतुल फ़ातिहा के मज़ामीन को ज़हन में ताज़ा कर लीजिये कि ऊलूल अल्बाब में से एक शख़्स जो अपनी सलामती-ए-तबअ, सलामती-ए-फ़ितरत और सलामती-ए-अक़्ल की रहनुमाई में यहाँ तक पहुँच गया कि उसने अल्लाह को पहचान लिया, आख़िरत को पहचान लिया, यह भी तय कर लिया कि उसे अल्लाह की बन्दगी ही का रास्ता इख़्तियार करना है, लेकिन इसके बाद वह नबुवत व रिसालत की रहनुमाई का मोहताज है, लिहाज़ा अल्लाह तआला के हुज़ूर दस्ते सवाल दराज़ करता है: {اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝} यहाँ भी यही मज़मून है कि अब ऐसे शख़्स के सामने अगर किसी नबी की दावत आयेगी तो उसका रद्दे अमल क्या होगा। अब आगे एक अज़ीम-तरीन दुआ आ रही है। यह उस दुआ से जो सूरतुल बक़रह के आख़िर में आयी थी बाज़ पहलुओं से कहीं ज़्यादा अज़ीमतर है।

رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا

"ऐ हमारे रब, हमारे गुनाह बख़्श दे!"

وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا

"और हमारी बुराइयाँ हमसे दूर कर दे!"

हमारे नामा-ए-आमाल के धब्बे भी धो दे और हमारे दामने किरदार के जो दाग़ हैं वह भी साफ़ कर दे।

وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾

"और हमें वफ़ात दीजियो अपने नेकोकार (और वफादार) बन्दों के साथ।"

आयत 194

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ

"ऐ हमारे रब, हमें बख़्श वह सब-कुछ जिसका तूने वादा किया है हमसे अपने रसूलों के ज़रिये से"

وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

"और हमें रुसवा ना कीजियो क़यामत के दिन।"

اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾

"यक़ीनन तू अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा।"

हमें शक है तो इस बात में कि आया हम तेरे उन वादों के मिस्दाक़ साबित हो सकेंगे या नहीं। लिहाज़ा तू अपनी शाने गफ्फ़ारी से हमारी कोताहियों की पर्दापोशी करना और हमें वह सब-कुछ अता कर देना जो तूने अपने रसूलों के ज़रिये से वादा किया है।

आयत 195

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ

"तो उनके रब ने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमायी"

यह है दुआ की क़ुबूलियत की इन्तहा कि इस दुआ के फ़ौरन बाद अल्लाह तआला की तरफ़ से क़ुबूलियत का ऐलान हो रहा है।

"कि मैं तुम में से किसी अमल करने वाले के किसी अमल को ज़ाया करने वाला नहीं हूँ, ख्वाह वह मर्द हो या औरत।" — اَنِّیۡ لَاۤ اُضِیۡعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنۡکُمۡ مِّنۡ ذَکَرٍ اَوۡ اُنۡثٰی ۚ

"तुम सब एक-दूसरे ही में से हो।" — بَعۡضُکُمۡ مِّنۡۢ بَعۡضٍ ۚ

एक ही बात के नुत्फ़े से बेटा भी है और बेटी भी, और एक ही माँ के रहम में बेटा भी पला है और बेटी भी।

"सो जिन्होंने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाल दिये गये" — فَالَّذِیۡنَ هَاجَرُوۡا وَ اُخۡرِجُوۡا مِنۡ دِیَارِهِمۡ

"और जिन्हें मेरी राह में ईज़ायें पहुँचायी गयीं" — وَ اُوۡذُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِیۡ

"और जिन्होंने (मेरी राह में) जंग की और जानें भी दे दीं" — وَ قٰتَلُوۡا وَ قُتِلُوۡا

"मैं लाज़िमन उनसे उनकी बुराइयों को दूर कर दूँगा" — لَاُکَفِّرَنَّ عَنۡهُمۡ سَیِّاٰتِهِمۡ

उनके नामा-ए-आमाल में अगर कोई धब्बे होंगे तो उन्हें धो दूँगा।

"और लाज़िमन दाख़िल करूँगा उन्हें उन बाग़ात में जिनके नीचे नहरें बहती हैं।" — وَ لَاُدۡخِلَنَّهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ

"और यह बदला होगा अल्लाह के पास से।" — ثَوَابًا مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ؕ

यानि अल्लाह तआला के ख़ास खज़ाना-ए-फ़ज़ल से।

"और बेहतरीन बदला तो अल्लाह ही के पास है।" — وَ اللّٰهُ عِنۡدَهٗ حُسۡنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾

अब आख़री पाँच आयात जो आ रही हैं उनकी हैसियत इस सूरह मुबारका के तमाम मुबाहिस पर "खात्मा-ए-कलाम" की हैं। याद रहे कि इस सूरत में अहले किताब का उमूमी ज़िक्र भी हुआ है और यहूद व नसारा का अलग-अलग भी। फिर इसमें अहले ईमान का ज़िक्र भी है और मुशरिकीन का भी। अब फरमाया:

आयत 196

"(ऐ नबी ﷺ) आपको धोखे में ना डाले इन काफ़िरों की चलत-फिरत शहरों के अन्दर।" — لَا یَغُرَّنَّکَ تَقَلُّبُ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا فِی الۡبِلَادِ ؕ ﴿۱۹۶﴾

यह काफ़िर जो इधर से उधर और उधर से इधर भाग-दौड़ कर रहे हैं, और इस्लाम और मुस्लमानों को ख़त्म करने के लिये साज़िशें कर रहे हैं, जमीयतें फ़राहम कर रहे हैं, इससे आप ﷺ किसी धोखे में ना आयें, किसी मुगालते का शिकार ना हों, उनकी ताक़त के बारे में कहीं आप ﷺ मरऊब ना हो जायें।

आयत 197

"यह तो बस थोड़ा सा फ़ायदा उठाना है" — مَتَاعٌ قَلِیۡلٌ ۚ

यह तो महज़ चंद रोज़ा ज़िन्दगी के लिये हमने इन्हें कुछ साज़ो-सामान दे दिया है।

"फिर उनका ठिकाना जहन्नम ही है।" — ثُمَّ مَاۡوٰىهُمۡ جَهَنَّمُ ؕ

"और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।" — وَ بِئۡسَ الۡمِهَادُ ﴿۱۹۷﴾

आयत 198

"इसके बरअक्स जिन लोगों ने अपने रब का तक़वा इख़्तियार किया" — لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ

"उनके लिये बाग़ात हैं जिनके दामन में नदियाँ बहती होंगी, जिनमें वह हमेशा-हमेशा रहेंगे" — لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

"यह उनके लिये इब्तदाई मेहमान नवाज़ी होगी अल्लाह की तरफ़ से।" — نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ

"और मज़ीद जो अल्लाह के पास है वह कहीं बेहतर है नेकोकारों के लिये।" — وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ۝

जन्नत की असल नेअमतें तो बयान में आ ही नहीं सकतीं। उनके बारे में हज़रत अबु हुरैरा रज़ि० से मरवी यह मुत्तफ़िक़ अलै हदीस याद रखें कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

قَالَ اللهُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی : اَعْدَدْتُ لِعِبَادِیَ الصَّالِحِیْنَ مَا لَا عَیْنٌ رَأَتْ وَ لَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلٰی قَلْبِ بَشَرٍ

"अल्लाह तआला का इरशाद है: मैंने अपने सालेह बन्दों के लिये (जन्नत में) वह कुछ तैयार कर रखा है जो ना तो किसी आँख ने देखा और ना किसी कान ने सुना, और ना ही किसी इन्सान के दिल में उसका ख्याल ही गुज़रा।"

क़ुरान व हदीस में जन्नत की जिन नेअमतों का तज़किरा है उनकी हैसियत अहले जन्नत के लिये نُزُل (इब्तदाई मेहमान नवाज़ी) की होगी।

आयत 199

"और बेशक अहले किताब में वह भी हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर" — وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ

"और उस पर भी ईमान रखते हैं जो तुम पर नाज़िल किया गया और उस पर भी जो उनकी तरफ नाज़िल किया गया" — وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ

"अल्लाह से डरते रहते हैं" — خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ

उनके दिलों में अल्लाह का खौफ़ है, वह आजिज़ी और तवाज़े इख़्तियार करते हैं।

"वह अल्लाह की आयात को हक़ीर सी क़ीमत पर फ़रोख्त नहीं करते।" — لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ

"ऐसे ही लोगों का अज्र उनके रब के पास महफ़ूज़ है।" — اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ

"यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है।" — اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

वह हिसाब लेने में देर नहीं लगाता। आखरी आयत फिर बहुत जामेअ है:

आयत 200

"ऐ अहले ईमान! सब्र करो और सब्र में अपने दुश्मनों से बढ़ जाओ" — يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا

मुसाबरत बाबे मुफ़ाअला से है और इसमें मुक़ाबला होता है। एक तो है सब्र करना, साबित क़दम रहना, और एक है मुसाबरत यानि सब्र व इस्तक़ामत में दुश्मन से बढ़ जाना। एक सब्र वह भी तो कर रहे हैं। तुम्हें आज चरका लगा है तो उन्हें एक साल पहले ऐसा ही चरका लगा था और 70 मारे गये थे। वह एक साल के अन्दर फिर चढ़ाई करके आ गये, तो तुम अपना दिल ग़मगीन करके क्यों बैठे हुए हो? तुम्हें तो उनसे बढ़ कर सब्र करना है, उनसे बढ़ कर क़ुर्बानियाँ देनी हैं, तभी तुम हक़ीक़त में अल्लाह के वफ़ादार साबित होंगे।

"और मरबूत रहो।" — وَرَابِطُوْا ۟

मुराब्ता पहरे को भी कहते हैं और नज़्म व ज़ब्त (discipline) की पाबन्दी करते हुए बाहम जुड़े रहने को भी। गज़वा-ए-ओहद में शिकस्त का सबब नज़्म का ढ़ीलापन और समो-ताअत में कमी थी। लिहाज़ा यहाँ सब्र व मुसाबरत के साथ-साथ नज़्म की पाबन्दी और बाहम मरबूत रहने की ताकीद फ़रमायी गयी है।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

"और अल्लाह का तक़वा इख़्तियार किये रखो ताकि तुम फ़लाह पाओ।"

यह आखरी और अहमतरीन चीज़ है। यह सब-कुछ करोगे तो फ़लाह मिलेगी। ऐसे ही घर बैठे तुम फौज़ व फ़लाह से हमकिनार नहीं हो सकोगे।

بارک اللّٰہ لی ولکم فی القرآن العظیم ونفعنی وایاکم بالآیات والذکر الحکیم